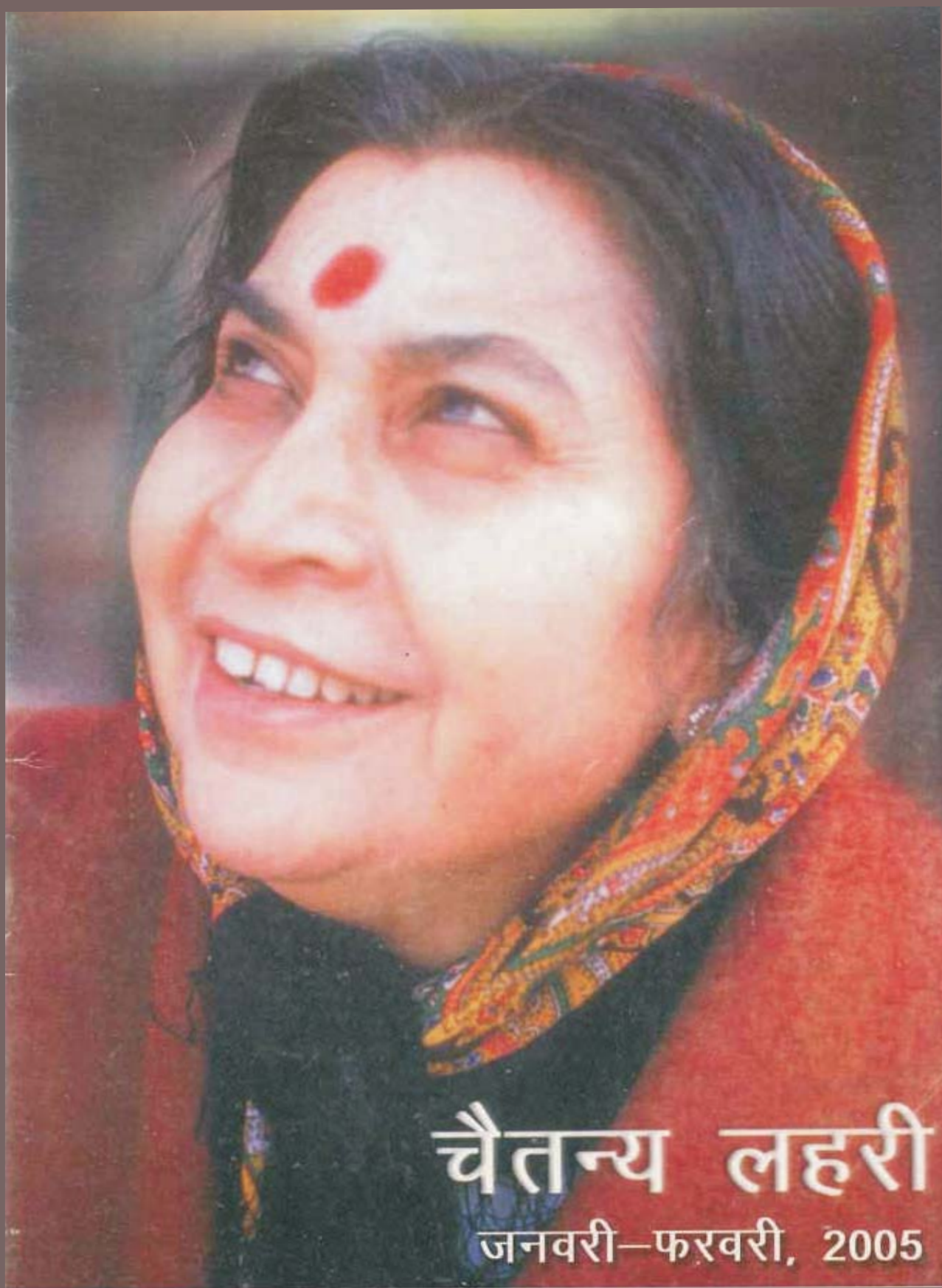

चैतन्य लहरी

जनवरी–फरवरी, 2005

" सहजयोग में जब तक आप लोगों को देंगे नहीं तब तक आपकी प्रगति नहीं होगी। देना पड़ेगा, जैसे–जैसे आप देते रहेंगे, वैसे–वैसे आप आगे बढ़ेंगे।"

(परम पूज्य श्री माता जी)

इस अंक में

3 विज्ञान के आगे का ज्ञान – 26.12.1975

11 तत्व की बात – (1) फरवरी –1981

28 तत्व की बात – (2) फरवरी –1981

45 तत्व की बात– (3) 16 फरवरी–1981

चैतन्य लहरी

प्रकाशक

निर्मल इन्पफोसिस एवं टेकनोलोजीज़ प्रा. लि.
मुख्य कार्यालय : इन्पफोसिस हाऊस, प्लाट न. 8,
चन्द्रगुप्त हाउसिंग सोसाइटी, पॉड रोड, कोठरुड
पुणे – 411 029

मुद्रक

अमरनाथ प्रेस प्रा. लि.
W.H.S 2/47 कीर्ति नगर, औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली–110015
मोबाइल : 9810452981, 25268673

सदस्यता के लिए कृपया निम्न पते पर लिखें:–
द्वारा, श्री जी.एल. अग्रवाल
निर्मल इन्पफोसिस एवं टेकनोलोजीज़ प्रा. लि.
222, देशबन्धु अपार्टमैंट, कालका जी
नई दिल्ली–110 019
फोन : **26216654, 26422054**

आप अपने अनुभव, सुझाव, सहज सम्बन्धी लेख आदि निम्नलिखित पते पर भेजें :

श्री ओ. पी. चान्दना
जी–11–(463), ऋषि नगर, रानी बाग
दिल्ली – 110 034
दूरभाष : 011–55356811
प्रातः 08.00 बजे से 09.30 बजे
सायं 08.30 बजे ये 10.30 बजे

परमात्मा के प्रेम के अनुभव

विज्ञान के आगे का ज्ञान

मुंबई (26.12.75)

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

सत्य के खोजने वाले आप सबको मेरा वन्दन है। कल आप बड़ी मात्रा में भारतीय विद्या भवन में उपस्थित हुए थे और उसी क्षण के उपरान्त जो कुछ भी कहना है, आज आपसे आगे की बात मैं करने वाली हूँ। विषय था " Experiences of Divine Love"परमात्मा के प्रेम के अनुभव। इस आज के Science के युग में पहले तो परमात्मा की बात करना ही कुछ हँसी सी लगती है और उसके बाद उसके प्रेम की बात तो और भी हँसी की लगती है विशेष कर हिन्दुस्तान में। जैसे मैने कहा था कि यहाँ के Scientist अभी उस हद तक नहीं पहुँचे हैं जहाँ जाकर वो परमात्मा की बात सोचें। ये दुख की बात है लेकिन और विदेशों में Scientist वहाँ तक पहुँच गए हैं जहाँ पर हार कर कहते हैं कि इससे आगे न जाने क्या है! और वो ये भी कहते हैं कि ये सारा जो कुछ हम जान रहे हैं ये Science के माध्यम में बैठ रहा है ये बात सही है लेकिन ये कुछ भी नहीं है। ये जहाँ से आ रहा है वो एक अजीब सी चीज़ है जिसे हम समझ ही नहीं पाते। जैसे कि Chemistry के बड़े – बड़े Scientist है वो कहते हैं कि ये Periodic Laws जो बनाए गए हैं ये समझ ही में नहीं आते कि ये किस तरह से बनाए गए हैं। एक विचित्र तरह की रचना करके, इतनी सुन्दरता से, एक–एक अणु रेणू को जिस तरह से रचा गया है, एक–एक अणु में एक ब्रह्माण्ड जिस तरह से समाया गया है, ये कुछ समझ में नहीं आता! वे कहते हैं कि इनकी रचना का कार्य तो हम कर ही नहीं सकते। रही बात ये कि ये रचना कैसे हुई ये भी हम नहीं बता सकते। ये पृथ्वी इतनी गति से घूम रही है, ये कैसे घूम रही है और इस पर ये गुरुत्वाकर्षण किस तरह से काम कर रहा है ? ये हम बता सकते हैं कि ये काम कर रही है लेकिन वो किस तरह से कर रही है इस मामले में Science कुछ भी नहीं जानता। आइंस्टीन जैसे बड़े बड़े Scientist ने बार–बार दोहरा कर कहा कि कोई तो भी ऐसा अज्ञात Unknown land है जहाँ से ये सारा ज्ञान हमारे पास आता है। और जो देश विज्ञान की परिसीमा में पहुँच गए हैं , वहाँ पर हर तरह की सुविधाएं हो गईं , खाने पीने को सबके पास व्यवस्थित हो गया, समृद्धि आ गईं। लोग कहते हैं ये affluence आ गया है Country में affluence है बहुत ज्यादा पैसा है। तो उनके बच्चे घर द्वार छोड़कर के घर से भागे हुए हैं, सब सन्यासी जैसे घूम रहे हैं। कुछ तो हिन्दुस्तान भाग रहे हैं, कुछ नेपाल जा रहे हैं। वो कह रहे हैं ये सब छोड़ दो। ये माँ बाप ने हमारे पता नहीं क्या पत्थर ईटें इक्ट्ठी कर ली, हम इनके पीछे बैठने वाले नहीं। लेकिन वो छोड़कर भी आज वो लोग हिप्पी हो गए हैं, चरस पी रहें हैं, गांजा पी रहें हैं ! लेकिन इन सब बातों से परमात्मा की सिद्धता नहीं होती। ये तो सब तर्क–वितर्क से, Intelligence से, इसको कहते हैं rationalize करने से कहीं आदमी जाकर पहुँचता है और कहता है कि इससे परे कोई शक्ति ज़रूर है। नहीं मैं यह बात नहीं कहने वाली आपसे। मैं आपको तो साक्षात् की बात कहने वाली हूँ,Actualization of the experience । वो अनेक वर्षों से , अपने योग शास्त्र आदि छोड़ दीजिए, विदेशो के भी बड़े–बड़े मनोवैज्ञानिक और Philosophers , उन लोगों ने जो बात कही है कि इस जड़–स्थिति से उस सूक्ष्म स्थिति में कैसे उतारा जाए ? मन भी तो जड़ है, विचार भी जड़ है। इस विचार के सहारे किस तरह

से उस निर्विचार, इस सीमित के सहारे किस तरह उस असीम मे उतारा जाए ? इस finite से किस तरह उस infinite में उतारा जाए ? ये जो आदिकाल से मानव के सामने बहुत बड़ा प्रश्न रहा उसका आज मैं आपके सामने उत्तर लाई हूँ। वो उत्तर सिर्फ शब्दों में नहीं है, कृति में है। ये आप को भी हो सकता है, क्योंकि उसके होने का समय आ गया है, उसका मौका आ गया है, कलियुग में ही ये होना है। जब तक पूरी तरह से कलियुग परिपक्व नहीं हुआ था, मानव पूरी तरह से उस संतुलन में नहीं पहुँच गया था जहाँ उसे पहुँचना है, जब तक परमात्मा की कृति मानव ,मनुष्य, पूरी तरह से तैयार नहीं हो गया था ये कार्य होने वाला भी नहीं था। जिस प्रकार आप देख रहें हैं कि ये माइक जब तक पूरी तरह से तैयार नहीं हुआ तब तक mains में लगाया नहीं गया। कलियुग में ही जो कि दिखने में अत्यन्त घोर और दर्दनाक है, अत्यन्त भीषण और भयंकर सा नज़र आ रहा है, इसी कलियुग की आग में तपकर ही आप वो होने वाले हैं जो आपको होना है। सिर्फ एक ही प्रश्न है, एक ही आपके सामने विनती है कि आप स्वीकार्य किसे करते हैं , आप किसका सत्कार करते हैं ? आप किसे चाहते हैं ? क्या आप सत्य चाहते हैं या असत्य चाहते हैं ? मनुष्य बेकल है। आपसे कहीं अधिक उन देशों में जहाँ लोगों के पास खाने पीने के बेतहाशा है, लोग पागल हो रहे हैं , आफत मच रही है। आपको पता नहीं है कि कितने दुखी वो लोग हैं जिनके पास खाने पीने के लिए आपसे कहीं अधिक है! कितनी आत्महत्याएं वहाँ हो रही हैं! आप लोगों को तो अब भी यह है कि पैसा कमाना है उनको तो वो कुछ करने का नहीं। तो अब वो आगे क्या करेंगे ? वो तो एकदम पागल हो गए हैं, उनकी समझ में नहीं आता है कि हम आए किसलिए हैं संसार में । जैसे कि कोई एक बन्द कमरे में अपने को पाते हैं और इधर–उधर टक्कर मार रहें हैं। आप लोग भी प्रगति के मार्ग पर जा रहें हैं, जिसे आप प्रगति कहते हैं , और आप भी उसी रास्ते से गुज़र रहें हैं जिस रास्ते से वो गुजरे रहे हैं। अन्तर इतना है कि जिन चीज़ों का उनको महत्व है उनका आपको उतना नहीं। लेकिन क्या आप भी उसी रास्ते से गुजरना चाहेंगे ? या गर कोई शार्टकट मिल जाए तो उस शार्टकट को अपना लेंगे? आपको पता होना चाहिए कि ये भारत भूमि एक योग भूमि है। अधिकतर अवतार इसी भूमि पर पैदा हुए हैं। एक बड़ी महान भूमि पर आप पैदा हुए हैं, यही आपका Choice , यही आपका चुनाव बहुत बढ़िया है। हालांकि खाने पीने की थोड़ी बहुत तकलीफ है, थोड़े बहुत इन्सान ज़रा जरूरत से ज्यादा धूर्त हैं, तो भी इस देश के चैतन्य के प्रांगण में आप आए हैं, यही एक बड़ा भारी चुनाव आपने किया है और आप नहीं जानते कि कितनी बड़ी आप पर परमात्मा की कृपा है! आज आपके बच्चे आपके साथ बैठे हैं , आपके माँ बाप आपके साथ खड़े हैं, इसीलिए सहजयोग भी जो पनपा है वो हिन्दुस्तान में , भारतवर्ष में ही पनपेगा पहले। और इसीलिए भारतवर्ष भी सारे संसार का अगुआ होगा।

अब परमात्मा का प्रेम है या नहीं , परमात्मा है या नहीं, यह तर्क वितर्क की बात है ही नहीं। एक तो इस देश में ऐसे महान लोग हो गए हैं जैसे आप आदिशंकराचार्य को ही ले लीजिए जिन्होंने पहले से ही चैतन्य लहरियाँ आदि कितनी ही बातों पर हम लोगों को समझा रखा है। हमारे पास ऐसे अनेक ग्रंथ हैं जिसके अन्दर परमात्मा के स्वरूप के बारे में ही अनेक चर्चाएं हैं, लेकिन उन पर विश्वास क्यों किया जाए ? आखिर उसे क्यों मान लिया

जाए क्योंकि आदिशंकराचार्य कह गए ? एक साहब बता रहे थे कल मुझे , कि ज्ञानेश्वर जैसे पण्डित आदमी को क्या बेवकूफी सूझी कि श्री गणेश की स्तुति करते हैं ! ज्ञानेश्वर जी को आप पण्डित मानते हैं यही बड़ा आश्चर्य है! उनके शब्दचातुर्य के लिए क्या आप उनको पण्डित मानते हैं ? इन ग्रन्थों में जो चीज़ें लिखी गई हैं वो उन लोगों ने लिखी हैं जो बहुत ऊँचे स्तर पर पैदा हुए. उनकी चेतना बड़ी ऊँची थी, उनके चक्षु कुछ और थे। समझ लीजिए कि कोई बड़े ऊँचे ,दसवें मंजिल पर पैदा हुए व्यक्ति और सर्व साधारण समाज, बिल्कुल ही निम्न स्तर पर पहले स्तर पर पैदा हुआ, दोनों के बीच में जोड़ने वाली कोई चीज ही नहीं थी सिवाए इसके कि नीचे का समाज उनको जब तक वे जीवित रहे उनको सताता रहा पूरी तरह से और जब मर गए तब उनके मन्दिर और ये और वो बनाकर के और उनके नाम पर पैसा कमाता रहा। ये सीधा हिसाब है। क्योंकि वे भी प्रयत्न शील रहे कि बात समझाएं, लेकिन कहीं तक पहुँच नहीं पाए। जब तक इस स्तर के लोगों को थोड़ा सा ऊँचा न उठाया जाए, जब तक इनकी सीमित चेतना ,जो कि मनुष्य की चेतना है, ऊँची न उठाई जाए, उनका भी कोई दोष नहीं है क्योंकि वो भी कैसे समझ पाएंगे कि इससे भी ऊपर स्थित कोई चीज़ है, कोई चेतना है। गर उनका विश्वास नहीं है, उसमें भी उनका कोई दोष देने की बात नहीं , गर उनका परमात्मा पर विश्वास नहीं , उसमे भी मनुष्य को दोष देने की कोई बात नहीं। क्योंकि मानव बनाया ही ऐसा गया है, मानव की रचना ही ऐसी हो गई है कि थोड़े समय के लिए वो परमात्मा के प्रेम से वंचित किया गया, हटाया गया, जो सर्वव्यापी प्रेम परमात्मा का है, जिसे वो जान सकता है, जिसमें वो रह सकता है उससे वो अलग हटाया गया, मानो कि सागर से बूँद को अलग कर दिया गया । एक विशेष तरीके से किया गया, इसके बारे में मैने अनेक बार बताया है कि किस तरह कुण्डलिनी मनुष्य के अन्दर प्रवेश करती है और किस तरह से उसके अन्दर Ego और Super Ego , अहंकार और प्रतिअहंकार सिर में इकट्ठे होकर के और उसके सिर में एक तरह का पिंजरा बना देते हैं जिसके कारण वो सर्वव्यापी परमात्मा के प्रकाश से अलग होकर के अपना व्यक्तित्व बनाता है। हम अलग हैं, आप अलग हैं, आप अलग हैं, आप अलग हैं। एक उसकी एक विशेष तरह की रचना मनुष्य के त्रिकोणाकार सर में है। उसके अन्दर तीन शक्तियों का प्रवेश है, इन तीन शक्तियों को हम शास्त्र के अनुसार महासरस्वती, महाकाली और महालक्ष्मी के नाम से जानते हैं। लेकिन इन शक्तियों मे से एक शक्ति सृजन करती है, जिसे महासरस्वती कहते हैं, महाकाली हमारी स्थिति बनाती है, जिसमे हम स्थित हैं और महालक्ष्मी की शक्ति से हम आज पत्थर से मानव हो गए हैं। हमारी उत्क्रान्ति हुई, हमारा Evolution हुआ। एक सोने में भी धर्म है, सोने का धर्म है, आप जानते हैं कि वो कभी भी खराब नहीं होता, उसका पीलापन उसका धर्म नहीं लेकिन धर्म उसका है कि वो कभी भी खराब नहीं होता। It does not get tarnished। इसी तरह से मानव का भी धर्म है। ये धर्म बदलने का काम महालक्ष्मी जी का है और श्री विष्णु का है जो अन्त में विराट के रूप में प्रगटित होते हैं। अब मानव में ,आपको आश्चर्य होगा, परमात्मा ने कितनी सुन्दर व्यवस्था की है। आप इससे अज्ञात हैं, कुछ डॉक्टर लोग तो जानते ही है लेकिन वो सिर्फ यही कहते हैं we can not explain the mode of action। मनुष्य के अन्दर परमात्मा ने बड़ी सुन्दर रचना उसके Brain से लेकर नीचे मज्जातन्तु तक

एक office सा खोल दिया है। अब आप कहेंगे कि श्री गणेश कौन होते हैं ? श्री गणेश हैं या नहीं हम कैसे मानें ? ठीक बात है, आपने श्री गणेश को देखा नहीं, आपने उनको जाना नहीं, आपको नहीं मानना चाहिए। लेकिन कुछ ऐसी अजीब सी चीज है कि जब तक आप अन्दर आते नहीं आप उसको देख सकते नहीं, जब तक आप बाहर खड़े हैं उसको मानते नहीं। जैसे कि समझ लीजिए आप बाहर खड़े हैं और आपने हमें देखा नहीं और आप कहें कि माताजी को कैसे मानें कि वे हैं। तो हम कहेंगे कि आप अन्दर आइए तब आप देखिएगा। आप कहेंगे कि नहीं आप हमें बाहर ही लाकर दिखाइए। जब उनकी सत्ता अन्दर ही है तो आपको ही तो अन्दर आना होगा न। जब तक आप अन्दर जाकर के देखिएगा नहीं तब तक आपको ये चीज़ दिखाई नहीं देगी। तो सबसे पहले, सारी सृष्टि बनाने से पहले, आदि कुण्डलिनी बनाने से पहले, सारा संसार बनाने से पहले, श्री गणेश जी की स्थापना की गई। आज मंगलवार का कितना शुभ दिन है! ये स्वयं साक्षात् पवित्रता के पूर्ण अवतार हैं। वे अपने अन्दर स्थित हैं, उनको देखने के लिए आपके पास चक्षु नहीं हैं। वो अपने अन्दर मूलाधार नाम के centre पर जहाँ कि Prostat Gland surround करती है जिसे हम Pelvic Plexus के नाम से जानते हैं उसके अन्दर हरेक इन्सान में प्रतिबिम्बित है। जागृत नहीं है, चाहे सुप्त ही हों लेकिन वो वहाँ पर हैं। ये देवता ऐसे हैं कभी भी पूर्णतया सुप्त होते ही नहीं। जब तक मानव राक्षस न हो जाए , बिल्कुल ही राक्षस हो जाए तब तो वहाँ से लुप्त ही हो जाते हैं, नहीं तो हरेक मानव के अन्दर श्री गणेश विराजते हैं। ये पहला हमारे अन्दर का Centre है जिसे कि मूलाधार चक्र कहा जाता है। मूलाधार । आप तो सब संस्कृत के पण्डित हैं, मूल माने Root और आधार माने Support । Support of the root । Root of this creation , उसके support पर बैठे हैं श्री गणेश । उनको इसलिए सबसे पहले बनाया गया क्योंकि सारा संसार पवित्रता से लिपट जाए। पवित्रता में और innocence में और भोलेपन में डूबा रहे। बहुत से लोग ये भी कहते हैं कि माताजी इतना भोला होना ठीक नहीं, आपको कोई Practical Sense नहीं है। आपमें Practical Sense होना चाहिए। भगवान से बढ़कर कोई और अधिक Practical है ही नहीं । आपमें जितनी भी अक्ल आई है उसका स्रोत वही हैं।अन्तर इतना ही है कि वो सुबुद्धि का , wisdom का स्रोत हैं, मूर्खता का नहीं । जिसको आप बहुत Practical बात कहते हैं वो महा–मूर्खता की बात है। अन्त में आप महामूर्ख साबित हो जाते हैं, लेकिन वो उस वक्त आप महामूर्ख साबित होते हैं जबकि आप वापिस नहीं आ सकते। आप अपने को बहुत अक्लमन्द समझ कर के संसार में चलते हैं।एक गणेश जी की सूँड हिल जाते ही सारी आपकी चारसौबीसी ऐसी उल्टी घूमती है कि सीधे आप नर्क में जाकर पहुँचते हैं। भगवान से चालाकी नहीं, चलती। एक बार, अनेक बार, आप मुझसे झूठ बोलें, मैं तो माँ हूँ, माफ कर ही देती हूँ,लेकिन श्री गणेश वो बहुत होशियार आदमी हैं। हैं तो बिल्कुल बच्चों जैसे Eternal Childhood, Eternal Childhood के वो प्रतीक हैं। इसका मतलब ये है कि जिस वक्त आप अपने उत्थान की बात सोचें, परमात्मा की बात सोचें तब एक छोटे बच्चे जैसे हो जाएं। विशेषकर Sex के मामले में। गणेश जी का प्रतीक Pelvic Plexus में आने का मतलब ही ये होता है कि Sex का और परमात्मा का कोई भी सम्बन्ध होता ही नहीं। जो लोग आपको इस तरह की गलत उल्टी सीधी बातें

सिखा रहें हैं उनके चक्कर में आने की बिल्कुल जरूरत नहीं। ये सब राक्षसों के अवतार हैं। सोलह राक्षसों ने संसार में जन्म लिया है और अपने को महागुरु बन करके घूम रहे हैं। सब पैसे कमाने के धन्धे हैं। उनके अपने अपने चक्कर हैं। इन चक्करों में खुद फँसेंगे लेकिन अपना आखिरी हाथ, आखिरी दांव लगाना चाहते हैं, कि कितने महामूर्ख उनकी बातों में फँसने वाले हैं। Sex का और परमात्मा का कहीं भी, कहीं भी सम्बन्ध नहीं हैं। ये जताने के लिए श्री गणेश वहाँ पर बैठे हुए हैं, अपनी माँ की रक्षा करने के लिए जो अपने घर में आपके हरेक इन्सान के त्रिकोणाकार अस्थि ,जो कि रीढ़ की हड्डी के नीचे में है, उस घर के सामने बैठे हुए हैं, वो घर आपकी माँ का है। उसका नाम कुण्डलिनी है जो गौरी स्वरूप हैं। जो इन्सान गणेश जी की वन्दना करता है वो इस बात को समझता है कि माँ का स्थान कितना ऊँचा है और Sex से बिल्कुल सम्बन्धित नहीं है। हिन्दुस्तान का आदमी इस बात को खूब समझता है और जो आदमी इस तरह की हरकत करता है उसे श्री गणेश इस तरह से ताड़ना देते हैं कि ऐसे लोगों की जब कुण्डलिनी उठती है तो सारे के सारे जल जाते हैं। कुण्डलिनी तो नहीं उठती उनकी, कुण्डलिनी क्या बेवकूफ है उठने के लिए, लेकिन गणेश जी की जो heat चलती है, जो गर्मी चलती है वो सारे के सारे उन्हें जला देती है। आदमी मेंढक जैसे कूदने लगता है, चिल्लाने लगता है, कपडे उतार देता है, चीखने लगता है। ये सब लक्षण अत्यन्त घृणित तरह के लोगों के होते हैं। ये लोग स्वंय भूत पिशाच हैं। संसार में आकर के पाप फैला रहे हैं। जो पाप है वो पाप ही है और जो धर्म है वो धर्म है। दोनों का Mixture नहीं हो सकता। धर्म को अधर्म बनाना, पुण्य को पाप बनाना, यही कार्य ये लोग कर रहे हैं और वो कार्य सफलीभूत इसलिए नहीं हो रहा है कि आप लोग भी इसमें अपंनी weaknessess को अच्छे से संभाल सकते हैं। भगवान के नाम पर Sex हो तो और क्या चाहिए ? बहुत अच्छी बात है। गांजा पी रहे हैं भगवान के नाम पर, क्या कहने! confusion , इस तरह का गोल–माल, यही कलियुग का नाम है। थोड़ी सी गलती जरूर हो गई थी,आदिकाल में, कुछ लोगों ने मूलाधार चक्र में श्री गणेश की सूंड को ही कुण्डलिनी समझा था, हो गई थी गलती उनसे । लेकिन उस गलती को कहाँ तक खींचा लोगों ने क्योंकि Pelvic Plexus का संबंध, Sex से है, उन्होंने का सम्बन्ध कुण्डलिनी से लगा दिया।उसी से तांत्रिक बन गए, मांत्रिक बन गए। ये सब राक्षस हैं,मानव के अवतार नहीं हैं, ये सारे के सारे राक्षस हैं, इनसे बचकर रहिए, अपने बच्चों को बचाइए। दादर में भी ऐसे लोग हैं, मैं जानती हूँ, मैने दादर में बहुत काम किया है। ये लोग पैसा लेते हैं दूसरों पर तंत्र विद्या करते हैं और मंत्र विद्या करते हैं। वास्तविकता जब तक मनुष्य अत्यन्त पवित्र न हो वो श्री गणेश के चरणों तक नहीं जा सकता। ये लोग गणेश को सामने रखते हैं और गणेश की पूजा करते हैं, आपको आश्चर्य होगा, और भूतों को बुलाते हैं। ये किस तरह से ? जब अनाधिकार चेष्टा होती है, जब अपवित्र मनुष्य इस तरह से छलना करता है और बार बार उसे याद करता है तो गणेश स्वयं ही वहाँ सुप्त हो जाते हैं। ये लोग बहुत Sensitive हैं सब देवता जितने हैं, वो सुप्त होत ही साथ वहाँ सब राक्षस गण आ जाते हैं और वो राक्षस–गण आकर के हूँ हूँ करते हैं। कुछ चमत्कार भी दिखाते हैं ऊपर से अंगूठी निकाल दी,कुछ पत्थर निकाल दिया, ये निकाल दिया, वो दिखा दिया, वहाँ गणेश सो गए। गणेश को सुला दिया, पहले उनको पूरी तरह अपनी

नास्तिकता से, अपनी गन्दी चीजों से, उनको पहले सुप्तावस्था में डाल दिया। पूर्णतया सुप्तावस्था में डालकर के और वहाँ पर राक्षसों को बुला लिया और अपना कार्य वो पूरी तरह से कर दिया। इस तरह के तांत्रिक, मांत्रिको को भी पता होना चाहिए कि आप पैसा कमा लेंगे इस देश में , लेकिन आप उसके पाप का नर्क का टिकट भी कटा रहें हैं और Permanently नर्क में जाकर के आप वहीं रहेंगे, वहाँ से लौटने वाले नहीं आप। इस पैसे से बचकर रहिए। इसको साक्षात आपको चाहिए, मैं आपसे बताती हूँ कि इतना मनुष्य अधम भी हो जाए तो भी परमात्मा कितने कृपालु हैं! मै पूना में गई थी वहाँ पर एक बहुत बड़े मांत्रिक थे और वो मेरे पास आए वहाँ मैं D.I.G साहब के यहाँ ठहरी थी,D.I.G साहब ने कहा इन मांत्रिक साहब ने हमारी बहुत मदद की है, बहुत से चोरों को पकड़वा दिया और हमारी बहुत मदद की है आप जरा इसकी थोड़ी मदद कीजिए, तो वो आकर के मेरे पैर पर बिलबिला कर रोने लगा कि माँ मुझे छुड़ाओ, ये मुझे खाए जा रहें हैं, तुम तो समझ रही हो मेरी बात। मैने कहा तुमनें इन भूतो की क्यों मदद ली ? क्यों इन राक्षसों की मदद लेकर के तुमने इतनी दुष्टता करी ? कहने लगे मैंनें कोई दुष्टता नहीं की, मैने अच्छे काम किए। मैने कहा अच्छा हो या बुरा काम हो तुमने अनाधिकार चेष्टा क्यों की ? कहने लगा अच्छा मुझे माफ कर दो। मैं एक बार तुमसे इतना माँगता हूँ कि मुझे परम दे दो। मैने कहा तीन बार कहो कि मुझे परम दे दो, तब मैने परमात्मा से प्रार्थना की ,फौरन वो पार हो गए। कितना अजीब है! उनके प्रेम की कोई व्याख्या नहीं। हालांकि जन्म भर उसने जड़ वस्तुओं की प्रार्थना की, अन्त में उसने सिर्फ मुझसे कहा, परमात्मा उसके घर आए वो पार हो गए। और जब बाहर गया तो D.I.G साहब से कहने लगा ऐसे कैसे हो सकता है कि मेरे सारे माताजी कह रहे हैं कि तुम्हारी सारी गई विद्या। मैने तो 25 साल तपस्या की, मशान में जाकर के। उन्होंने कहा, बोलो तुम्हारे मंत्र ,देखें तुम्हारे कोई आते हैं? वो मंत्र बोलता गया, आधा घण्टा, कुछ नही हुआ। आकर पैरों पर लोट गया , कहने लगा ' माँ वो सब खत्म हो गया! मैने कहा कि जिसके कारण वो शक्ति तुम्हारे अन्दर थी वे ही चले गए तो अब कहाँ से हो। अब वो जागृत हो गए हैं जो तुम्हारी शक्तियाँ हैं। जब उनके जागृत होते जैसे ही वो मनुष्य में जागृत हो जाते हैं तो ये सब दुष्ट वृत्तियाँ गिर जाती हैं ये सारे ही दुष्ट जो तुम्हारे सर में घुसे हुए थे, जो तुमसे काम ले रहे थे, ये सारे ही के सारे नष्ट हो जाते हैं। इन देवताओं को जागृत करते ही आप स्वयं देवता स्वरूप हो जाते हैं। इसीलिए कहते हैं कि नर जैसे करनी करे, नर का नारायण होए। करनी का मतलब ये है कि जिस तरह से मनुष्य पार हो जाता है जब उसके अन्दर के देवता जागृत हो जाते हैं श्री गणेश हमारे अन्दर हमेशा सन्तुलन लाते हैं। अब Psycnology मे मैं इसे बताऊं क्योंकि Science वाले हमेशा Psycnology पर जाते हैं। Science में जिसे I.V.E कहते हैं I. V.E वही श्री गणेश हैं। वे कहते हैं कि अचेतन ऐसा है, Unconscious ऐसा है कि उसके अन्दर से स्वप्न में ही कुछ इस तरह के प्रतीक Symbols आते है, उससे जान पड़ता है कि हमारे अन्दर कुछ सन्तुलन लाने की कोशिश की जा रही है। हमारे अन्दर कुछ Correction लाने की कोशिश की जा रही है। हमें कुछ समझाया जा रहा। इस तरह के बहुत से, प्रायड ने तक, हालांकि वो भी एक राक्षस ही था, लेकिन फ्रॉयड ने भी इधर इशारा किया लेकिन उनके अनेक शिष्यों ने, आज जहाँ Science पहुँची है, Psycnology

पहुँची है उन लोगों ने सबने इस बात का निदान लगाया है और कहा है कि Unconscious जो है, जो अचेतन है वो कोई बड़ी भारी सोच समझ वाली चीज़ हैं। वो हमे सही रास्ते पर लाते हैं, वो श्री गणेश Psyhologist अभी श्री गणेश तक नहीं पहुँच पाए क्योंकि वे ये नहीं जानते कि श्री गणेश जी तक पहुँचने के लिए पहले अपने जीवन को पवित्र बनाना चाहिए। रात–दिन शराब पीने वाले आदमी श्री गणेश के पास कैसे पहुँचेंगे ? अपने जीवन को जिसने पवित्र नहीं बनाया है , जिसके जीवन में संतुलन नहीं है, जो अपनी पत्नी छोड़कर और अनेक औरतों में रमता है, ऐसे महापापी लोगों के लिए क्या श्री गणेश जी दर्शन देंगे। जो कि स्वंय साक्षात् पवित्रता के अवतार हैं ? लेकिन पवित्रता के चमत्कार इतने हैं कि अभी मैं , एक University में, कृषि University में गई थी, राहुरी में, वहाँ के कुछ Professors हमारे शिष्य हैं, उन्होंने मुझसे कहा कि माँ हमें ऐसा कुछ Viberated पानी दो जिससे हमारी उपज बढ़े। तो मैने कहा लो, मैने ऐसे ही हाथ घुमाकर के उन्हें पानी दिया।कल ही वो आए थे बता रहे थे अपने –अपने किस्से । तो कहते हैं कि उस पानी से जिसे उन्होंने ने कुएं में डाल दिया और उस कुएं के पानी से जितना भी धान हुआ वो सौ गुना ज्यादा हुआ। कहने लगे ये तो माँ हमे मालूम ही था कि Viberations से होगा ही क्योंकि वो तो पहले भी हो चुका था, लेकिन सबसे आश्चर्य ये हुआ कि बहुत सा अनाज ढाई– ढाई सौ पोथियों का अनाज , चूहे खा जाते थे , सड़ जाता था , विशेषकर चूहे खा जाते थे। और जिस गोदाम में ये अनाज रखा गया , हमको आश्चर्य हुआ, कि उनमें छेद भी थे इन बोरों में लेकिन चूहों ने उसमें दाँत तक नहीं लगाए! और उसी के पास एक पेंड रखा हुआ था, एक और तरह की चीज़ होती है जिसे पेंड कहते हैं, वो दूसरी किसी जगह का था वो सारा वो खा गए। जो चूहे कभी नहीं खाते और गेहूँ उन्होंने छुए नहीं , जैसे के तैसे रखे रहे। अब आप कहेंगे ये कैसे हो सकता है ? Scientist इसको मानने को तैयार नहीं , ये तो हो ही नहीं सकता, ऐसे कैसे हो सकता है ? लेकिन साक्षात सामने है देख लीजिए। ये बात।अब ये एक Scientist ही है वहाँ के उन्होंने मुझे बताया। राहुरी के Professor हैं चौहान,उन्होंने मुझे बताया कि माँ हम लोग दंग हो गए देखकर। अब हम University में इस बात को कहते हैं तो हमारे Scientist कहते हैं कि नहीं इत्तफाक होगा। उन्होंने कही कि भाई इत्तफाक ऐसे कैसे हो सकता है कि कोई चूहे ने छुआ ही नहीं! जब परमात्मा की बात हुई तो इत्तफाक हुआ और Science की बात हुई तो Sure shot हुआ! क्योंकि परमात्मा को मानना मनुष्य के अहंकार के लिए बड़ी कठिन बात है। अहंकार ने इस तरह से सिर ढक दिया है, थोड़ा सा अहंकार जरा इधर खींच लीजिए तो बराबर बीचों बीच जगह हो जाती है मेरे सहजयोग के लिए। इस अहंकार के बारे में वो ये नहीं सोचना चाहते कि कैसे हो सकता हैं। कैंसर की बीमारी हमारे सहजयोग से आप जानते हैं, बहुत लोगों की ठीक हो गई। दिल्ली में भी बहुत सी कैंसर की बीमारी ठीक हो गई । यहाँ तक कि वहाँ सरकार ने ये कहा कि हम जानना चाहते हैं कि कैंसर की बीमारी किस तरह से सहजयोग से ठीक हो गई । तो मैने एक डॉक्टर साहब हमारे शिष्य हैं उनको भेजा कि आप जाकर वहाँ बताइए। वहाँ के Secretary ने हमें चिट्ठी लिखी कि ये हमारी समझ में नहीं आ रहा है। एक आदमी का Colour Blindness है, मै लंदन में थी, उसकी मेरे पास चिट्ठी आई और दूसरे दिन मैं ध्यान में गई

और उसी दिन उसकी Colour Blindness ठीक हो गयी। वो सरकारी नौकर था, director था उसकी नौकरी चली गई थी। लेकिन उसकी Colour Blindness पर किसी को विश्वास ही नहीं हो रहा था। अन्त में बड़ी मुश्किल से मैंने वहाँ एक सेक्रेट्री साहब को चिट्टी लिखी कि उसका examination तो करवा लो। जब examination हुआ तो वो लोग आश्चर्य में हो गए कि इसका Colour Blindness कैसे ठीक हो गया! यहाँ भी ऐसे लोग बैठे हैं जिनका पुनर्जन्म हुआ है, बहुत से लोग हैं गवाही देंगे वो आपको सुन लीजिए आप उन लोगों से । तब उन्होंने खबर की कि आप किसी डॉक्टर को भेजिए। हम चाहते हैं Medical college में इसका पता लगाएं। उन डॉक्टर साहब ने मुझको चिट्ठी लिखी कि पहले तो इन Scientist से मेरी लड़ते– लड़ते हालत खराब हो गई, उसमे फिर Emergency हो गई और इस वजह से वो बात स्थगित है। पर वो कहते हैं ये यहाँ पर होने वाला नहीं। मैंने सबसे कहा कि सहजयोग एक हिन्दुस्तान की देन है। कैंसर का मैने खोज लगा लिया है क्यों नहीं इसे देखते हो ? कोई डॉक्टर देखने के लिए तैयार ही नहीं। अब देखिए आप कि अमेरिका में डॉक्टर लाजेवार करके बड़े अच्छे डॉक्टर हैं, वो मेरे शिष्य हैं और उन्होंने एक दिन मुझसे कहा था कि माँ मुझे कोई विशेष ऐसा आशीर्वाद दो कि मैं सहजयोग को ही संसार में फैला सकूं। अभी London से आने के कुछ दिन पहले ही मेरे पास उनका फ़ोन आया कि मैं सारे न्यूयार्क के जितने भी डॉक्टर हैं उनका एक Association है उसका मैं Chairman हो गया हूँ, और कह रहे हैं कि आप वहाँ आइए सबकी हम Conference करा करके उसके सामने हम कैंसर का और सब चीज का सामने रखेंगे कि हमने सारा Sympathetic Nervous System को Control कर लिया है।अब आपके सामने मैं कह रहीं हूँ। यहाँ के जो डॉक्टर हैं अगर वो इसको accept नहीं करना चाहते हैं तो ये आने दीजिए अमेरिका से, फिर क्या कहें। जब हम सभी चीज़े अमेरिका की ही लेना चाहते हैं तो मैं इसे क्या कर सकती हूँ। इस प्रकार अनेक बीमारियाँ सहजयोग से ठीक हो गई है। सहजयोग से आपके अन्दर जो सात सेंटर हैं, आपके अन्दर जो सुन्दर व्यवस्था परमात्मा ने की हुई है वो कुण्डलिनी के प्रकाश से जागृत हो जाती है और ये देवता जागृत होकर के उसका पूरा संतुलन करते हैं और शरीर का पूरा संचालन करते हैं और सारे शरीर में वो शक्ति प्रदान करते हैं जो ऊपर से हमारी ओर पूरी बहती है। ऐसे ही समझ लीजिए कि गर हम मोटर का पेट्रोल खर्च कर रहें हैं और वो खत्म हो रहा हो तो हमें एक तरह का Tension आ जाता है। पर गर आपके पास ऐसी कोई व्यवस्था हो कि पूरी समय आपके अन्दर पेट्रोल भरता रहे तो थकने की कोई बात ही नहीं, खर्च होने की कोई बात ही नहीं। इसी तरह की व्यवस्था हो जाती हैं। इसी को Parasympathetic Nervous System कहते है। अब आपको ये भी सुनकर आश्चर्य होगा कि से सब कह रहें है डॉक्टर लोग कि Parasym pathetic का पकड़ना बहुत मुश्किल है। उसको हम नही Control कर सकते। दूसरा ये भी कहते हैं कि गर Psycosynthesis करना है, गर सब शरीर की जितनी भी ग्रंथियां है और मन, बुद्धि, अहंकार आदि सबको गर एकत्रित करना है तो उसके लिए Parasympathetic से ही चढ़ना होगा।ये सब उन्होंने पूरा stage बना दिया है हमारे अन्दर में। वो वही बता रहें हैं जो हम कर रहे हैं लेकिन हम गर कहें कि तुम कूद करके stage पर आ जाओ तो उसके लिए कोई भी बुद्धिमान तैयार नहीं क्योंकि बुद्धि.....।

(Recording is incomplete)

तत्व की बात–1

गांधी भवन, दिल्ली विश्वविद्यालय

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन फरवरी–1981,

दिल्ली विश्वविद्यालय के इस सुन्दर प्रांगण में अनेक बार आना हुआ। कोई न कोई नई बात यहाँ कह दी जाती है और अनेक बार लोगों को यहाँ जागृति भी दी और जागृति के बाद क्या करना चाहिए, ये भी अनेक बार मैंने समझाया। क्योंकि अंकुर का प्रादुर्भाव होना, अंकुर का जागृत होना, ये तो हर एक के लिए मनोनीत है, लिखा हुआ है और वो अगर उसमें से अंकुर निकलता है, तो वो उसका स्वाभाविक धर्म ही है, सहज है, स्वैच्छिक (Spontaneous) है, वो तो होना ही हुआ। आपके अन्दर यदि यह अंकुर है ही ,तो उसका अंकुरित होना तो कुछ विशेष चीज तो है नहीं।

हम लोग हर वक्त देखते हैं, हर समय देखते हैं कि हजारों, करोड़ों बीज इस पृथ्वी माता के पेट में पनपते हैं, हर समय। कोई से भी बीज को आप बो दीजिये, वो अंकुरित हो ही जायेगा। वो अपने प्रेम से, वो अंकुर को किस तरह जागृत करती है ? वो किस प्रकार करती है, कैसे करती है, यह हम लोग नहीं जानते, क्योंकि यह उनका स्वभाव है। उस स्वभाव के अनुसार वो अंकुरित करना उनके लिए एक बहुत ही साधारण लीला सी चीज़ है, कोई विशेष बात नहीं है। लेकिन जैसा कि कहा गया है, ईसा मसीह ने कहा था, 'बहुत से बीज थे, कुछ बीज तो पत्थर पर पड़ गए और कुछ बीज थे, वो पहाड़ी रास्ते पर पड़ गए और कोई बीज थे जो ऊर्वरा भूमि में पड़ गए लेकिन उनमें से कोई बीज ऐसे भी थे जो बहुत ही अच्छी ऐसी भूमि में पड़ गए, जहां वो पनप गए।' वो उनके जमाने की बात है जो दो हजार वर्ष पहले उन्होंने कही थी। उसका अर्थ यह है कि, बहुत से लोग जो साधक हैं, संसार में, जो परमात्मा को खोज रहे हैं, जो परमात्मा के नाम पर कुछ भी करते रहते हैं, चाहे मन्दिर जायें, चाहे चर्च जायें, चाहे कुछ भी करें। उनमें इस तरह की श्रेणियां हैं, उनमें से कुछ तो पत्थरों से और चट्टानों से टकरा रहे हैं, जानते हुए भी कि बेकार की चीज़ है, उसी से अपना सर रगड़ रहे हैं। आप कितना भी सिर रगड़ें तो भी चट्टान तो चट्टान है, चट्टान से आपका अंकुर कभी प्रस्फुटित नहीं हो सकता।

जब मनुष्य जितनी भी दकियानूसी बातें है धर्म को लेकर करता है उनसे मनुष्य धर्मान्धता में घुसता चला जाता है। वो सोचता है कि बहुत ही ज़्यादा Sacrifice (बलिदान) किया है, त्याग किया है, परमात्मा के लिए। ऐसे लोगों से आप कह भी दीजिये कि ऐसी चीज़ से फायदा नहीं, आप ऊर्वरा भूमि में आईये जहां आप पूरी तरह पनप जायें, पूरी तरह से शीतलता हो और पूरी तरह उसकी हिफ़ाजत हो आपको देखा जाय और जहाँ आपको संजोया जाय, ऐसी जगह आप आईये, तब आपका जो प्रसाद है जोकि आप अंकुरित होना कहते हैं, तो वो हो सकता है।

तो इस बात को मानने के लिए भी बहुत कम लोग तैयार हैं। बड़ा आश्चर्य है। मानव तो मेरी समझ में नहीं आता। मानव जैसा जिद्दी प्राणी संसार में नहीं है। कोई सा भी प्राणी मात्र इतना जिद्दी और हठी नहीं है। और जब कि पूरी तरह अज्ञान में हम हैं और जब कि हमारे ऊपर इतने आवरण हमने अपने दिमागी जमा–खर्च से लपेट रखे हैं, तो फिर हम सोचते हैं कि हमसे अकलमन्द और कोई नहीं है तो फिर ऐसे लोगों का इलाज किया क्या जाये ? मेरी तो समझ में नहीं आता। जैसे कि आप धर्मान्ध लोगों को देखते हैं। मैं अभी एक मन्दिर में गई थी। पहली मर्तबा मन्दिर में गई तो बहुत भीड़ और दूसरी मर्तबा गई, तो बहुत कम लोग आये। मैंने पूछा कि भई क्या हो गया, क्यों

नहीं आये ? कहने लगे कि माताजी आप से सब लोग नाराज हो गए। मैंने पूछा किस बात पर ? कहने लगे कि इसलिए नाराज़ हैं कि आपने कहा कि भगवान के नाम पर उपवास नहीं किया करो। किसने बताया कि उपवास करने से भगवान मिलते हैं ? क्या सारे लोग जो उपवास कर रहे थे उनको क्या भगवान मिलने वाला है ? उसको भगवान का नाम लगा देने से क्या फायदा है ? क्यों आप उपवास करते हैं ? आप जब सहजयोग में आयेंगे, तो आपको आश्चर्य होगा कि जिस दिन का आप उपवास करते हैं उसी दिन के देवता आप से नाराज हो जाते हैं। जैसे कि आप गुरुवार का उपवास करते हैं, जैसे कि उदाहरण के लिए किसी आदमी का पेट खराब है उससे पूछ लीजिये कि क्या आप गुरुवार का उपवास करते हैं या आप दत्ता गुरु को मानते हैं ? आप देखियेगा कि उनका पेट खराब पाइयेगा। या किसी भी गुरु को मानते हैं, उनका पेट खराब होगा। लेकिन यदि मैं कहूँ कि भई गुरुवार के दिन उपवास न करो, न सोमवार के दिन करो, कोई भी दिन न करो क्योंकि ये सब दिन जो हैं, उनमें एक एक देवता के लिए रक्खे गए हैं और उस दिन वो Specially (विशेष रूप से) जागृत होते हैं, तो उनको जागृत रखो बजाय इसके कि उनको नाराज़ करो। किसी को नाराज़ करना हो तब आप उपवास करते हैं न, या कोई सूतक हो ? जब कोई आदमी आपसे नाराज़ हो जायेगा तो वो आपके घर में बैठा होगा तो परसे थाल से उठ जायेगा या अगर आप उसको खाने पर बुलायेंगे तो कहेगा कि साहब मैं तो खाने के लिए नहीं आऊँगा, मैं आपसे बहुत नाराज हूँ। मतलब, हम लोग नाराजगी जाहिर तब करते हैं, या उपवास कि जब हम किसी तरह उनको दिखा दें कि हम नहीं खायेंगे यानि रोटी बन्द करना।

फिर आप किस सिलसिले में उपवास कर रहे हैं? मेरी आज तक समझ में नहीं आया कि इन्सान को किसने समझाया ? आप जिस दिन का उपवास कर रहे हैं जिस दिन Deity (देवता) का दिन है, उस चक्र का दिन है उस रोज तो उत्सव होना चाहिए, आनन्द से उनको स्वीकार करना चाहिए। जिस दिन गणेश जी का जन्म होयेगा, उस दिन आप उपवास करेंगे ? और ये भी एक छोटी सी बात लोग सुनने को तैयार नहीं हैं गणेश जी जिस दिन पैदा हुए उस दिन उपवास मत कीजिये। श्रीराम जिस दिन पैदा हुए उस रोज उपवास मत कीजिये, श्रीकृष्ण पैदा हुए, उस रोज़ भी मत कीजिये, मेहरबानी से उस दिन उत्सव मनाईये। अब इससे समझदारी की बात क्या हो सकती है, ज़रा बताईये ? लेकिन इस कदर दकियानूसी पना अपने देश में इस कदर अन्धापन है, इस मामले में कि " ब्रह्मणाचार और स्त्रियाचार " कहते हैं कि इस तरह इससे हम लोग ढक गए हैं कि छोटी छोटी बात पर नाराज हो जाते हैं।

अब Western Countries (पश्चिमी देशों) में बात यह है कि वहां के लोगों को बात समझायें तो उनको यह बात समझ में नहीं आयेगी क्योंकि वो विवाद से जूझ रहे हैं या आपसे बहस करेंगे। उसकी वजह है, वो भयंकर अहंकारी हैं। उनमें इतना अहंकार ज़बरदस्त है कि अगर कोई आदमी उनके ऊपर ऐसा जाल चलाये जिससे वो पूरी तरह mesmerise (मेसमेराइज़) हो जायें या मन्त्रमुग्ध हो जायें या कोई न कोई बेवकूफी की बात उन्हें सुझा दें, जैसे कहे कि हम आपको उड़ना सिखायेंगे हवा में, अपने हाथ ऐसे रखें और हवा में उड़ने लग जायेंगे तो लोग उनको तीन हजार पौंड (£3,000)देने को तैयार हो जायेंगे। ऐसी कोई

बारीक बेवकूफी की बात उनको सिखाई जाये तो बड़े लोग खुश हो जायेंगे। मतलब यह है कि उन लोगों को कोई न कोई बेवकूफी की तरफ बढ़ाने के लिए गति उनके अन्दर है लेकिन जब कभी समझाया जाये कि भई यह अक्ल की बात करनी चाहिए, बस एक छोटी सी बात पर नाराज़ हो जायेंगे।

मैं यहाँ लोगों को खुश करने तो आई नहीं हूँ क्योंकि किसी को खुश करने की कोई बात नहीं है न ही नाराज करने की बात है। न तो नाराज करने आई हूँ न खुश करने, मैं तो इसलिए आई हूँ कि आपकी अपनी जो शक्ति है, जो आपके अन्दर आपका अपना आत्मा बसा हुआ है, उसे मैं देख पा रही हूँ उससे आपका मिलन करा दूँ। उसमें जो कुछ आपने अड़चने डाल रखी हैं अपनी अक्ल से या आपकी अपनी समझ से। कोई मैं आपको बेवकूफ नहीं कह रही। लेकिन अगर कोई गलतियाँ हो गई हैं तो उस चीज़ को आपको ठीक कर लेना चाहिए।

जैसे कि आप हिन्दुस्तान में पैदा हुए है। ठीक है। हिन्दुस्तान की अपनी कुछ है, चली हुई गलत परम्परायें हैं। सही भी बहुत हैं, गलत भी बहुत हैं और उनमें से जो गलत परम्परायें हैं उनको हमने ज़्यादा जकड़ लिया है बनिस्बत उनके जो कि सही परम्परायें है। अगर कोई साहब कहें कि आप हिन्दुस्तान में पैदा नहीं होते और आप लंदन में पैदा होते तो आपकी परम्परा अलग हो जाती। आप तो पहली बात इन्सान हैं। इस बात को अगर मनुष्य समझ ले कि मैं एक बीज–स्वरुप हूँ और बीज होने के स्वरुप मुझे अंकुरित होना है यही मेरा परम् कर्तव्य है और कोई मेरा कर्तव्य नहीं है, और कोई चीज़ मेरे लिए महत्वपूर्ण नहीं है बनिस्बत इसके कि मैं अंकुरित हो जाऊँ।

अब दूसरी बात अपने देश में है जो बहुत ही बुरी तरह फैली हुई है वो ये है कि धर्म हमारे यहाँ बिकता रहता है, सुबह से शाम तक। आप गंगाजी पर जाईये जितनी श्रद्धा हो उतने पानी में उनको उतारिये। आप मन्दिर में जाईये, जितनी श्रद्धा हो उतना रुपया दीजिये। यहां भगवान के नाम पर हर एक चीज़ बेची जाती है। मैंने सुना है भगवान का तिलक बेचा जाता है। कोई चंवर घुमाने वाले हैं, अगर वह 5 लाख रुपया दें तो वो चँवर घुमा दें। इस तरह की इतने पागलपन की बातें हम लोग परमात्मा के नाम पर करते चले आ रहे हैं, उनकी तरफ मद्देनजर करना चाहिए, देखना चाहिए कि क्या कर रहे हैं, किस चीज़ से हम जूझ रहे हैं। यह तो अहंकार की पुष्टि के लिए मनुष्य करता है, कि मैंने इतना रुपया दे दिया और मुझे चँवर घुमाने के लिए उस पर खड़ा कर दिया और मैं चँवर घुमा रहा हूँ और बड़े अपने को अक्लमन्द समझे चले जा रहे हैं। यह एक अजीब बेवकूफी है या नहीं, आप बताईये ? क्या ये पांच लाख खर्च करने से क्या परमात्मा आपसे संतोष करेंगे ? उनको रुपया–पैसों की जरूरत नहीं है। परमात्मा को रुपयों पैसों की जरूरत नहीं हैं। वो कोई गरीब आदमी नहीं हैं, गरीब इन्सान नहीं है। सारी सृष्टि उनकी अपनी है। उनको रुपये–पैसों से मतलब क्या ? उनको तो मालूम ही नहीं कि रुपया पैसा क्या होता है। उनको तो जन्म लेना पड़ता है सीखने के लिए कि रुपया चीज़ क्या होता है। कोई आसान चीज़ थोड़ी है मनुष्यों का पागलपन सीखना ! बहुत ही मुश्किल काम है। इतने पागल होते हैं मनुष्य कि उनकी बातों को सीखने के लिए परमात्मा को बहुत मेहनत करनी पड़ती है। कोई सीधा–सरल काम नहीं है। जैसे कि कोई मनुष्य धर्म में खड़ा है, उसको यह समझ में ही नहीं आता

कि यह बातें पाप–पुण्य की लोग क्यों करते हैं । यह नहीं करो वो नहीं करो, ऐसा नहीं करना चाहिए, अरे भाई यह करता कौन है ?.....

जैसे हमारी Grand Daughter (धेवती) है, वो पार है, पैदाइश से। हमसे कहने लगी, 'हमारे स्कूल में बहुत stupid subject (बेहूदा विषय) है, नानी'। मैंने कहा, 'कौन सा ?" कहने लगी, 'Moral Science (नैतिक विज्ञान) बड़ा ही stupid subject है। तो मैंने कहा, क्यों ?" कहने लगी, 'मालूम है, उसमें क्या सिखाते हैं ? झूठ मत बोलो, चोरी मत करो। हम कोई नौकर हैं, जो हमको ऐसा सिखा रहे हैं ? गंदी गंदी बातें सिखाते रहते हैं। ऐसी कोई सिखाने की बात होती है कि झूठ मत बोलो।' वो कहने लगी कि मुझसे कहा कि दस sentence लिखो share करने पर। तो कहने लगी ,'क्या share करें ' मैंने कहा कि उनका मतलब है, कि उन्होंने कहा होगा कि तुम ऐसा करो कि खाना share करो। तो कहने लगी, 'खाना तो हम share करके ही खाते हैं या इकट्ठा साथ ही खाते हैं।' उनकी यही समझ में नहीं आता यह बच्चे जो पार बच्चे हैं कि गलत काम करना ही काहे को ? गलत रास्ते पर जाते ही क्यों हो ? जब हम जाते ही नहीं तो हमें बताते ही क्यों हो ?

एक किस्सा है कि एक पादरी साहब एक गाँव में में गए, जहां बेचारे देहात के लोग बहुत सीधे सादे थे। उन्होंने उनको काफी कुछ सिखाया। यह हुआ तो हुआ, जब जाने लगे तो उनका Farewell (विदाई–समारोह) हो गया। उसमें बेचारे देहाती लोगों ने कहा, कि पादरी साहब हम आपके बहुत शुक्रगुज़ार हैं, बड़ा धन्यावाद है क्योंकि हमको तो मालूम ही नहीं था कि पाप क्या है ? आपने हमें सिखाया कि पाप चीज़ क्या होती है, बहुत बहुत धन्यवाद।' तो जो निष्पाप होते हैं, जो भोले होते हैं, जिनको पता है ही नहीं ये चीज़ क्या है, मतलब ये कि बहुत मुश्किल हो जाती है मनुष्य के बारे में सीखने के लिए।

मनुष्य इतना पागलपन करते है कुछ समझ में ही नहीं आता कि इनको समझाये कैसे ? और कोई आप बात समझाईए तो वो नाराज हो जाते है। यहाँ पर क्या कोई election (चुनाव) है कि आपके कोई पीछे है या कोई हार–जीत है ? आप अगर जहर खाते हो तो भाई खाओ नहीं तो नाराज हो जाओगे, ऐसा तो नहीं न कोई बोलने वाला।

एक सूझ–बूझ की बात होनी चाहिए मनुष्य के अन्दर कि हम इस संसार में आए क्यों हैं, पहला सवाल ? क्या हम इसलिए आए हैं कि आकर मन्दिरों में लोगों को पैसा चढ़ाएं ? या इसलिए आए है कि धर्मान्धता करके उसके नाम पर लड़ते रहें ? या इसलिए आए है कि परमात्मा को गालियां बकते रहें और कहते रहें कि परमात्मा है ही नहीं ? हम आए किसलिए हैं संसार में, पहला प्रश्न अपने आप से पूछना चाहिए कि क्या हम अमीबा (Amoeba) से इन्सान बनाये गए तो किस वजह से ?

इसका जवाब कोई scientist (वैज्ञानिक) नहीं दे सकता क्योंकि उनसे परे की बात है। कोई scientist नहीं बता सकता कि आपको इन्सान क्यों बनाया गया ? यह सब मानते हैं कि हम Amoeba (अमीबा) से, एक छोटे से अमीबा से मेहनत करके आपको बनाया गया–ये Special (विशेष) चीज़ जो इन्सान है, है बड़ा मजेदार। लेकिन कभी कभी सोचती हूँ कि इनके सींग नहीं हैं, दुम नहीं है, ऐसे तो ठीक है लेकिन इतने ज़्यादा हठी क्यों हैं ? यह मेरी समझ में नहीं आया। इतनी हठ तो कभी– कभी बैल या घोड़ा कभी–कभी क्षणिक करते हैं। यह तो Permanently (स्थाई रूप से) हठी लोग बैठे हुए हैं। और इनसे

जूझते–जूझते मेरी समझ में नहीं आता कि इनको पार करा कर भी क्या होगा ? अब आप पूछ सकते हैं। आपसे पंतजी बतायेंगे कि न जाने कितने लोगों को हमने यहां पार किया, उनको Vibrations आने लग गए, पार भी हो गए, कुण्डलिनी के बारे में उनको बताया; कैसे कुण्डलिनी जागती है, उन्होंने यहाँ तक देखा कि हमारे सामने जब लोग आते हैं तो उनकी कुण्डलिनी उठती है, उसका स्पंदन होता है । Triangular Bone (त्रिकोणाकार हड्डी) में कुण्डलिनी है, ऊपर चढ़ती है और ब्रह्मरंध्र को छेदती है। यह सब उन्होंने देखा है और हुआ और उसके बाद Vibrations आये और ये सब कुछ करने के बाद, बावजूद इसके कि हर तरह का उन्हें अनुभव हो चुका, उसके बाद साहब फिर वो घर में मेरा फोटो ले गए और आरती–वारती करके और फिर एक साल बाद बता दिया कि माता जी हमारे Vibrations अब गायब हो गए। और क्या होगा ? उसका पूरा इन्तजाम आपने कर लिया। जब कि आपके अन्दर कोई बीज पनपा है, तो उस को आप किस तरह रखेंगे ? उस वक्त आप अगर उसको उठाकर फैंक दीजिएगा तो वो गल जाएगा, खत्म हो जाएगा। सीधा हिसाब है।

इस बात को लोग समझते नहीं हैं कि कितना बहुमूल्य हमें यह माँ ने दिया है । मेरे लिए तो इतना बहुमूल्य नहीं होगा शायद क्योंकि मुझे कोई इसमें ऐसी विशेष बात नहीं लगती। लेकिन आपके लिए मूल्यवान ज़रूर है। क्योंकि अगर आपको ये न मिले तो आप करियेगा क्या ? आप लोगों को क्या होने वाला है ? इसके बगैर आप लोगों का चलेगा कैसे ?

पाने का तो यही है। समझ लीजिये आपने microphone यह बनाया है और इसको ऐसा ही रखा, इसे mains से नहीं connect (कनेक्ट) किया तो इसका क्या करियेगा ? अचार डालियेगा? अधिकतर इन्सान इसी हालत में है कि उनका अचार डालिये। किसी काम के नहीं, एकदम बेकार लोग हैं। बिल्कुल बेकार हैं परमात्मा के लिए। वे अपनी दृष्टि से अपने को तो बड़ा अफलातून समझते हैं। उन्हें सब सैलूट (salute) करें, ये करें, वो करें पर वो बिल्कुल बेकार हैं।

असल में आप परमात्मा के instruments (यन्त्र) तो बनिये, जिसके लिए आप संसार में आए हैं और इसलिए आप विश्व में बने हैं। उनके आप instrument बनें, उन्हें समझें, गहनता ग्रहण करें और उनके साम्राज्य में आप जायें। लेकिन अगर परमात्मा ने अपना साम्राज्य फैला रखा है कि आप आईये आपके लिए सुस्वागत् रखा हुआ है, सब इन्तज़ामात हैं आपके लिए कि आप कुण्डलिनी के सहारे आप अन्दर आईए लेकिन आप जो हैं, हठ से दरवाजे पर खड़े हैं कि नहीं साहब हम तो आयेंगे ही नहीं । क्यों साहब चौखट से ही हमको प्यार है तो हम क्या करें ? इस प्रकार मनुष्य के अन्दर इतना अज्ञान है, इतना ज़्यादा अज्ञान है कि कभी कभी मुझे लगता है कि दी हुई चीज़ का जो प्रकाश है उसे वह देख नहीं पाएगा और समझ नहीं पाएगा।

अब यहां पर न जाने कितने सालों से हम आ रहें हैं। कितने ही लोग पार हो रहे हैं लेकिन गति जो है यहां सहजयोग की वह बहुत धीमी है, विशेष कर विश्वविद्यालय में क्योंकि विश्व का विद्यालय है न ! मुझे तो हँसी इस पर आती है कि जहाँ मुझे उम्मीद भी नहीं होती, जहाँ मैं सोचती भी नहीं कि इतना काम पनप जाएगा वहाँ तो बहुत आसानी से हो जाता है और लेकिन जो ज़रूरत से ज़्यादा अक्लमन्द होते हैं– जैसे कबीर दास जी ने कहा है कि 'पढ़ि पढ़ि पंडित मूरख भए' और हमारी

मराठी में कहा जाता हैं..... कि जो अति अक्लमन्द बनते हैं उनके पैर जो हैं रास्ते में घूमा करते हैं वो कुछ नहीं होती। ऐसा कुछ हाल हो जाता है।

इसलिये पहले यह सोचना है कि हम क्या हैं ? आप आत्मा हैं। आप सिर्फ आत्मा हैं। और बाकी? बाकी कुछ भी नहीं, बाकी सब बेकार। और इस आत्मा का जो प्रकाश है, जो ब्रह्म तत्व है , जिसे कि हम Vibrations के नाम से जानते हैं, जो शीतल होते हैं ये ही आपका कार्य है और कुछ नहीं, बाकी सब मिथ्या है। शरीर तो आप जानतें हैं मिथ्या है। शरीर मिथ्या है , आप रोज ही देखते हैं। इधर से मैं आ रही थी तो मैंने देखा कितने ही बड़े बड़े लोग जो आये , अब नहीं हैं। फिर आप यह भी जानते है, अहंकार मिथ्या है। बड़े बड़े लोग Position (ओहदों) में बैठते हैं, जैसे ही उनकी कुर्सी खिसक गई, उनको पताल दिखाई देने लग गया। मन भी जो है, वो भी मिथ्या है। आप किसी के पीछे बहुत मनःपूर्वक काम करते है मनः पूर्वक ये करते हैं, मनःपूर्वक वो करते हैं और आप को कुछ हो जाता है, कोई आपको पूछने वाला नहीं रह जाता है। बुद्धि भी मिथ्या है क्योंकि बुद्धि से जो जानते हैं, आप उसी को contradict (विरोध) करने लग जाते हैं। बुद्धि की पहुँच ही कहाँ तक है, जो सामने दिखाई देता है। जैसे कि ज़्यादा से ज़्यादा बुद्धि से आपने Science (विज्ञान) खोजा। और Science ने यह बता दिया कि पृथ्वी के अन्दर Gravity (गुरुत्व) नाम की शक्ति है। वो तो जाहिर है उसमें कौन सी बताने की बात है। वो तो किताबों में हैं, सब कुछ है। और जो कुछ भी आप पता लगा रहे हैं, उसके अन्दर है वो सब कुछ। लेकिन वो आई कैसे वहाँ? वो है क्या चीज ? वो शक्ति क्या है, जो पृथ्वी के अन्दर समाई है ? इसका तो उत्तर आपने दिया नहीं। बस कह दिया कि हमारे दो हाथ है, हाँ हमारे दो हाथ है और फिर कह दिया कि इस हाथ के अन्दर पांच उंगलियाँ हैं, ठीक है, हैं पाँच उंगलियाँ। ये हमने देख लिया और फिर Science से आप ज्यादा से ज्यादा यह बता देंगे कि यह किस चीज़ का बना है। इसको खोज–खाज के, खोज–खाज के ही इन चीजों का पता लगा सकते हैं। बता सकते हैं कि इसके अन्दर क्या है उसके अन्दर क्या है वगैरा वगैरा। लेकिन क्यों है और कैसे है इसका जबाव नहीं है। जैसे हमारे अन्दर श्री गणेश हैं, और श्री गणेश की शक्ति हमारे अन्दर है। यह जो आपको पहला चक्र दिखाई दे रहा है, मूलाधार चक्र पर ही श्री गणेश हैं। अच्छा हम यह बात कर रहे हैं कि श्री गणेश हमारे मूलाधार चक्र पर विराजमान हैं। अब आप इसका Proof (प्रमाण) दे सकते हैं science से ? कोई दे सकता है कि हमारे अन्दर श्री गणेश की शक्ति कहाँ है ? इसका आप कोई भी Proof दे दें, कोई भी नहीं दे सकता। क्या वजह है ? इसका जबाव आप इस अल्प बुद्धि से नहीं दे सकते। बुद्धि जो है हमेशा ही Limited (सीमित) है। मैं Unlimited (असीम) की बात कर रही हूँ।

अब Unlimited में जब तक आप नहीं जायेंगे, जब तक आप असीम में नहीं उतरेंगे, आप इस चीज़ का जबाव नहीं दे सकते हैं कि माँ आप सच कह रही हो या झूठ कह रही हो। अब मैं आप से एक–दो सवाल पूछूँ कि ये बताइये कि पक्षी आते हैं, साईबेरिया से आते हैं, हमारे यहां मध्य–प्रदेश में जगदलपुर में आप पाइयेगा साईबेरिया के पक्षी, सीधे । और हर बार वही पक्षी वहाँ चले आते हैं। वो कैसे आते हैं ? इसका जबाव दे सकते हैं। उनके अन्दर कौन सी शक्ति है जिसकी वजह से वो बराबर साईबेरिया से उड़कर वहाँ चले आते हैं ? वही गणेश शक्ति। और वही गणेश शक्ति पृथ्वी के

अन्दर गुरुत्वाकर्षण शक्ति है जिसे कि आप कहते हैं Gravity और जो इन्सान के अन्दर gravity है, जब वह खराब हो जाती है, उसका वज़न खराब हो जाता है, उसकी जब gravity खराब हो जाती है, जब उसका Self-esteem (आत्म–सम्मान) जब वो Frivolous (कमज़ोर) हो जाता है, जब उस की आँखें इधर–उधर दौड़ने लग जाती हैं, उसका मन खराब हो जाता है और उसका चित्त बिखर जाता है तब उसकी gravity खत्म हो जाती है। जब वह gravity खत्म हो जाती है तो क्या हो जाता है ? आपका गणेश चक्र पकड़ जाता है। और जब ये गणेश चक्र पकड़ जाता है तो आपका innocence जो है, वो खत्म हो जाता है। आप चालाक हो जाते हैं। अब, चालाकी से बढ़कर महाबेवकूफी संसार में कोई नहीं है। जो महाबेवकूफ होता है, वही चालाकी करता है और अकलमन्द जो होते हैं कभी नहीं। क्योंकि चालाकी से आप पा भी क्या सकते हैं। चालाकी से आप अपने innocence को तो पा नहीं सकते जो आपकी गणेश शक्ति जो आपके अन्दर Present है, बसी है। इस गणेश शक्ति से ही आप पैदा हुए हैं। आपके अन्दर समझ लीजिये कि आपके तन की शक्ल है। आपकी बीवी की दूसरी तरह की शक्ल है, और आपका जो बच्चा होगा, वो दोनों की शक्ल से किस तरह मिलकर बनता है। ये कैसे बनता है ? कोई Scientist बनाकर दिखाये। कोई Scientist अगर जमीन से पत्थर उठाकर के उसमें से बच्चा पैदा करके दिखाये। या छोड़िये फूल निकाल कर दिखाये । या छोड़िये कुछ चीज़ बनाकर दिखाये।

तो किस चीज़ का इतना अहंकार है मनुष्य को ? ये कहा जाता है कि कोई भी अपने अन्दर शरीर के अन्दर कोई सी भी Foreign चीज़ आए, कोई भी बाहर का चीज़ आए तो आपका शरीर उसको फैंक देता है। पर जब माँ के पेट में बच्चा रहता है, foetus होता है तो वह फैंका तो नहीं जाता बल्कि उसको संजोया जाता है, सम्भाला जाता है, तब तक जब तक वह उस दशा में न पहुँच जाये और जब वह उस दशा में पहुँच जाता है तो उसको बराबर बाहर निकाला जाता है करीने से। ये काम कौन करता है ? आप तो नहीं क्या आप सम्भालते हैं इसे ? आप ही क्यों पैदा हुए हैं ? आपके अन्दर जो कुछ सूरत–शक्ल है वो भी श्री गणेश शक्ति की देन है। अब जब आप अज्ञान में बैठे हुए हैं तो आप इस गणेश शक्ति को नष्ट कर रहे हैं। सुबह से शाम तक आप इस शक्ति को नष्ट कर रहे हैं और इसको आप जितना नष्ट करते जायेंगे–जहाँ जहाँ से गणेश शक्ति नष्ट हो गई, वहाँ वहाँ बच्चे पैदा नहीं होंगे। अब आप जर्मनी में जाइये; इंग्लैण्ड में जाइये–सब Minus Population ही है। अभी तो वह कह रहे हैं कि Emigration (स्थानान्तरण) नहीं होगा। Emigration उन्हें करना पड़ेगा क्योंकि सब बुड्ढे हो जायेंगे 90 साल के, बच्चे कोई होंगे नहीं तो होगा क्या ? जहां ये गणेश शक्ति नष्ट होती जाती है स्त्री में, विशेष कर पुरुष में भी, वहां पर बच्चे पैदा नहीं होते क्योंकि गणेश शक्ति से ही संसार में..... और ये गणेश शक्ति हमारे अन्दर इस Centre (चक्र) में बैठी हुई है। और इस Centre के बारे में कहीं science में लिखा नहीं। अब लोग मुझसे भी कहते हैं कि माँ आप जो कह रही हैं, वो किसी किताब में नहीं लिखा । अरे भई जो किताब में लिखा है वो तो उद्धृत है ही और अगर सब बातें लोग पहले से ही लिख देते तो आप किस दिन के लिए आए हैं ? कुछ बात बताने के लिए भी रखनी पड़ती है। और पहले बताने से भी फायदा क्या ?

उससे तो नुकसान ही होगा। जो चीज़ पहले बताई गई, उससे बड़ा नुकसान हो गया लोगों को। अब जैसे पहले बताया गया था कि भई शराब मत पियो क्योंकि वह चेतना के विरोध में पड़ती है। अगर आपने शराब पीना शुरु कर दिया तो आपका जो है नाभि चक्र खराब हो जायेगा। सीधा हिसाब। क्योंकि आपकी चेतना जो है– जिस चेतना से आपको परमात्मा को खोजना है वो आपकी दब जाती है। वो आपके नाभि चक्र में जो चेतना है, जिससे आप भगवान को खोजते हैं, जिससे आप evolve (उत्कृत) हुए हैं जिससे आप अमीबा से इस stage (स्तर) में आए हैं। आपका evolution (उत्क्रांति) रुक जाती है अगर आपने शराब पीना शुरु कर दिया । सीधा हिसाब। आप evolve नहीं होते, आप पार नहीं हो सकते। इसीलिए कहा कि शराब मत पियो। अब अगर किसी से कहो कि शराब मत पियो तो उसकी हद इतनी कर डाली उन्होंने। एक हद तो ये हो गई कि कहा कि शराब मत पियो तो भगवान के ऊपर में उमर खय्याम साहब हो गए, अपने बच्चन जी हैं, बड़े भारी कवि घूमते हैं। उन लोगों ने निकाला कि भई क्या रखा (इसमें) बुरा ? What's wrong ? What's wrong? Nothing is wrong. If you want to become stones- तो क्या है ? There is nothing wrong.(बुरा क्या है ? बुरा क्या ? बुरा कुछ नहीं है। अगर आप पत्थर बनना चाहें– तो क्या है इसमें कुछ बुरा नहीं।) आप जाकर कुछ भी खाइये, पीजिये,हर्ज क्या है ? wrong कुछ नहीं है। Right (अच्छा) wrong और (बुरा) की तो बात क्या है, आपकी तो evolution की शक्ति खत्म हो गई। सीधा हिसाब। लेकिन एक हद तो यह हो गई कि भगवान के नाम पर पचासों गालियाँ, और सारे जितने साधु–सन्त हैं उनके नाम पर गालियाँ। और दूसरी हद यह है कि शराब नहीं पीने का है, तो ये हद हो गई, दूसरी हद हो गई कि शराब जो पीयेगा उसके हाथ काट डालो, पैर काट दो, सर काट डालो। ये भी कोई नमूना है ? एक तो extreme (अति) यह है कि शराब पीना क्या है, मतलब तो बहुत बड़ी चीज़ हो गई। शराब क्या है, उसके ऊपर ग़जलें हों फसाना हो गया ,ठिकाना हो गया, सब चलता है। और दूसरी हद ये कि जब पहुँचे कि आपने शराब पी तो गर्दन आपकी कट गई। भई एक बार किसी ने शराब पी, ठीक है एक बार पी तो उसका नशा तो उतार सकती हूँ लेकिन गर्दन निकाल दी तो उसका क्या करूं ? Out of proportion जा रहे हैं। अब इसी तरह अनेक चक्र अपने अन्दर इस तरह से हैं, जिनके बारे में खुलकर बतायेंगे। मेरे ख्याल से हम किसी भी चक्र के बारे में खास जानते नहीं। अगर जानते होते तो हम लोग उसके साथ ऐसे खेल–खिलवाड़ नहीं करते।

तीसरा चक्र हमारे अन्दर जो है बहुत महत्वपूर्ण है जो कि दिल्ली शहर के अन्दर बहुत ही ज़्यादा पकड़ रहा है, नई दिल्ली में ज़्यादा Old Delhi में कम–स्वाधिष्ठान चक्र। स्वाधिष्ठान चक्र वो चक्र है जिससे हम सोचते हैं। जब हम सोचने लग जाते हैं बहुत ज़्यादा , तो यह चक्र बहुत ज़्यादा चलता है और इसके अन्दर एक शक्ति होती है जिससे हमारे पेट का जो मेद है, जो Fat cells हैं , उनको हम convert (बदलते) करते हैं, brain (मस्तिष्क) के लिए । अब सोचने की लोगों को इतनी बीमारी है, कभी कभी मेरी समझ ही नहीं आता कि सोचने की जरूरत क्या है। जैसे समझ लीजिए कि अब किसी आदमी को बाजार जाना है। भई उठाओ झोला, जाओ बाजार। देखो क्या सब्जी है, लेकर आ जाओ। सबसे पहले घर में discussion शुरु हो रहा है कि आज भिंडी बनायें या

लौकी बनायें। बाजार गए तो दोनों सब्जियां नहीं। पहले एक घन्टा वहाँ discussion (बहस) हुआ, Planning (योजना) हो गया, बाजार गए तो वहाँ दोनों सब्जियां नहीं। तीसरी लेकर आ गए जिसका कोई इन्तजाम नहीं। हर चीज़ में इतना सोचकर के हम लोगों ने कौन सा तमाशा करके रक्खा हुआ है, बोलिये। यही तो लपेटना, मैं कहती हूँ। आधे तो पहले, तो आधे को ऊपर से लपेट लिया।..... वो आये, बड़ा सलाह मशवरा दिया उन्होंने जैसे कहते हैं न ऊँट पर बड़े अक्लमन्द आए बैठकर। तो उन्होंने कहा कि हम आप से सलाह मशवरा करते पर हम ऊँट पर आये हैं। उन्होंने कहा कि भई ऊँट से उतरो। कहने लगे, नहीं साहब हम तो ऊँट पर से ही सलाह मशवरा करेंगे। तो दूसरा प्रश्न शुरु हो गया, सलाह मशवरा तो गया एक तरफ , अब ये हुआ कि ऊँट के साथ इन्हें अन्दर कैसे ले जायें। दूसरी ही Problem (समस्या) शुरु हो गई। याने जो Advisor General जो थे वो ऊँट पर ही जा रहे हैं। अब इन ऊँट वालों का क्या किया जाए ? अब दूसरी लपेटन शुरु हुई। कहा कि अच्छा अगर ऊँट वाले आ रहे हैं, तो ठीक है, ऐसा करो– कि प्रश्न तो ये था कि इनको अन्दर कैसे लाया जाये। तब ये हुआ कि अच्छा यह है कि इतना बड़ा भारी जो दरवाजा बना हुआ है उसको गिरा दें। इसके अन्दर से वो अन्दर आयेंगे। जब तक महाशय अन्दर गए तो जो प्रश्न थे वो तो एक तरफ रह गए, इतना ही एक प्रश्न खड़ा हो गया कि इन्होंने ही सब चीज़ गिरा फिराकर रख दी।

इस तर हमारा Planning (योजना बनाना) होता है, इस तरह का हमारा सोच विचार है। तो जो Basic Problem (बुनियादी समस्या) है उस Problem की ओर तो चित्त नहीं बाकी दुनिया भर की। क्या Basic Problem है हमारी ? क्या Basic Problem है ?

Basic Problem एक ही है कि हमने अपने को जाना नहीं। हम जानते ही नहीं कि हम संसार में क्यों आये हैं– पहला। और दूसरा यह कि उस को हमें जानना चाहिए। उसे किस तरह से जाना ज़ाए– ये ही तो हमारी Basic Problem है। और इसके लिए हमने क्या किया ? सूर्य पर गए, चन्द्रमा पर गए, इधर गए, उधर गए। और पाया क्या ? ये ही जाना कि आप चीज़ क्या हैं ? आप हैं क्या? इसी को नहीं जाना बाकी दुनिया भर की चीज़ आप जानते रहिये। जैसे कि वो जो आदमी को बुलाया था सलाह मशवरा करने वाला, उसने आकर सब तहस–नहस कर दिया। उसी तरह से हमारा सारा विचार हमें तहस–नहस सुबह से शाम तक करवा रहा है और आज अब इस दशा में इन्सान आ गया है कि जब जब उसकी ओर मेरी नज़र उठती है तो मैं देखती हूँ , पहले जमाने में इतने ज़्यादा सोच विचार का धंधा नहीं चलता था। पहले लोग शान्त थे, हर चीज़ सोचते नहीं थे। बहुत सी चीज़े accept (मान लेना) कर लेते थे। बहुत सी चीज़ों के साथ–जैसे सामने आ जाये, चलो भई ठीक है ऐसे ही। आजकल ये है, सोचना विचारना। तो क्या वो ऐसे जुट गए हैं सोचने विचारने में कि एक मिनट भी अपना विचार नहीं रोक पाते। उनका विचार एक क्षण भी नहीं रुक पाता। ऐसा लगता है जैसे कि उनके अन्दर से विचार के दो सींघ निकलते चले आ रहे हैं बाहर (मुझको दिखाई देते हैं)..... अब एक मिनट भी उनसे कहें कि विचार रोकें, तो विचार रोक नहीं पाते, ये उनकी दशा है। माने ये कि ये बह गए विचारों के अन्दर, विचारों ने इनको हावी कर दिया। जितने बाहर के लोग हैं जितना पढ़ा–लिखा,

सोचा–समझा जिनको आप समझते हैं, वो आपके अन्दर हो गए हैं और आप हो गए हैं बाहर आपको खोजने से मिलते ही नहीं।

अति सोचने से भी स्वाधिष्ठान चक्र खराब हो जाता है । अब आपको कोई कहेगा कि माँ ये कैसे हो सकता है, बगैर सोचे कैसे हो सकता है। भई पहले से क्या सोचते हैं ये ही आज तक समझ में नहीं आया कि आप पहले ही से क्या सोचते हैं। अगर पहले ही सोचकर काम होता तो उस तरफ जाने की जरूरत ही क्या है ?

समझ लीजिए हमें गांधी–भवन जाना है अगर हमें गांधी–भवन आने का है तो हम चल दिये। रास्ते में पूछ लिया भई कहां जाना है, और यहाँ (गांधी–भवन) आ गए। अब पहले से हम सोचने लग गए कि हो सकता है अगर गांधी–भवन जाना है तो इधर से जाएं ,क्या करें ? फिर ऐसा करते हैं इस तरफ से चलेंगे तो कहते कहते किसी ने कहा कि तुम उस तरफ से उतरो, तो अच्छा रहेगा। भई आप चल पड़ो, चार आदमियों से पूछ लो रास्ते में और पहुँच जायेंगे। पहले ही आपने एक घन्टा देर लगा दी पता लगाने में कि गांधी–भवन कैसे पहुँचना है । अब पता हुआ कि आप वापस आपनी मंजिल पर आ गए, पहुँचे नहीं। इसी एक चक्कर में आप घूम गए और फिर वापस। और अगर आप जानते भी नहीं जानना है अभी हमें। हमें अभी देखना है, इस चीज़ पर आदमी विचार करता है पर अभी हमने जाना नहीं है वह सोचता क्या है, अभी तो हमें देखना है। देखें आगे होता क्या है। आगे चलें देखें क्या होता है ? जब आदमी अपनी बुद्धि में इस तरह खुला दिमाग रखता है वो सही मंजिल पर पहुँच सकता है। और जो आदमी पहले से ही Preconditioned mind है उसका, पहले से ही उसने सब सोच लिया कि भगवान का मतलब ये होता है और कुण्डलिनी का मतलब यह होता है और कुण्डलिनी का मतलब यह होता है। बहुत से लोग तो यह कहते हैं कि कुण्डलिनी पेट में होती है। मैंने कहा मैंने तो नहीं देखी। अगर कोई आकर मेरा माथा खाये कि आपका हृदय जो है यहाँ पर होता है तो उसे क्या कहा जाये। होता नहीं है, होता जहाँ है वही है। कम से कम आप देखिये तो सही वहाँ है या कहाँ है। इस तरह से जिद आदमी बना लेता है और जो कुछ किताबों में लिखी हुई चीजें हैं वो कोई last word (आखिरी शब्द) तो है नहीं, कि भई आखिरी तत्व तो है नहीं जिसके आगे कोई तत्व नहीं। अगर ये होता तो आप संशोधन किस चीज़ का करोगे।

तो मनुष्य की बुद्धि में संशोधन होना चाहिए, थोड़ा दिमाग होना चाहिए। Preconceived idea नहीं होना चाहिए। वो Open minded (खुले–दिमाग वाला) होना चाहिए। और खुले–दिमाग से जब आप देखेंगे तो आप जो सत्य है उसको फौरन पकड़ लेंगे। बजाय इसके कि हाँ, किसी ने कहा भई कि हमने किसी से कहा कि आप वहाँ जाइयेगा तो वहाँ आपको घंटाघर दिखेगा। ठीक है। हमने घंटाघर देखा था, वही घंटाघर तो उन्होंने कहा हो सकता है कि आप किसी और घंटाघर पहुँचें। Preconceived idea जो है, उससे आदमी इतना conditioned हो जाता है कि उसको समझाना मुश्किल हो जाता है कि भई आगे जो सत्य है वो सामने प्रकाशित होने वाला है, उसे आप स्वीकारें। क्योंकि उसकी बुद्धि इतनी high-class (उच्च श्रेणी) की हो जाती है कि लोग उनसे बात करने में भी जब तक आप 5 Year plan (पंच वर्षीय योजना) की बात न करे तब तक आप किसी चीज़ पर बात नहीं कर सकते। इसलिये मनुष्य को

अपना विचार जो है ऐसा रखे–कि देखा जाएगा। जो सामने होगा, वही होगा, वही होना है, चलिए जैसा हो, देखेंगे। कम से कम सहजयोग के लिए ऐसा ही विचार रखना चाहिए। आप अगर पहले ही से बहुत पढ़ लिखकर आए हैं तो आप मुझसे ऐसे सवाल पूछियेगा जिसका कि कोई उत्तर नहीं पायेंगे। मुझसे लोगों ने ऐसे ऐसे सवाल पूछे हैं कि मुझे कभी बड़ा आश्चर्य लगता है। इसलिए मुझे आपसे यह कहना है कि पहले आप अपने मन से कहें या बुद्धि से कहें, कि इस वक्त आप जरा शान्त हो जाइये और अब जरा आप इस चीज़ को पा लीजिए। क्योंकि चक्रों का खराब करना बहुत आसान है, उनका ठीक करना बहुत मुश्किल।

स्वाधिष्ठान चक्र के खराब हो जाने से अनेक बीमारियाँ होती हैं। एक बात अच्छी है कि बीमारी हो जाती है। अगर बीमारी न हो तो आदमी अपने को कभी न ठीक करे। क्योंकि बीमारी के सिवा लोग समझ ही नहीं पाते हैं कि और भी कोई चीज़ अन्दर खराब है। वो तो सिर्फ बीमारी समझता है। अधिकतर लोग तो सिर्फ बीमारियाँ ठीक करने आते थे। अब उनको समझ में आया है कि और भी अशुद्धियां, खराबी हो गई हैं जिन्हें ठीक करना है। लेकिन पहले तो सिर्फ बीमारी ठीक कराने आते थे।

अब सबसे पहले बीमारी, जो आदमी बहुत Planning करता है, उसे कौन कौन–सी होती है ? उसको सारी पेट की बीमारियां–जैसे liver (जिगर) खराब, liver जरूर खराब होता है। क्योंकि liver जो है वो सारे poisons (विषों) को अपने शरीर से बाहर निकालता है। लेकिन जो आदमी जरूरत से ज्यादा सोचता है वो बेचारे स्वाधिष्ठान चक्र को इतना थका देता है कि वो liver को देखता ही नहीं और liver पनप सकता ही नहीं। उसकी जितनी भी चेतना है, जो भी उसकी awareness (अवेअरनेस) है वो सारी इसमें लगी रहती है कि वो किसी तरह जल्दी–जल्दी brain cells बनाए और brain (मस्तिष्क) को काबू में रखे, brain को तो सप्लाई (Supply) करे। तो सारी emergency (आपात स्थिति) brain में आ जाती है और उसके लिवर (liver) जो है बेकार है liver की तरफ चित्त नहीं जाता है और liver खराब हो जाता है। liver खराब होने के बाद जब उस आदमी को cirrhosis हो जाये या liver cancer हो तभी डाक्टर लोगों को पता होता है और वो इतना बता सकते हैं scientifically (वैज्ञानिक रूप से) कि आप इतने दिन में मर जायेंगे। मेरे पास तो ऐसे ही लोग आते हैं जो certificate (प्रमाण–पत्र) लेकर आते हैं कि माँ हमको तो बता दिया है कि आप एक महीने में चल बसेंगे। बहरहाल यह हो गया कि वो ठीक हो गए हमारे पास आने पर। दरअसल अब यह आपका स्वाधिष्ठान चक्र खराब है और वो ठीक होने पर आपकी बीमारी ठीक हो जायेगी।

उससे दूसरी जो खराब बीमारी होती है वो है Diabetes (मधुमेह) क्योंकि यह ही एक चक्र है जो सबको Supply करता है। तो आपके Pancreas out of gear (खराब) हो गए और आपको diabetes हो गई और लोग कहते हैं कि diabetes uncurable (लाइलाज) है। बिल्कुल ही uncurable नहीं है क्योंकि आपने ही बीमारी ली और आप ही इसे ठीक कर सकते हैं। अब diabetes की बीमारी आपको अगर हो जाये तो लोग कहते हैं कि साहब इसमें Sugar जायेगा, ऐसा होता है वैसा होता है। पर क्या आपने कभी सोचा है कि ऐसा भी हो सकता है कि हमारे liver (जिगर) ने extreme line (पराकाष्ठा) ली है तो balance देने के लिए हमें यह बीमारी शुरु हुई है।

यह balancing बीमारी है जिससे आदमी समझ ले कि हमने बड़े imbalance से काम किया है। बहुत ज्यादा जब आदमी सोचता है, तो diabetes की बीमारी होती है। जो लोग सोचते ज्यादा नहीं हैं जैसे villagers (गाँव वाले) वगैरह हैं, उनको कभी diabetes नहीं होती। वो हर समय carbohydrates खाते रहते हैं। वो तो एक cup में एक मन चीनी भी डालें तो कहेंगे, फीका है। बहुत मीठा खाते हैं तो उनको तो हमेशा फीकी ही लगती हैं खासकर मेरठ में अगर आप जायें तो आप लोगों को अगर चाय चाहिए तो ऐसा लगेगा कि उन्होंने चीनी घोलकर पहले, फिर चाय बनाई है। ऐसा नहीं लगेगा कि चाय बनाई है। वो तो चीनी ही बनाते हैं। तो इस तरह के लोगों को तो कभी diabetes नहीं होती। कभी आप देखियेगा, देहात के लोगों को diabetes नहीं होती, शहर के लोगों को ही होती है क्योंकि बहुत सोचते हैं। और सोच सोच के क्या बनाया ? एटम बम (Atom bomb) और क्या बनाया ? और यह बनाकर भूत ऊपर रख दिया और नीचे सब डर रहे हैं। अब एटम बम बनाने से इतना जरूर फायदा हो गया है कि सब सहम गए। इतनी बेवकूफी की, उसका यह फल निकल आया। अब इससे ये जो भूत ऊपर बैठ गए हैं तो कहीं बटन दबा देंगे तो हम सब खत्म हो जायेंगे। तो यह बहुत अक्लमन्दी करके निकाला है जो भी उन्होंने अन्वेषण किया उस अन्वेषण में उन्होंने ऐसा इन्तजाम कर दिया है कि एक क्षण में सारी दुनिया साफ की जा सकती है। अब सब सहम करके बैठे हैं कि साहब ये क्या हम कर गए। यह तो पता नहीं था हमें कि खोज खोज के अपने ऊपर बारूद लगा दी हमने। अपने ही सर पर बारूद रख करके अब इतना जीना मुश्किल हो गया है। अब सब Shocked (घबराई) हालत में हैं और अब बड़ी बड़ी किताबें निकल रही हैं कि अब तो थोड़े दिन में दुनिया खत्म हो जाने वाली है। पूरा इन्तजाम इन्होंने कर लिया । सब Anti God Activities (भगवान के खिलाफ काम) हैं। सोच समझ कर जो चीज़ की कौन–सा आपने विशेष नाम किया। मेरी तो आज तक समझ में नहीं आया। अपना सोच जरा सा कम करिये। और विचार भी थोड़ा कम करिये लेकिन कहने से भी तो होगा नहीं। अगर कहूँ कि विचार नहीं करो, विचार नहीं करो, तो नहीं होगा।

मैं कहूँ कि अपना जरा Speedometer कम करो। Speedometer के बारे में मैंने लोगों से बताया और मै आपसे भी बताती हूँ। हमारा Spleen (तिल्ली) जो है वो Speedometer है। और जब खाना खाते हैं तो कोई न कोई ऐसी बात सोचने लग जायें, मतलब बड़े विचारक लोग हैं न ! बड़े काबिल, तो काबलियत अपनी झाड़ने के लिए जब खाना खाते हैं तभी उसी समय नौ बजे आयेगी news (समाचार), जब आप खाना खा रहे हैं। तब आपको इत्मीनान से खाना खाना चाहिए। आपकी बीवी आपको पंखा झल रही है, आराम से बैठकर आप खाना खा रहे हैं। उस समय news (समाचार) आयेगी कि फ़लानी जगह दुर्घटना हो गई। आपका खाना गया काम से। लगे आप सोचने उसी बात के लिए। सवेरे जल्दी भागना है क्योंकि Office (दफ्तर) नौ बजे पहुँचना ही चाहिए। तो एक हाथ में आपका बक्सा, एक हाथ में आपकी छतरी, और आपके मुँह में कुछ ठूँसा जा रहा है। आप इस हालत में भागे जा रहे हैं बाहर। पीछे दूध लेकर के कोई और दौड़ रहे हैं। ये तो आपके खाने की व्यवस्था है।

इसमें आपका जो Speedometer (गतिमापक) है, जो आपका spleen है, वो Crazy हो जाता है, पागल हो जाता है और इसी से

आपको Blood Cancer (रक्त का कैंसर) की बीमारी हो जाती है। अब हम लोगों ने कितने ही Blood Cancer ठीक किए हैं जिनको कि Doctors (डॉक्टरों) ने certificate (सर्टीफिकेट) दे दिये थे कि आप एक महीने में मर जायेंगे। इसका मतलब नहीं है कि आप दुनिया भर के Blood Cancer के केस मेरे पास ले आएं। मतलब ये है कि आप लोग तो यहाँ आए हैं अपने speedometer लेकर लेकिन हम क्यों इससे ही बँध जायें। इसका मतलब ये नहीं कि आप लेट लतीफ हों, ये भी नहीं है।

इसका सबसे बड़ा मतलब ये है कि आप उतना ही करिये जितना आपके बस का है। आप इन्सान हैं। मशीन भी जितना नहीं कर सकती उससे ज्यादा आप क्यों करना चाहते हैं और करके भी आपने क्या किया–वही Atom bomb (परमाणु बम या एटम बम)।

क्या किया है आपने ? मैं तो इन्सान से यह पूछना चाहती हूँ कि उन्होंने सीखा है : आपस में लड़ना कैसे चाहिए, झगड़ा कैसे करना चाहिए, ग्रुप बाजी कैसी करनी चाहिए, किस तरह से Murder (कत्ल) करना चाहिए। दूसरे देश के लोगों को War (युद्ध) के नाम पर किस तरह खत्म करना चाहिए। ये सब इन्तजाम आपने कर लिया है। और क्या किया है? कौन सा अच्छा काम आप लोगों ने आज तक किया है ? कहने लगे कि साहब हमने social work (समाज कार्य) किया है। यह social work तो आपके लिए इसलिए तैयार हो गया क्योंकि आप बेवकूफ हैं। अगर पहले से आपने बेवकूफी नहीं की होती और आपने लोगों को इतना सताया नहीं होता, ऐसे–ऐसे Customs (रीति–रिवाज़) नहीं बनाते जिनसे सब को तकलीफ हो रही है, तो कभी न होता ऐसा, यानि कभी आपको social work की जरूरत ही नहीं पड़ती। मतलब है कि जो लोग धर्म में खड़े हैं जरूरत ही नहीं उनको धर्म सिखाने की, कि आप अधर्म मत करो। जो धर्म में ही खड़े हैं उनको क्या जरूरत है ?

यह चक्र (भवसागर या Void) हमारा धर्म बताता है। हमारा धर्म मानव धर्म है। और मानव धर्म में दस हमारे अन्दर गुण होना जरूरी है। यदि हम में ये गुण नहीं हैं तो हम मानव नहीं हैं, या तो हम जानवर हैं या शैतान हैं। ये दस गुण हमारे अन्दर जो हैं वो हमारे इस चक्र के चारों तरफ से बँधे हुए हैं और बीच में जो हमारे नाभि चक्र हैं उसमें ये हमारे दस धर्मों की पंखुड़ियां हैं। इन धर्मों की ओर हमारा विशेष ध्यान है।

अब धर्मों का मतलब ईसाई, मुसलमान, हिन्दु या आपस में सर फोड़ना नहीं है। हमको तो धर्म का मतलब यह मालूम है कि इधर ये एक निकला, उधर से दूसरा निकला और लड़ाई हो रही है। अरे भाई क्या हो गया ? धार्मिक झगड़ा हो गया। धार्मिक झगड़ा भी क्या हो सकता है, ये भी हमारे जैसे बेअक्ल लोगों की समझ में नहीं आ सकता। जो कि धर्म जो है जिसकी धारणा होती है तो मनुष्य जो है तो ऐसी कोई चीज़ बन जाता है ऐसा उसका व्यक्तित्व कुछ ऐसा हो जाता है जिससे वो अपनी सार्वजनिकता कहिये या जिसको कि Collectivity (सामूहिकता) कहते हैं उसको प्राप्त हो जाता है, वो "वह" हो जाता है। वो Collective हो जाता है। वो झगड़ा कैसे करेगा ? क्या आपकी अपनी उँगलियों में उँगलियों से झगड़ा होता है, क्या ये एक दूसरे को मारती हैं? आप उस तरह हो जाते हैं, आप में Collectivity आ जाती है। जब यह धारणा मनुष्य में हो जाती है–यह धारणा जानवर में नहीं होती। यह धारणा जब मनुष्य में हो जाती है, जब धर्म की धारणा होने के बाद यह धर्म

हम में जागृत हो जाते हैं, उस समय कुण्डलिनी जागृत होकर के चक्रों को भेदती हुई ऊपर चली जाती है, तब मनुष्य के अन्दर में सामूहिक चेतना जागृत होती है, जागरूक हो जाती है।

इसलिए मैं कह रही हूँ–यह lecture देने की बात नहीं है, यह अपने आप ही घटना हो जाती है। खुद ही महसूस करने लग जाते हैं कि आपके अन्दर क्या दोष हैं और दूसरे के अन्दर क्या दोष है। दोष बाह्य दोष–नहीं कि साहब वो साहब थे और वो लाल रंग का कपड़ा ही पहनते थे या वे साहब थे उन्होंने ऐसा कर दिया या वो उस Political लीडर (राजनीतिक नेता) के साथ थे और उन्होंने दल बदल दिया, यह चक्रों में, सूक्ष्म में आपके तत्व में कौन सा दोष है यह आप समझ जाते हैं और आपके दोष, तत्व में खराबी का पता पार होने के बाद, आपको चल जाता है। इतना ही नहीं, सहजयोग में गहरे उतरकर के जब आप इसकी पूरी विद्या को सीख लेते हैं–इस "निर्मल विद्या" को सीख लेते हैं, या इसको कहना चाहिए कि अपने Master हो जाते हैं, अतिमानव संत हो जाते हैं आप में धर्म जागृत हो जाता है, आप धर्मातीत हो जाते हैं। आपकी चेतना में नया आयाम (New dimension) आ जाता है, आप चैतन्य लहरियाँ (Vibrations) महसूस करने लगते हैं, आपकी शारीरिक, मानसिक, समस्याएं आपसे दूर हो जाती हैं। ..... इसलिए हमें समझ लेना चाहिए कि कम से कम हमारी तन्दरुस्ती जो गुरु न ठीक रख सके, तन्दरुस्ती को जो सम्भाल न सके ऐसे गुरु के पास जाने की जरूरत नहीं है।

सहजयोग में इस दृष्टि से आप पारंगत हो जाते हैं किस तरह हमारी तन्दरुस्ती ठीक रहनी चाहिए। किस तरह से हमारे चक्रों में दोष है, उसे ठीक करना चाहिए, कम से कम। क्योंकि आप स्वयं डाक्टर हो जाते हैं, आप ही दवा हो जाते हैं और आप ही diagnosis (निदान) करते हैं। मनुष्य ही सब कुछ हो जाता है, मनुष्य में ही सब कुछ है। जो कुछ भी बाह्य में आप देखते हैं वो सभी भीतर है। जैसे आप यहाँ बैठे हैं और आपको पता लगाना है कि आपके किसी सम्बंधी की तबीयत कैसी है। आप टेलीफोन कीजिए, पैसा खर्च करिये, ऐसी कोई जरूरत नहीं। आप खुद ही देखिये, कैसी तबीयत है आपको स्वयं पता चल जाएगा कि कौन से चक्र में पकड़ आ रही है। अगर left (बायीं तरफ) में पकड़ आ रही है, तो इसका मतलब है कि उनके मन पर pressure (दबाव) है और अगर Right (दायीं तरफ) में आ रही है तो कुछ शारीरिक है। और उसके बाद चक्रों पर पता लगा लीजिये कि कौन से चक्र में बाधा है। जो Code है उनका Decoding हो गया है और अगर आप समझ लें तो आप फौरन बता सकते हैं कि इस वक्त उनकी क्या हालत है। यहां बैठे बैठे आप उनको बंधन दें और उनको Vibrations दें तो वहां वो ठीक हो जायेंगे। यह सब आप कर सकते हैं। कब, जब आप इस शास्त्र को सीख लेते हैं।

ये नहीं कि आप पार हो गए कहने लगे, "माताजी ने हमें पार कर दिया। फोटो ले जा रहे हैं क्योंकि हम पार हो गए।" इसके बाद एक साल बाद मिले, कहने लगे, "माता जी क्या बताएं हमारे तो Vibrations अच्छे नहीं हैं।"

आज जो पंत जी ने कहा, वो बिल्कुल सही बात है। लोग यहाँ आते हैं, पार हो जाते हैं, फिर खो जाते हैं। चलती का नाम गाड़ी। माताजी आये, पार हो गये, काम खत्म। फिर आए, जैसे थे फिर वही शुरु हो गया। "माता जी हमने पकड़ लिया, ऐसा हो गया, वैसा हो गया।"

यह गहन गम्भीर बात है, यह frivolous

(हंसी–मजाक) बात नहीं है। इसलिए मैं आपसे कहूँगी कि भारतवर्ष में हर चीज़ आसान है, हर चीज़ मिल सकती है। यह ऐसी योग–भूमि है। यहाँ इतने बड़े बड़े अवतार हो गए, इतनी बड़ी बड़ी यहाँ चीज़ें हो गई हैं। यहाँ का सारा प्रान्त जो है vibrated है। यह विशेष ही भूमि है, इसलिए यहाँ पार भी लोग खट से हो जाते हैं। बड़े ही जल्दी आप पार हो जाते हैं। जैसे कि जितने भी Foreigners (विदेशी) आए हैं यहाँ बैठे हैं, एक एक आदमी पर तीन तीन महीने हाथ तोड़े हैं मैंने और आप यहाँ बैठे हैं थोड़ी देर में देखियेगा Vibrations आ जायेंगे, हाथों में। वैसे लेकिन कल की मीटिंग में आप नहीं आयेंगे, वो भी बड़ा मुश्किल हो जाएगा। "क्या बात थी ?" "माताजी वो ऐसा था कि मैंने कहीं जाना था," "वो तो Religious duty (धार्मिक कर्तव्य) हो गई न।" "कैसे मना करता, मैं चला गया।"

उसकी गहराई, उसकी गम्भीरता, उसकी विशेषता, उसकी महानता, कुछ हमारी समझ में नहीं आती है। ये लोग जो तीन तीन महीने मेरे हाथ तुड़वाते हैं, ये लोग समझते हैं। तो बजाय इसके कि आप लोग जमें ये लोग जम रहे हैं और आप उखड़े–उखड़े घूम रहे हैं। हिन्दुस्तानी सहज योगियों का वाकई ये हाल है कि उखड़े उखड़े घूमते हैं। उनमें तो गहनता नहीं आती। ज्यादा से ज्यादा यह होगा कि चलिए मेरे पेट में दर्द है, वो ठीक कर दीजिये। मेरे लड़के की शादी करा दीजिये या और कुछ नहीं तो जरा बढ़कर के कान में यह कह देंगे कि माँ मेरा आज्ञा चक्र पकड़ा हुआ है। फूल लेकर चले आए और कान में कह दिया, मेरा आज्ञा चक्र पकड़ा हुआ है, उसे ठीक कर दीजिये। अरे भई क्यों पकड़ा हुआ है, कैसे हुआ ? कुछ उस पर study (अध्ययन) नहीं। मैं तो नहीं–मेरे पास time (समय) नहीं।" एक छोटी सी चीज़ है कि ध्यान के बाद, आप थोड़ी देर अपने पैर पानी में रखें और अपने vibrations पायें। जो कुछ खराब है, उनको निकाल दें। सफाई जैसे हो जाये। जैसे आप नहाते हैं, इस तरह से रोज आप नहाईये। हम लोग अगर कोई एक दिन आदमी न नहाये तो सोचते हैं, बड़े ही गन्दे लोग हैं, नहाते नहीं। हिन्दुस्तानियों का तो यह हाल है कि उनको कोई कह दे कि नहीं नहायेंगे तो जैसे उनको तो जेल हो जाये। लंदन में अगर आप सवेरे नहायें और इसके बाद बाहर निकल जायें तो आप को बहुत बीमारियाँ हो सकती है। खास करके कैंसर हो जाता है Lungs (फेफड़ों) का। और मैंने इतने हिन्दुस्तानियों से कहा तो उन्होंने छोड़ दिया सहजयोग और फिर कैंसर से मर गए।

लेकिन अगर उनसे कहा जाये कि हमारी आत्मा का भी स्नान होना चाहिए, हमारा जो भी आत्मजीवन है, उसका भी स्नान होना चाहिए, उधर किसी का चित्त नहीं रहता, उसकी महानता, उसकी गम्भीरता में।

इसलिए, जो कि आपने एक किस्सा सुना होगा। एक इम्तहान में ज्यादातर Mathematics (गणित) में सवाल आते थे जो मुझे अब समझ में आ रहे हैं। तब तो समझ में नहीं आते थे। जैसे कहते थे कि एक A आया, उसने काम किया 1/4 वां दूसरा आया उसने 1/16 वां किया, फिर तीसरा आया उसने इतना किया, फिर चले गए, काम कब खत्म होगा? होगा ही नहीं, जब इतने भगोड़ों को आप लगाइयेगा। ..... लेकिन मेरी नसीब में भी ऐसे बहुत आए हैं। मेरी यह समझ में नहीं आया कि सहजयोग का काम पूरा क्यों नहीं हो रहा है। होगा कैसे, जब भगोड़ों से पाला पड़ा है तो होगा कैसे ? अब जमने वाले ढूँढे जायें, जो जमें। हम देने

को तैयार है, सब शक्ति देने को तैयार हैं, सब बताने को तैयार हैं, तब हो ठीक मामला। लेकिन जमने वाला ही मुश्किल है, ऐसे सवालात जहाँ पूछे जाते हैं। यही समझ लीजिये कि हमारे हित में जो है, उसे गम्भीरता से पकड़ना है। जिसको पकड़ना चाहिए उसको नहीं पकड़ा। पहले तो समझ में आता नहीं था कि कोई चीज़ ऐसी है ही नहीं पकड़ने लायक कि जिसको पकड़ा जाये।

लेकिन जो चीज़ जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण है जो आपको समर्थ बनाती है यानि आपके अर्थ के बराबर आपको बना देती है। जिसके बगैर आपका जीवन पूरी तरह से व्यर्थ और निरर्थक है, उस चीज़ को भी नहीं पकड़ते हैं तो मैंने कहा कमाल हो गया, बिल्कुल बेकार लोग हैं।

इतनी ज्यादा समस्या है, इतना उथलापन है और एक तरह से कोई भी चीज़ का महत्व नहीं करते, हर चीज़ का मजाक मजाक बना लेना। अपना भी तो मजाक बन रहा है। जो आप सोचते हैं कि सबका मजाक बना रहे हैं, आपका भी मजाक बन रहा है और अपने को भी ऐसी गड़बड़ में आप फँसा रहे हैं कि उससे निकलना बहुत मुश्किल है। बहुत ही मुश्किल।

सहजयोग ऐसी चीज़ है जो आपको पाना है। यहाँ देने का कुछ नहीं सिर्फ पाने का है। लेकिन लोगों को यह समझ में नहीं आता कि अगर कोई देता है तो उसका महत्व समझाना चाहिए। हाँ, अगर मैं आपसे कहूँ कि साहब कल से आप यहाँ आयेंगे तो सौ रुपये का टिकट लगायेंगे तो देखिये यह सब भर जाएगा। यहाँ बड़ी पेटी लगाइये "सेवा के लिए"–लम्बी पेटी तो भर जायेगी और लोग बढ जायेंगे। यहाँ आयेंगे तो मैं कहूँगी कि कुछ नहीं, आपको नाम दूँगी–कहेंगे, "वाह ! हमें तो नाम मिल गया–नाम मिल गया।" अगर आप किसी को बेवकूफ बनायेंगे तो लाखों मिल जाएंगे। गालिब ने कहा था, "बेवकूफों की कमी नहीं गालिब, बिन ढूँढे हजार मिलते हैं।" उधार मिलते हैं, यह हालत है और अगर आप देखिये जो गुरु लोग हैं, जो रुपया पैसा ले रहे हैं और जो आज बढ़े हुए है, उन्होंने कैसी–कैसी बेवकूफियाँ फैलाई हैं और उन बेवकूफियों में कैसे लोग आ रहे हैं। एक गुरु सा० यहां दिल्ली आये थे तो सारी दिल्ली बन्द हो गई थी। लोग पागल हो गए थे। अब उनके बारे में किताबों में निकल रहा है, अखबारों में निकल रहा है, ये निकल रहा है, वो निकल रहा है, अब धीरे धीरे उनका सब निकल रहा है। लेकिन ये जमाना था कि दिल्ली में रात को कोई चल फिर नहीं सकता था, ऐसे थे ये गुरू महाराज। अजीब अजीब तमाशे हैं, मैं आपको क्या बताऊँ।

मेरे जैसे अजनबी के लिए तो यह है कि इनको कैसे बताया जाय इसका महात्म। इतना महान् है ये, चीज़ बहुत भारी है। जैसे कि किसी इन्सान ने कभी हीरा देखा नहीं, उसकी कीमत कभी आँकी नहीं, ऐसे बिल्कुल देहाती लोगों को (नहीं देहाती तो बहुत समझदार होते हैं, मैं किस को कहूँ) उनके पास आप ले जाकर उसे दिखायें। समझ लीजिए कि उरंग–उटान है, उसके सामने आप हीरा रख दीजिए। वो एक चपेड़ मारेगा कि आप देखते ही रह जाइये। उसी तरह की हालत कभी कभी हो जाती है।

यही हीरा ही नहीं, यही पाने का है, यही सब कुछ है, इसी को पाइये, यही कुछ लेने का है और कुछ भी नहीं है। यह बात जरूर है कि जो मैं बातें कहती हूँ, हो सकता है 60 फीसदी बातें किताबों में नहीं मिलतीं। उसका आपको साक्षात्कार करना है। आपको आत्म–साक्षात्कार करना है।

उसको लेकर के कोई साहब झगड़ा खड़ा कर दिया। कहने लगे कि आपने कहा कि यह बुद्ध का स्थान है, यह महावीर का है, यह हम कैसे जानेंगे ? मैंने कहा, है या नहीं आप जान जायेंगे, पहले आप पार हो जाईये। अगर आप जान नहीं सकते तो यह आपका दुर्भाग्य है। ये तो मुझसे ऐसे पूछते हैं कि जैसे मैं पार्लियामेंट की मेम्बर ही हूँ। मैंने कहा कि जो मैं कह रही हूँ उसकी सत्यता मैं आपको तब दूँगी जब आप इसके काबिल हो जायेंगे। पहले आप पा लीजिये। जहाँ बुद्ध और महावीर हैं, वो है या नहीं ये देखने की पहले आँखें तो आपके अन्दर आ जायें। पहले ही क्या मुझसे सवाल पूछ रहे हैं? क्या आप University (विश्व–विद्यालय) में जाकर Vice Chancellor (उप–कुलपति) साहब से पहले ही पूछते है कि क्या कार्बन डाई ऑक्साइड में कार्बन व ऑक्सीजन है, साबित कीजिए। वह कहेंगे, आप चलिए, आप का Admission (दाखिला) खारिज।

यह सीखने की जगह है, यह जानने की जगह है, यह पाने की जगह है, यहां नम्रता पूर्वक आया जाता है। सब लोग पाते हैं और गहरे उतरते हैं। और समझते हैं और तभी वो पनप कर बड़े हो सकते हैं जबकि वह उसको पायें। इस चीज़ को हम रोज़–मर्रा के जीवन में किस तरह, किस तरह समझते हैं ? गंगाजी बह रही है आप अपनी गगरी ले जाइये। गंगाजी, जितनी बड़ी गगरी होगी, उतना ही उसमें पानी भर देंगी। उस वक्त क्या आप जाकर गंगाजी से प्रश्न पूछते हैं ? उसी प्रकार यह गंगा बह रही है, समय आ गया है, वक्त आ गया है इस वक्त आपका साक्षात्कार होने का समय है। और इस देश में यह बहुत जोरों में है। शहरों में जरा देर से होता है पर गाँवों में बहुत जोरों मे हो रहा है। बहुत जोरों में।

हम अभी एक गाँव में गए थे। वहां 6,000 लोग आये थे, 6,000 लोग। और वहाँ हम खड़े हो गए, तो कोई हमारे सामने कोई वहाँ ऐसा बहुत सुन्दर कुछ (हॉल) नहीं था। कुछ मन्दिर पर चढ़े थे, कुछ इधर उधर खड़े थे और सारे के सारे पार हो गए और जम गए वो। और वहां Centre (सहजयोग केन्द्र) भी बन गया और चलने लगी बात आगे।

कहीं ऐसा न हो जाये कि सारे बाहर जो हैं वो भगवान की छलनी में से छन कर नीचे गिर जायें और बाकी लोग रह जायें। इसलिए अपने अपने अस्तित्व को, अपने अपने गरिमापन को पाइये। उसको जानिये और उसमें समाइये। यह समझने की बात है। आज थोड़ा सा Introduction (परिचय) आपको बताया है, कल मैं इसको विशेष रूप से और पूरी तरह से समझाकर आपको बताऊँगी।

परमात्मा आपको धन्य करें

(निर्मला योग)

तत्व की बात–२

कल मैंने आपसे कहा था कि,.....

आज आपको तत्व की बात बतायेंगे। जब हम एक पेड़ की ओर देखें और उसका उन्नतिगत होना, उसका बढ़ना देखें, तो यह समझ में आता है कि उसके अन्दर कोई न कोई ऐसी शक्ति प्रवाहित है या प्रभावित है जिसके कारण वो पेड़ बढ़ रहा है और अपनी पूरी स्थिति को पहुँच रहा है। यह शक्ति उसके अन्दर है नहीं तो यह कार्य नहीं हो सकता। लेकिन यह शक्ति उसने कहाँ से पाई ? इसका तत्व मर्म क्या है ? जो चीज बाह्य में दिखाई देती है, जैसे कि पेड़ दिखाई देता है, उसके फल,फूल, पत्ते सब दिखाई देते हैं, ये तो कोई तत्व नहीं। इस तत्व पर तो यह चीज आधारित नहीं। वो चीज कोई न कोई इससे सूक्ष्म है। उस सूक्ष्म को तो हम देख नहीं पाये, उसकी यदि साकार स्थिति होती तो दिख जाता लेकिन वो निराकार स्थिति में है, माने कि उसके अन्दर चलता हुआ पानी है, वो भी उसका तत्व नहीं हुआ, हालांकि वहन कर रहा है। पानी ही उस शक्ति को अपने अन्दर से वहन कर रहा है। याने अगर पानी ही तत्व है तो पत्थर में पानी डालने से, वहां कोई पेड़ तो नहीं निकल आते। तब तत्व में जानना चाहिए कि हर चीज़ का अपना–अपना तत्व है। पानी का अपना तत्व है, पेड़ का अपना तत्व है और पत्थर का भी अपना तत्व है। उसी तरह मानव का भी अपना एक तत्व है, principle (सिद्धांत) है, जिसके बूते पर वो चल रहा है, बड़ा हो रहा है, उससे उसकी उद्देश्य प्राप्ति होती है।

ये तत्व एक हो नहीं सकते। जैसे कि मैंने बताया कि पानी के तत्व से ही अगर, पौधा निकल रहा है तो एक पत्थर से पौधा क्यों नहीं निकलता। अगर बीज/पानी के तत्व से बीज पनप रहा है तो वो धरती माता की शरण क्यों जाता है ? अगर धरती माता की वजह से ही सारा कार्य हो रहा है तो धरती माता की वजह से यह जो पत्थर है वो क्यों नहीं पनपता ? इसका मतलब यह है कि अनेक तत्वों में एक तत्व है, लेकिन तत्व अनेक हैं।

ये सब अनेक तत्व जो हैं वो एक में समाये हैं और यह जो अनेक तत्व हैं यह हमारे अन्दर भी स्थित हैं, अलग अलग चक्रों पर इनका वास है, लेकिन एक ही शरीर में समाये हैं और एक ही ओर इनका कार्य चल रहा है, और एक ही इनका लक्ष्य है और एक ही चीज़ को इनको पाना है। जैसे कि मूलाधार चक्र पर गणेश तत्व है, गणेश जी का तत्व है। गणेश जी के तत्व के कारण हम आप पृथ्वी पर बैठे हुए हैं, ऐसे फैंके नहीं जा रहे। अगर हमारे अन्दर गणेश जी का तत्व नहीं होता तो इस पृथ्वी पर टिक नहीं सकते थे। इतने जोर से यह पृथ्वी घूम रही है, इस पर हम चिपके नहीं रहते। कोई कहेगा कि 'पृथ्वी के अन्दर ही यह गणेश तत्व है माँ ' यह बात भी सही है। पृथ्वी के गणेश तत्व की वजह से ही हम पृथ्वी पर जमे हुए हैं। लेकिन जो पृथ्वी के अन्दर है उसको उसका axis कहते हैं, याने इस लाइन में वो तत्व बसा हुआ है उसको कहते हैं। हालांकि axis कोई है नहीं, कोई ऐसी सलाख axis नहीं है पर मानते हैं कि जो शक्ति है इसके तत्व की वो इस लाइन पर चलती है, उसी के ऊपर होती है उसके बीचोंबीच,सो वो तत्व हमारे अन्दर क्या बनकर रहता है इससे हमें दिशा का भान हो जाता है।

जानवरों में यह तत्व ज्यादा होता है पक्षियों में यह ज्यादा होता है क्योंकि भोले भाले जीव हैं। उनमें छल, कपट, वैराग्य कुछ नहीं, वह विचार नहीं कर सकते। उनमें विचार करने की शक्ति नहीं है और न ही वो आगे का सोच सकते हैं ना ही वो

पीछे का सोचते हैं। जो चीज़ सामने आती है उसी से वो काम लेते हैं। पीछे का बिल्कुल नहीं सोचते। आपको आश्चर्य होगा जब कोई बन्दर, आप देखिये, मर जाये; जब तक वो मरता नहीं तब तक वो हाय तोबा मचायेंगे, जैसे ही वो मर जायेगा वो उसको छोड़ देंगे, भाग जायेंगे, मतलब यहीं खत्म। अब इससे मर गया न, यह तो ऐसा हो गया जैसे, कोई दूसरे पत्थर , अब इससे कोई मतलब नहीं, बिल्कुल बेकार चीज़ है। लेकिन धीरे धीरे उसके अन्दर यह जरूर है कि अनुभव; जैसे आपने शेर को पकड़ने की कोशिश की, दो तीन बार उसको जाल में फंसा लिया, तो फिर वो ताड़ जाता है कि इसमें कोई गड़बड़ है। बहुत कुछ तो भगवान की दी हुई चीज़ है लेकिन कुछ कुछ फिर वो सीख जाता है। आदमियों से भी तो बहुत कुछ सीख लेता है लेकिन उसमें परमात्मा की दी हुई चीज़ बहुत ज़्यादा है। जिससे उसमें स्फूर्ति आती है। जैसे जापान में ऐसे पक्षी हैं, जब वो उड़ने लगते हैं ज़्यादा और भागने लग जाते हैं, तब लोग समझ जाते हैं कि अब जलजला आने वाला है, भूकम्प आने वाला है। क्योंकि इन पक्षियों को गड़गड़ाहट बहुत पहले सुनाई दे जाने लगती है। जानवरों को भी आवाज मनुष्य से बहुत ज़्यादा पहले सुनाई दे जाती है। बहुत सुनने की शक्ति, देखने की शक्ति। अगर कोई चील ऊँचाई से देखे तो वो समझ जाती है कि यह आदमी मरा है या जिन्दा। यह सारी जो आठ इन्द्रियों की शक्तियाँ हैं ये जानवरों में इन्सान से ज़्यादा हैं और उसमें से सबसे बड़ी शक्ति जो उसके पास होती है, जो गणेश तत्व से पाई जाती है वो है दिशा का अनुभव, कौन सी दिशा में जाना चाहिए। मैंने कल आपसे बताया था कि जब पक्षी साईबेरिया से आते हैं तो वो उसी वजह से जानते हैं कि वो उत्तर जा रहे हैं या दक्षिण जा रहे हैं, या पूरब जा रहे हैं या पश्चिम में जा रहे है। पर जैसे–2 गणेश तत्व कम होता जाता है वैसे–2 दिशा का ज्ञान समाप्त होता जाता है। दूसरी तरफ मनुष्य प्राणी में जो आदमी बहुत ज़्यादा सोच–विचार के चलता है, कि मैं ये करूँ या न करूँ, इसमें कितना लाभ होगा, इसमें कितना नुकसान होगा, इसमें रुपया लगाऊँ कि इसमें रुपया लगाऊँ, इस तरह की फालतू बातों में जब अपना चित्त बरबाद कर देता है, उसको दिशा का भान कम हो जाता है। उसको आप एक दिशा में खड़ा कर दीजिए कि आपको उत्तर में जाना है। थोड़ी देर में देखियेगा, वो दक्षिण की ओर चले जा रहे हैं। रास्ते का उसको ज्ञान नहीं रहता। अगर आप उसको कहीं खड़ा कर दीजिये आप उससे पूछिये रात में पूरब, पश्चिम,उत्तर, दक्षिण कैसे पता लगायें, सूरज तो है नहीं। जब आप का चित्त इसी तरह बाहर की ओर ज़्यादा हो जाता है, और या तो आप किसी की चालाकी से पस्त होते हैं या आप किसी की चालाकी से डुबाना चाहते हैं, दोनों ही चीज़ हो सकती हैं। आप या तो भयग्रस्त हैं कि दूसरा आपको चालाकी से खा न डाले और या तो आप किसी के पीछे लगे हैं कि उसे चालाकी से कैसे डुबाया जाए– दोनों हालात में आपकी जो अबोधिता है आपकी जो innocence है वो घटती जाती है। और जब ऐसी गति आ जाती है तो आपको दिशा का आभास नहीं रहता। एक छोटी सी बात बताएं, आप बुरा मत मानिये। मैं आजकल देखती हूँ पहले लड़कियों में ये बात थी लेकिन उनमें भी यह बात नहीं। दिल्ली शहर में ज़्यादा है, कि हर आदमी की ओर नज़र उठाकर देखने लगी हैं। पहले तो मर्द ही देखते थे, अब औरतों ने भी शुरु कर दिया है। अब इसको आप सोचते हैं ये बहुत ही सीधी बात है, इसमें कौन सी ऐसी बात है।

हर आदमी को और जरुरी है ऐसे देखना। लोग कहेंगे इसमें शिष्टाचार की बात माँ कह रही हैं। ये बहुत गहरी बात है। जितना आप देखते हैं, उतना ही चित्त आपका बाहर की ओर जाता है, जितनी आपकी दृष्टि बाहर की ओर जाएगी उतना आपका मूलाधार चक्र खराब होगा। विशेष करके इस तरह की चीज़ों की ओर या बहुत से लोगों की ये आदत होती है कि हर रास्ते में जो चीज़ पड़ती है, हर advertisement पढ़ना चाहिए अगर एक दो चीज़ छूट गई तो पीछे मुड़कर देखेंगे, वो पढ़ना है। या हर चीज़ बाजार में दिख रही है, हर चीज़ उनको देखना ही है। ये कौन सी चीज़ है, कौन सी चीज़ है, कौन सी चीज़ है। आँख का सम्बन्ध हमारे मूलाधार चक्र से बहुत नजदीक का है । पीछे की तरफ में यहाँ पर भी हमारा मूलाधार चक्र है। इसका सम्बन्ध हमारी आँख से बहुत जबरदस्त होता है। इसलिए जो लोग अपनी आँखे बहुत इधर उधर चलाते हैं उन को मैं आगाह कर देना चाहती हूँ कि उनका मूलाधार चक्र बहुत खराब हो जाता है और अजीब–2 तरह की परेशानियाँ उनको उठानी पड़ती हैं। सब से पहले तो बात यह हो जाती है कि ऐसे आदमी का चित्त स्थिर नहीं रह पाता। क्योंकि वो अपनी दिशा भूल गया। इधर–उधर धीरे–धीरे देखना भी दिशा भूल का एक नमूना है। जिस आदमी को अपनी दिशा मालूम है, वो सीधे चला जाता है। दिशा का भूल जाना मनुष्य ही कर सकता है, जानवर नहीं कर सकता। क्योंकि उसको कोई वजह ही नहीं, वो दिशा क्यों भूले ! समझ लीजिये किसी एक जानवर ने किसी दूसरे जानवर को मार कर कहीं डाल दिया, उसे मालूम है उसने उसे कहाँ डाला है, उसको उसकी सूँघ आएगी, उस की समझ में आएगा, वो बराबर अपने मौके पर पहुँच जाएगा। भटक नहीं सकते। अगर आप किसी बिल्ली को घर से निकालना चाहें तो सात मील की दूरी पर उसको ले जाकर छोड़ दें, तो भी शायद वापस चली आएगी। कुत्ते के तो क्या कहने, कुत्ता तो ऐसे सूँघ कर घूमता है कि उसे फौरन पता चल जाता है कि चोर कहाँ गया और कहाँ की चीज़ कहाँ गई। लेकिन मनुष्य के अन्दर तो सूँघने की शक्ति भी बड़ी नष्ट हो जाती है। उसे गंदगी की तो बदबू आने लगती है लेकिन पाप की गंदगी की नहीं आएगी। वो उसे नहीं सूँघ पाता है जो हमारे अन्दर पाप बन कर जी रहा है और जो आदमी है महापापी। उसके साथ हम खड़े हैं। उसको उस की बदबू जरूर आ जाएगी कि यहाँ गन्दा पड़ा है, यहाँ सफाई नहीं है, यह नहीं है, वो नहीं है, महापापी जो उसके पास खड़ा है उसकी बदबू उसको नहीं आयेगी। और वो महापापी कोई हो, मिनिस्टर हो कोई हो तो उसके तलुए चाटने में इनको फरक नहीं पड़ेगा।

गणेश तत्व के खराब हो जाने से मनुष्य का सारा, यों कहना चाहिए कि, अस्तित्व खराब हो जाता है और गणेश तत्व जो है उस पर चन्द्रमा का वर्षाव है। चन्द्रमा जब बिगड़ जाते हैं तो आदमी को Lunacy की बीमारी हो जाती है, आदमी पागल हो जाता है। और पागल तो क्या हो जाता है असल में बात यह होती है कि जब आदमी इधर उधर अपनी आँखें घुमाने लग जाता है, तो उस का चित्त अपने आप अपने काबू में नहीं रहता और कोई सी भी दुष्ट आत्मा उस पर आघात कर सकती है। जब विदेश के लोगों को मैंने बताया कि तुम लोग क्या कर रहे हो अपनी आँख के साथ। ईसा मसीह ने साफ शब्दों में कहा यह लिखा गया है कि 'Thou shall not commit adultery ' लेकिन I would say unto ' Thou shall not have adultrous eyes.'

हम इस तरह से अपना गणेश तत्व खराब करते रहते है। और जिसका गणेश तत्व खराब हुआ, उसकी कुण्डलिनी टिक नहीं सकती, फिर खिंचकर वापस चली आती है। कितनी भी मुश्किल से ऊपर उठ कर कुण्डलिनी जैसे कि कोई चरखी हो इस तरह से गणेश जी उसे खींच लेते हैं।

कुण्डलिनी उठती नहीं और उठती भी है तो फिर जाकर दब जाती है। इसमें, अगर समझ लीजिये कोई आदमी चोर हो, चकार हो, चोरी करता हो तो परमात्मा की नज़र में इतना बड़ा गुनाह नहीं है। Govt. से चोरी करता है तो समझ लो कि Income है अपना ही Income है उसमें पता नहीं कौन चोर है। Govt. चोर है या जिसका Income tax खाया जा रहा है वो चोर है। उसका मतलब यह नहीं कि आप Income tax न दें लेकिन परमात्मा की नज़र में वो आदमी बहुत दूषित है जिसकी नज़र स्त्री के ऊपर शुद्ध नहीं है। सिवाय अपनी पत्नी को छोड़कर बाकी सब औरतें शुद्ध स्वरूप में देखनी चाहिए। लेकिन आज के लोग ऐसा मानते नहीं कि ऐसा होता था। जैसे हमारी उम्र में हम तो अधिकतर लोगों को ऐसा ही देखते थे। अब इस उम्र में देखते हैं तो हमारी उम्र की औरतें, जो लोग बुड्ढे लोग हैं वो भी सत्यानाश हो गए। अपनी उम्र में उन्होंने अपने जवानों से ये बातें सीखी हैं और बुड्ढे ज़्यादा ही बरबाद हो गए जवानों से। कुछ समझ में नहीं आता कि इन लोगों को अक्ल कब आयेगी। जब जवान थे, कोई मजाल नहीं जब हम लोग छोटे थे तो कभी भी ऐसा सवाल नहीं उठता था। हम तो अकेले चले जाते थे कहीं भी। पंजाब में भी हम पढ़े हुए हैं। पंजाब में मजाल नहीं कोई बदतमीजी कर ले सब लोग फाड़ खायेंगे। और अब वहीं के ये लोग पंजाबी आये हैं। मजाल नहीं सरदार जी लोग किसी औरत को कभी बुरी निगाह से किसी ने देख लिया तो खून–खराबी हो जाती थी। और आज यह अपनी हालत हो गई है कि किसी को किसी का पता नहीं। और अगर आप कहें कि यह कैसे हो सकता है हमारा तो चित्त ही नहीं बच सकता। अरे भई, पचास साल पहले यह नहीं था, चालीस साल पहले भी नहीं था तो आज क्या हो गया है कि हम लोगों की सभी आँखों की शर्म और हया कहाँ चली गई ? अरे कोई बताता थोड़ी था कि शर्म, हया करो, वह तो सब अन्दाज हो ही जाता था। इन्सान को पता रहता ही था। इसी तरह से पहले लोग रहते थे। आजकल बहुत लायक हो गए ना ? तो जैसे–2 चलते हैं अगर हमने इसमें अपना गणेश तत्व खो दिया, बहुत कुछ खो दिया। कल आपने पूछा तो मैं बता रही हूँ वरना मैं कहती नहीं कि लोग बुरा मान जायेंगे। लेकिन आजकल जो हवा है वो बहुत खराब है, बहुत नुकसानदेय है। इसी से हमारे यहाँ सब तरह के indiscipline (अनुशासन हीनता), खराबी और बदतमीजियों और दुष्टता आ रही है। जब आप इस तरह के काम शुरु कर देते हैं। अब तो जब औरतें भी इस ढंग की हो गई, तो आदमियों का क्या हाल होगा ? इस तरह आजकल औरतों का हाल है आदमी तो आदमी औरतें भी इस तरह की होने लग गई इस संसार में। परमात्मा का राज्य आना मुश्किल है। आजकल इस तरह के गुरु भी हो गए हैं जो सिखाते हैं कि ऐसे धन्धे करो तो भगवान मिल जायेगा। तो और भी अच्छे ऐसे गुरुओं के इलाकों में लोग आ गए ऐसे गुरुओं के हाथ पड़ते हैं। यहाँ अब इतने बैठे हैं, ऐसे गुरुओं के पास दस गुने बैठ जायेंगे। ये बातें किसी को अच्छी थोड़ी लगती हैं। अरे भाई आराम से जैसा करना है करो

अपने गणेश तत्व को कुचल मारो, गणेश जी को सुला दो।

कुण्डलिनी तत्व जो है। ये कोई साइन्स–वाइन्स (विज्ञान) की बात नहीं है ये तो पवित्रता की बात है। पवित्र आदमी की–Holiness, लोग मुझे Her Holiness तो कहते हैं पर Holiness (पवित्रता) की जब बात करती हूँ तो उनको समझ में नहीं आता कि आजकल तो कोई गुरु ऐसा नहीं करता कि आपको पवित्र होना चाहिए। माताजी तो एक अजीब गुरु हैं जो पहले ही शुरु कर देती है कि आपको पवित्रता रखनी चाहिए। वाह, अधिकतर तो गुरु यही कहते हैं कि भाई जो करना है वो करो पर पैसा जमा कर दो, बस काम खतम। पैसा तुमने जमा किया कि नहीं ?

कुण्डलिनी–जागरण जो है, यह असलियत है, reality है, actualisation है। इसके लिए मनुष्य का पवित्र होना जरूरी है। अगर आप पवित्र नहीं हैं तो आपको कुण्डलिनी जागरण का अधिकार मिलना नहीं चाहिए। फिर भी माँ का रिश्ता है, माँ मानने को तैयार कभी नहीं होती कि मेरा बेटा जो है वो गिर गया है। उसके लिए बड़ा मुश्किल हो जाता है क्योंकि उसको ही लांछन लगता है। इसी से तो सारी अपनी पुन्याई लगा के कहती हूँ कि पूजा–पाठ तो करा दो। पहले यह बात जानना चाहिए कि चाहे आप बुरा मानें या भला अपने जीवन में पार होने के बाद आपको जरूर पवित्र बनाना होगा। पवित्रता आप में बहुत जरूरी आनी चाहिए। इसका यह मतलब नहीं कि आप सन्यासी बनकर घूमें, सन्यासियों को भी सहज–योग नहीं मिल सकता। यह मतलब मेरा बिल्कुल नहीं कि आप किसी unnatural (अप्राकृतिक) तरीके से रहिये, बिल्कुल नहीं। इससे आदमी बड़ा ही शुष्क हो जाता है, सूखा इन्सान हो जाता है। वो भी मना है। देखिये, मंगलमय वैवाहिक जीवन सहज–योग में आशीर्वादित होता है। यहाँ तक कि सहज–योग के विवाह भी होते हैं जो बहुत ज़्यादा हमने देखे हैं, लाभदायक होते हैं। सहज–योग की तरफ से हम लोग विवाह करते हैं, उससे बहुत लाभ होता है।

विवाह एक मंगलमय कार्य है और उसमें आप जानते हैं हम हमेशा गणेश की स्तुति करते हैं। अगर आपमें पवित्रता नहीं है तो आप परमात्मा की बात नहीं कर सकते, सच बात मैं आप से कहूँ। इसलिए बहुत लोग कहते हैं, कि माँ हमारे कर्मों के फलों का क्या होगा ? और हमारे कर्म अच्छे है नहीं । बहरहाल मेरे सामने यह बातें नहीं करने की क्योंकि माँ के लिये ये सब कुछ मुश्किल काम नहीं। उनका नाम ही बनाया है पाप–नाशिनी वगैरह, तो क्या है ? लेकिन पार होने के बाद याद रखना कि आप पार नहीं थे अन्धेरे में थे। चलो जैसे भी हो लेकिन उसके बाद यह बात जाननी चाहिये कि अपने गणेश तत्व को आप बहुत आसानी से जगा सकते हैं। जब यह परदेसियों में जम गया तो फिर आप लोगों में क्यों न जमे ? जब इन लोगों ने सीख लिया है कि पवित्रता क्या है तो क्या आप लोग नहीं जमा सकते ? कम से कम ऐसा हिन्दुस्तानी अभी तक मुझे नहीं मिला जो अपवित्रता को अच्छी समझता हो। करता है, पर जानता है कि गुनाह है, गलती है, यह समझता है। कोई हिन्दुस्तानी चाहे विदेश में रहा हो, करता है पर जानता है गलत काम है। लेकिन यह तो बेचारे यह भी नहीं जानते कि यह गलत काम है। यह तो सोचते हैं अच्छा काम है। वो तो कहते है कि करना ही चाहिए ऐसा। इसके बिना आपका कल्याण नहीं, ऐसा भी ये लोग सोचते हैं। इतने बेवकूफ है इस मामले में, यानि सरल है बेचारे। तब

भी वो बच गए, आप भी बच सकते हैं। लेकिन जिम्मेदारी आप पर है। इस गणेश तत्व को बनाये रक्खें जैसे गणेश हैं। देखिये मूलाधार चक्र जो है वो कहाँ पर है ? जो कुछ भी विसर्जित किया है उसको कहना चाहिए कि excretion जितना होता है उस पर श्री गणेश बैठा दिये गए हैं। वो सारा कार्य श्री गणेश करते हैं। क्योंकि श्री गणेश जैसे कीचड़ में कमल होता है उस प्रकार हैं। अपनी सुगन्ध से सारा सौरभ इतना लुटाते हैं कि वो कीचड़ भी सुगन्धमय हो जाता है। आपको आश्चर्य होगा कि जैसे ही आपका गणेश तत्व जमना शुरु हो जायेगा आपने सोचा भी नहीं होगा, आप जानते भी नहीं होंगे कि कितना आनन्द अन्दर से आने लगता है क्योंकि तत्व निर्मल है इसका। तत्व का मतलब ही निर्मलता है। जो चीज़ निर्मल है, माने तत्व पर आ गई उसका मल ही सारा हट गया और वो ही निर्मल होता है जो किसी मल को अपने अन्दर जमने न दे। कोई भी चीज जो निर्मल करती है वो तत्व ही हो सकती है। क्योंकि तत्व से कोई चीज़ लिपट नहीं सकती। हमेशा तत्व बनी रहता है। इसलिए सबसे पहले हम लोग गणेश का आह्वान करते हैं और उनकी आराधना करते हैं और उनको हम मानते हैं। लेकिन आजकल लोग कुछ ऐसे निकल गए हैं कि कुण्डलिनी के नाम पर गणेश जी का अपमान कर रहे हैं सुबह से शाम तक। इतना अपमान कर रहे हैं कि मैं आपसे बता नहीं सकती।

कुण्डलिनी उनकी माँ है और वो भी कन्या। कन्या स्थिति में वो भी जब पति के विवाह से पहले उनका स्वागत करने से पहले जब नहाने गईं, विवाह उनका हो चुका था, लेकिन अभी पति से मुलाकात नहीं हुई थी। तो जब नहाने गईं थी तब उन्होंने श्री गणेश जी को बनाकर bathroom के पास रख दिया था। यह बात सही है, एक दूसरे माने में या एक दूसरे आयाम (dimension) में। यह बात है कि वो अपनी माँ की रक्षा करें, कि उन की प्रतिष्ठा की रक्षा करें, उनके protocol की, उनकी पवित्रता की रक्षा करें क्योंकि वो virgin (कुमारी) हैं, वो कन्या हैं, इसी प्रकार हमारे अन्दर जो कुण्डलिनी है गौरी स्वरूपा है, अभी है, उनका उनके पति से मेल नहीं हुआ। पति उनके आत्मा–स्वरूप शिवजी हैं और गणेश वहाँ बैठे हुए हैं और उस दरवाजे पर श्री गणेश बैठे हुए हैं और उस दरवाजे से शिवजी भी नहीं जा सकते। इतना पवित्र वो दरवाजा है और यह दुष्ट लोग, इनको तो तान्त्रिक कहना चाहिए, उस तरह से कोशिश करते हैं कुण्डलिनी माँ की ओर जाने की और इसी वजह से उनको हर तरह की तकलीफ हो जाती है। जिस आदमी में पवित्रता नहीं है उसको कोई अधिकार नहीं है कि वो कुण्डलिनी जागृत करे। अगर ऐसा आदमी कोशिश करेगा तो जरूरी है कि श्री गणेश उस पर नाराज हो जायेंगे और फलस्वरूप उसके अन्दर अनेक तरह की विकृतियाँ आ जायेंगी। कई लोग तो, मैंने सुना है, नाचने लग जाते हैं, कई लोग हैं चिल्लाने लग जाते हैं, कई लोग भ्रमित हो जाते हैं, और कई जानवर जैसी बोलियाँ निकालने लगते हैं। किसी किसी लोगों को मैंने देखा है कि उनके अन्दर blisters (फफोड़े) आ जाते है क्योंकि ऐसे लोगों के पास वो जाते हैं जो अपवित्र हैं, जिनको कुण्डलिनी के लिए कोई मालूमात नहीं और जब वो कुण्डलिनी की ओर अग्रसर होते हैं, गलत रास्तों से और गलत तरीकों से तब उन पर स्वयं साक्षात् गणेश गरजते हैं। साधक के श्री गणेश, और साधक को बहुत तकलीफ उठानी पड़ती है। सारा तान्त्रिक शास्त्र गणेश जी को नाराज करके पाया जाता

है। जिनको लोग तान्त्रिक कहते हैं वो असल में तान्त्रिक नहीं हैं। जो वास्तविक निर्मल तन्त्र है वो यह है, जो सहज–योग है। क्योंकि तन्त्र माने कुण्डलिनी है, यन्त्र माने कुण्डलिनी है तो यह शास्त्र केवल सहज–योग में ही जाना जा सकता है। और बाकी जो तान्त्रिक हैं ये परमात्मा के विरोध में हैं, ये दुष्ट लोग हैं, ये देवी जी को नाराज करके, ये गणेश जी को नाराज करके उनके सामने व्यभिचार करके ऐसी सृष्टि तैयार करते है जहाँ वो दुष्ट कारनामें कर सकते हैं; जहां वो भूत विद्या, मशान विद्या आदि करके लोगों को भ्रमा सकते हैं। यह बहुत समझने की बात है, कि जिसका गणेश तत्व ठीक होगा उस पर कभी तान्त्रिक हाथ नहीं मार सकते, कभी नहीं, चाहे कितनी भी कोशिश कर लें। जिस आदमी का गणेश तत्व ठीक है, उस आदमी का कोई बाल बाँका नहीं कर सकता। इसलिये गणेश तत्व जो कुछ है वो सुरक्षा का तत्व है।

सबसे बड़ी सुरक्षा गणेश तत्व से होती है। इसलिये अपने गणेश तत्व को आपको बहुत ही ज्यादा सुचारू रूप से संवारना चाहिये। सबसे पहले तो अपनी नजर नीचे रखिये। लक्ष्मण जैसे आप बनें, और अपनी आँख सीताजी के चरणों में ही रखिये। क्या उनके अन्दर कोई पाप नहीं था लेकिन सीताजी के ही क्या, इसका मतलब यह है कि उन्होंने चरण को ही देखा क्योंकि उन्हें ज्ञात था कि ऊपर देखना, किसी की ओर दौड़ना अपना चित्त ही बिगाड़ना है। गणेश तत्व हमें पृथ्वी माँ से मिला मिला है, धरती माँ ने हमें गणेश तत्व दिया हैं। अब हम इसलिये पृथ्वी माँ का अनेक बार धन्यवाद मानते हैं कि आपने हमें यह तत्व देकर के दिशा का ज्ञान दिया। जब मनुष्य के अन्दर गणेश तत्व जागृत हो जाता है, उसके अन्दर विवेक–बुद्धि आ जाती है। इसलिये गणेशजी से हम कहते हैं कि हमारे अन्दर विवेक, सुबुद्धि हमारे अन्दर Wisdom दीजिये। मनुष्य के अन्दर यदि दिशा का ज्ञान नहीं भी हो तो कुछ फरक नही पड़ता लेकिन अच्छे बुरे का उसको ज्ञान होना जरूरी है। इसीलिये हम उनसे माँगते है कि हमें आप विवेक दीजिये। इसीलिये वो विवेक देने वाले माने जाते हैं। यह गणेश तत्व है।

अब हमारे अन्दर जो दूसरा बहुत महत्वपूर्ण तत्व है वो है विष्णु तत्व। विष्णु तत्व से हमारा धर्म धारण होता है अन्दर, जो कि हमारे नाभि चक्र से प्रवाहित होता है, जो हमारे नाभि में है। नाभि में हमारे अन्दर धर्मधारण है। जैसे कि आप amoeba में थे तो आप अपना खाना पीना खोजते थे। जब आप amoeba से और ऊँचे हो गए, इंसान की दशा में आ गए तब आप अपनी सत्ता खोजते है और उससे आगे जब आप जाते हैं तो आप 'परमात्मा' को खोजते हैं। आप के अन्दर यह धर्म है कि आप परमात्मा को खोजें, यह मनुष्य का धर्म है। जानवर नहीं खोज सकते। कोई भी प्राणी परमात्मा को नहीं खोज सकता, केवल मनुष्य ही परमात्मा को खोज सकता है । ये मनुष्य का धर्म है। और इसके दस धर्म हैं और ये धर्म का तत्व विष्णु जी से हमें मिलता है। अब बहुत से लोग सोचते हैं कि विष्णु जी से हमें पैसा मिलता है, और विष्णु जी से हमें और लाभ होते हैं लेकिन ये बात नहीं है कि सिर्फ उनसे हमें पैसा ही मिलता है। ऐसी ऐसी गलत भावनाएं हमारे मन में बसी हुई हैं कि विष्णु जी से सारा क्षेम जो है हमें मिलता है और बाकी कोई मतलब नहीं। सारे क्षेम से क्या लाभ होता है, आप सोचिये ? जब मनुष्य क्षेम को पाता है, समझ लीजिए, आप एक दशा लीजिए। एक मछली है उसने यह जान लिया कि अब हम इस समुद्र से पूरी तरह से संतुष्ट हैं,

तो संतोष को पा लेती है तब उसे विचार आते हैं कि समुद्र को तो सब देख लिया, उसका तो धर्म हमने जान लिया समुद्र का, अब हमें जानना है कि जमीन का धर्म क्या है। तो वो अग्रसर होती है। मछली का अवतरण जो हुआ है तो सिर्फ इसलिए हुआ है, कि एक मछली उसमें से बाहर आ गई। अब जब वो मछली बाहर आ गई–एक ही मछली–वही अवतार हम मानते हैं जो पहले बाहर आई और उसने बहुत सारी मछलियों को अपने साथ खींच लिया। क्या सीखने के लिये ? कि धर्म क्या है। कौन सा धर्म ? जमीन का धर्म क्या है ? इसलिये नहीं कि वो मछलियाँ बाहर आ गई। अब उनमें दूसरा धर्म सीखने की बात आ गई। पहले पानी का धर्म सीखा फिर अब जमीन का धर्म सीखने लगे। जब जमीन का धर्म सीखने लगे तो रेंगते रेंगते उन्होंने देखा कि पेड़ भी है। पेड़ के भी आप पत्ते खा सकते हैं। क्षुधा पहली चीज़ होती है जिससे कि आदमी खोजता है। खोजने की शक्ति नाभि में ही पहले इसलिए होती है कि उसमें क्षुधा होती है। आपको इच्छा होती है कि किसी तरह से अपने.....और जानवर हो जाने के बाद उसने सोचा कि अब गर्दन उठाकर रहें। बहुत झुक–झुक कर रहे अब गर्दन उठाकर रहें। जब उसने गर्दन उठाई तब वो मनुष्य बना। धीरे–धीरे फिर वो मनुष्य बना। गर हमारे अन्दर ये जो धर्म है कि हम धर्म को धारण करते हैं, जैसे कि पहले मछली का धर्म था कि वो पानी में तैरती थी, उसके बाद कछुए का धर्म था कि वो रेंगता था जमीन पर, उसके बाद जो जानवर थे उनका ये धर्म था कि वो चार पैर से चलते थे लेकिन उनकी गर्दन नीचे थी। फिर घोड़े जैसे उन्होंने अपनी गर्दन ऊँची की थी। उसके बाद उन्होंने सारा शरीर ही खड़ा कर दिया और दो पैर पर खड़े हो गए। ये मनुष्य का धर्म है कि दो पैर पर खड़ा है और उसकी गर्दन सीधी है–ये तो बाह्य में हुआ–बहुत ही ज़्यादा जड़ तरीके से, आप समझे ? लेकिन तत्व में क्या मनुष्य के पास जो कि हर बार जब भी आप कोई–सा भी काम करते हैं तो तत्व अपने कार्य में भी उसी तरह से प्रभावित होना चाहिए। समझ लीजिए आज हम इसमें से बातचीत कर रहे हैं और हम समझ रहे हैं। लेकिन इससे भी बढ़िया कोई चीज़ आ जाए तो ये मशीनरी जो काम करेगी वो भी नई होगी या नहीं। इसी प्रकार मनुष्य के अंदर का भी जो तत्व है , वो एक नया विकसित तत्व है, और वो तत्व जो कि परमात्मा को खोजे, उसका जो तत्व है तो परमात्मा को खोजता है। इसलिए मनुष्य का प्रथम तत्व है परमात्मा को खोजना। जो मनुष्य परमात्मा को खोजता नहीं वो पशु से भी बदतर है। अब जब वो परमात्मा को खोजने निकला तब उसका तत्व जो है, नाभि चक्र का पूर्ण हुआ। अब वो अगले तत्व पर आया। कि जब परमात्मा को खोजने लगा तो उसने देखा कि संसार की सारी सृष्टि बनी हुई है। हो सकता है इन तारों में, ग्रहों में और इन सब में ही परमात्मा हो। उसके तरफ उसकी दृष्टि गई। तब उसे हिरण्यगर्भ याद आए। उन्होंने वेद लिखे। उनका अग्नि आदि जो पाँच तत्व की ओर चित्त गया। उसको जानने की उन्होंने कोशिश करी। उनको जानते हुए उनको जो हवन वगैरा करते थे, वो किये और ब्रह्मदेव और सरस्वती की अर्चना की और सब कुछ करने के बाद भी उन्होंने देखा कि इस सबको तो हम जान गए, बहुत कुछ जान गए। जैसे कि Science में लोग सब कुछ जान गए, बहुत कुछ जान गए। लेकिन जब Science का नतीजा निकला तो उन्होंने कहा कि ये क्या, हमने तो atom bomb बना दिया। अब उस कगार पर आकर खड़े हो गए Science वाले भी कि हम आगे

कहाँ जा रहे हैं, अब तो गड्ढा ही सामने है। इससे एक कदम आगे गए तो सारा संसार एक क्षण में खत्म हो जाएगा। अब उन्होंने किताबें लिखी हैं कि आप अगर पढ़ें तो एक है कि shock पर, मतलब ये कि कितना बडा shock है, और संसार में लोग अज्ञान में बैठे हैं, इसलिए दुखी हैं। जैसे France के लोग हैं तो हमेशा मुँह लटकाए रहते हैं। तो मैंने कहा कि ये क्यों ? तो कहने लगे, माँ इन लोगों को अगर कहिये कि आप सुखी हैं और आनन्द में तो कहेंगे आप से बढकर बुदधू कोई नहीं। और आप बिल्कुल ही इस दुनिया की बात नहीं जानते तो मैंने कहा–अच्छा। क्योंकि ये कहते हैं कि हम तो पढ़ते लिखते रहते हैं और हमने ऐसी ऐसी किताबें पढ़ी हैं जिनसे से ज्ञात होता है कि दुनिया पर बड़ी भारी आफत आने वाली है और सारा संसार खत्म हो जाने वाला है। मनुष्य ने पूरी तैयारी कर ली है कि अपने को एक मिनट में खत्म कर ले। और ये बड़ी भारी आफत की चीज़ है और आप सुख में बैठी हैं, आनन्द में बैठी हैं। तो इन पर विश्वास नहीं होगा। तो मैंने कहा कि क्या इसीलिए लोग शराब पीते हैं ? क्योंकि बड़े दुखी जीव हैं, बड़े दुखी है न। मुँह लटकाने के वक्त तो दुखी हैं, फिर शराब क्यों पीते हैं। अच्छा, ये भी कहिये कि अपने गम गलत कर रहे हैं। हाँ ये भी एक बात समझ लें, माँ, कि गम गलत कर रहे हैं। लेकिन हर मोड़ पर एक गन्दी औरत रास्ते में Paris में आपको खड़ी मिलेगी। ये किस सिलसिले में ? ये मैंने कहा कि आदमी ने अपने लिए एक नाटक बना कर रखा है कि भई मैं बडा दुखी हूँ, इसलिये मुझे शराब भी चाहिये और पाप भी करना चाहिए। अगर मै पाप नहीं करूंगा तो मेरा दुख कैसे मिटेगा ? इस तरह की बेवकूफी की बातें करते हैं। अब कहने का मतलब ये है, कि गर तत्व में परमात्मा को खोजना ही सब बात है तो आप समझ सकते हैं कि Science के रास्ते से आपको परमात्मा नहीं मिल सकते। Science के रास्ते से आपने जो कुछ पाया है, जो कुछ आपने बड़ा भारी 'ज्ञान' पाया है, उससे किसी ने भी आनन्द को नहीं पाया है। हाँ, ये जरूर है कि आप आलसी हो गए पहले से ज़्यादा। अब आप चल नहीं सकते। England में आप किसी दुकान में चले जाइए, अगर किसी को 2,4,6 का गुणन करके बताइए तो कर नहीं सकते। तो उनको तो चाहिए– Computor ,उसके बगैर उनका काम नहीं चलता है, वो अगर खो गया, तो उनकी खोपड़ी गायब है। पहले तो अति सोचने से उनके हाथ बेकार हो गए। कोई भी कशीदाकारी का काम, खाना बनाने का काम, कोई भी काम वो नहीं कर सकते। अब, जब उनकी खोपड़ी ज़्यादा चलने लग गई, उसके बाद मशीन बन गई और उन्होंने अपनी खोपड़ी को मशीन में डाल दिया। अब जब मशीन आ गई तो खोपड़ी भी बेकार। अब सब कुछ उनके लिए मशीन हो गई उसके बगैर वो चल नहीं सकते। अगर वहाँ पर बिजली बंद हो जाए, तो लोग आत्महत्या कर लें। तो अपने यहाँ, भगवान की कृपा से अच्छा है। अभी भी लोगों को आदत है, कि बिजली चली जाती है। और वहाँ लोग परेशान रहते हैं, कि गर वहाँ एक बार बिजली चली–गई अमेरिका में बिजली गई तो न जाने कितने accident हो गए, कितनी आफतें आ गईं , कितनी परेशानियाँ आ गईं, कि तूफान हो गया, कि कभी जलजला आया हो तो इतनी आफत नहीं थी जितना कि बिजली का। उसका तो बड़ा नाटक हो गया। इस कदर उन्होंने अपनी गुलामी कर ली और अब इनको पता हो रहा है, कि plastic के इन्होंने इतने बड़े बड़े पहाड़ खड़े कर दिये। अब इन plastic का क्या करें ?

इनको नष्ट कैसे करें ? अब इसके पीछे लगे हुए हैं। अब सर पकड़ कर बैठे हुए हैं। एक घर में अगर आप जाइए तो आपको न जाने कितनी तरह की चीज़ें दिखाई देंगी। हिन्दुस्तानी लोगों का तो दिमाग खराब हो रहा है। जब भी मुझसे कहते हैं कि विलायत से आते हुए nylon की साड़ी लाओ। अरे भई, यहाँ इतनी बढ़िया cotton की साड़ी मिलती है, silk की साड़ी मिलती हैं। काहे को वो nylon पहनते हैं। पर हम लोगों को तो nylon का शौक हो गया है। हमें plastic का शौक हो गया है। वहाँ किसी को बता दें तो किसी को विश्वास नहीं होता कि हम इतने बेवकूफ हैं। वहाँ पर तो लोग cotton को भगवान समझते हैं क्योंकि उनको मिलता ही नहीं। पहले उन्होंने खूब cotton के कपड़े बनाए। अब समझ लीजिए कि गर उनके यहाँ शराब होती है घर में तो दस तरह के glass होंगे। इसके लिए ये glass, उसके लिए वो glass, उसके लिए वो glass, उसके लिए वो glass। खाना खाने के लिए दूसरा चमचा, तीसरे के लिए तीसरा चमचा। उस के लिए दूसरी प्लेट उसके लिए चौथी प्लेट। अरे भाई, एक थाली लेलो और इस हाथ से खाओ। पच्चीस तरह के glass और पच्चीस तरह के ये और पच्चीस तरह की तश्तरियाँ, भगवान बचाए ! अब ये हालत आ गई कि जितना भी था निकल गया। पृथ्वी माता से सब कुछ तत्व निकाल डाला इन्होंने,खोखले हो गए। अब काहे में खाते हैं। सुबह, शाम हर वक्त कागज में खाते हैं। हमारे एक रिश्तेदार गए थे वहाँ अमेरिका , बेचारे पुराने आदमी हैं। कहने लगे साहब मैं तो तंग आ गया। रोज Picnic करते करते हालत मेरी खराब हो गई। जब देखो तब वो अपनी या तो plastic की प्लेट और या तो कागज की प्लेट। इनके घर में तो ये हालत है। और हम कहते हैं कि वे affluent हैं, पैसे वाले। अरे इनके पास क्या है ? सिवाय plastic के इनके पास क्या है ? plastic में खाना, plastic में रहना, plastic में मरना और इनके घरों की हालत ये हो गई है कि रहे होटलों में मरे अस्पतालों में। ये तो खानाबदोश हो गए। इनका तो सारा ही कुछ मिट गया। तो इनकी इतनी गलतियाँ हो गई हैं Science वालों की, कि किसी भी बात पर मैं बात करूंगी तो आप हंसते हंसते लोट–पोट हो जाएंगे। Medical Science को देख लीजिए , कोई कहेगा मैडकिल Science में ये हो गया, वो हो गया। क्या हुआ है ? खाक हुआ है। जरा देख लीजिए। अब बता रहे थे अभी अभी कि साहब आप तो मंजन करते हैं यहाँ पर, उसका जो toothpaste होता है तो chloroform उसमें मिला देते हैं उसकी वजह से, तो chloroform मिला देने की वजह से अब कैंसर होने लग गया है, तो कोई लोग कहेंगे कि हिन्दुस्तान से मंगा दीजिए हमको नीम toothpaste उसमें chloroform नहीं होता है। मैंने कहा बहुत अच्छा। क्योंकि chloroform मंहगा है हम कहाँ से भेजें। हम तो लगा नहीं सकते chloroform उसमें। यहाँ से चीजें जाना शुरू हो गईं, हाथ में जो वो लोग साबुन लगाते हैं उसमें भी chemicals होते हैं असल साबुन नहीं होता है। हिन्दुस्तान का साबुन थोड़े दिन में देख लीजिएगा, सारी दुनिया में चला जाएगा। आप लोग अब शेयर–वेयर मत लीजिए। क्योंकि हिन्दुस्तान का साबुन शुद्ध होता है, वो तत्व पर बना होता है। कोई artificial पर नहीं। हरेक चीज वहाँ की; मैं तो कभी विदेशी चीज़ इस्तेमाल नहीं करती। इसीलिए–क्योंकि सब चीज इनकी, आप देखिये वो बड़े बड़े scents होते हैं, तंबाकू होता है, क्या क्या होता है उसमें सारा और कुछ नहीं; तंबाकू है। तंबाकू से बना है इसलिए तंबाकू

शब्द। और क्योंकि वो तंबाकू थोड़ी–थोड़ी चढ़ती जाती है, आदमी को नशा आता रहता है वो इस्तेमाल करेगा और वो समझता है कि मैं बड़ा हूँ, मैं तंबाकू इस्तेमाल कर रहा हूँ। तंबाकू है, यानि तंबाकू— का पानी, उससे बनाया हुआ है। और अपने यहाँ के इत्र असल हैं। असल में होते हैं और इनके सारे chemicals होते हैं, इस्तेमाल करने से कोई भी चीज़ इनके यहाँ है ? अब ये कहते हैं कि सर में कई लोग लगाते हैं न — तो अपने यहाँ तो पहले होता ही था तो मेंहदी वगैरा लगा लेते थे। और ये लोग जो चीज़ लगाते हैं, करते हैं, उससे कैंसर हो जाता है। वहां इतनी artificiality हो गई कि लोगों के भौहें उड़ गए। किसी के बाल उड़ गए, जवानी में ही। किसी के दाढ़ी ही नहीं आती, किसी के कुछ नहीं आती, अजीब बुरा हाल है। पता हुआ कि वो कुछ ऐसी चीज़ इस्तेमाल करते गए कि ये सब चीज़ होना उनका बंद हो गया। वहाँ सरदार जी लोगों को बुरा हाल होगा। और वो लोग ज्यादा शराब पियेंगे तो और भी बुरा हाल होने वाला है।

बहरहाल। कहने की बात ये है artificial चीजों में जाने में–क्योंकि हमने अपने तत्व को जाना नहीं। गर इन सब पंचमहाभूतों के तत्व पर उतरने को कहें, तब भी हम जड़ में फंस गए। उसकी जो जड़ता है, तो उसका तत्व नहीं है। सारे पंच महाभूतों का तत्व है ब्रह्मा। और ब्रह्म तत्व क्या उसको पाने के लिए सिर्फ़ आत्मा को पाने से ही वह हमारे अंदर से बहना शुरू हो जाता है। उस तत्व को तो हमने खोजा नहीं और खोजते गए, खोजते गए। वहाँ पहुँच गए जहाँ वो चीज़ बिल्कुल बाहर आ गई और जड़ हो गई। इसलिए ये हालत है कि उस देश में कोई लोग खुश नहीं है। बड़ा Science मिल गया, बहुत विद्वान हो गए, पढ़ गए, और अब कगार पर खड़े हुए हैं कि एक कदम आगे गए, और धड़ से सब के सब नीचे। तभी सब लोग shocked हैं बहुत दुखित रूप से। और इस कदर परेशान हैं कि आप को बहुत कम लोग वहाँ इस कदर मिलेंगे जिनकी कोई न कोई चीज़ न फड़क रही हो। आँख फड़क रही है, नाक फड़क रही हो, सिर ऐसे होता है और कई परेशानी। कोई चीज़ वहाँ नहीं मिलेगी जो शांत हो। औरतें आदमी को मारती हैं, आदमी औरतों को मारते हैं, बच्चों को मारते हैं, बच्चे माँ–बाप को मार डालते हैं। कहीं सुना। मार डालते हैं। मतलब वहाँ की statistics है, कम से कम दो तो मरते ही हैं। और तो भी आप सुनिये माँ बाप मारते हैं। तो ये इस तरह की जहाँ संस्कृति बन गई है तो जानना चाहिए कि उन्होंने तत्व को जाना नहीं, अगर जानते होते, तत्व को अगर जानते तो आज ये हालत नहीं होती। "क्योंकि तत्व जो है आनन्द देने वाला है।" तो इन्होंने तत्व को खो डाला। तो ब्रह्म देव का तत्व भी गया। अब अपने देश में हैं हम लोगों ने कहा कि निराकार ब्रह्म है और उसको पाना चाहिए वेद में, ऐसे लिखा गया है, ये है वो है, जिद करके बैठ गए। लेकिन वेद में भी लिखा है – वेद माने विद माने जानना, गर सारा वेद पढ़ करके भी मनुष्य ने अपने को जाना नहीं तो वेद बेकार हुआ कि नहीं हुआ और जब ये बात है तो पहली चीज़ ये है कि वेद का पठन करने से आप को आत्म ज्ञान नहीं हो सकता। उसके पठन से और सब हो सकता है, लेकिन आत्म ज्ञान नहीं हो सकता। गायत्री मंत्र है। गायत्री बोले जा रहे हैं, गायत्री बोले जा रहे हैं। अरे भई ऐसे बकवास से क्या गायत्री देवी जागृत हो सकती हैं ? किसी की हुई, दिखाई दिया आपको ? किसलिए आप गायत्री का मंत्र बोलते हैं, ये भी पता नहीं आपको। गायत्री

को जागृत करने के लिए जरूरी है कि मनुष्य पहले अपनी आत्मा को जाग्रत कर ले, नहीं तो गायत्री जो है–परमात्मा की ही एक शक्ति है–जब तक आपने उस परमात्मा को जान न लिया, तब तक आप गायत्री के सहारे कहाँ चलियेगा? समझ लीजिये कि आपसे Prime Minister नाराज़ हैं, समझ लीजिए, तो आप तो काम से गये। आपने किसी दूसरे को प्रसन्न कर भी लिया तो आप तो काम से गए ही हुए। कोई आप को बचा नहीं सकता। तो जब तक आपने परमात्मा को पाया नहीं तब तक ये सारी शक्तियाँ व्यर्थ हैं, ये ही इसका सारांश है। और "तत्व सिर्फ आत्मा ही है।" उसी को पाना है। ये जो शक्तियाँ हैं, इनको पाने से आप परमात्मा नहीं पा सकते पर परमात्मा को पाने से इन शक्तियों के तत्व पर आप उतर सकते है। आप जो हैं, जो हमको दूसरी ओर ऐसा चित्त देना चाहिए कि इससे ऊपर जो शक्ति है, जो कि 'दैवी शक्ति' मानी जाती है ये आपके हृदय–चक्र में होती है। हृदय चक्र–हृदय से मतलब नहीं है। दूसरा तत्व है जिसे हमें कहना चाहिये, हृदय चक्र का जो तत्व है, वो दैवी तत्व है।

अब दैवी तत्व क्या है हमारे अंदर। जब ये खराब हो जाता है तो क्या उससे नुकसान होते हैं। इसको आप समझ लीजिए। "दैवी तत्व से हमारे अंदर सुरक्षा स्थापित होती है।" इससे हम सुरक्षित होते हैं। जब बच्चा 12 साल का होता है तब तक इस दैवी तत्व के अनुसार, हमारा जो sternum है जो कि सामने की हड्डी है, यहाँ पर, उस हड्डी में सैनिक तैयार होते हैं जिसे अंग्रेजी में antibodies कहते हैं, ये देवी के सैनिक हैं, और ये सारे शरीर में चले जाते हैं और वहाँ जा कर सजे रहते हैं कि आप पर कोई भी तरह का attack आए, उसे रोक दें। जब आपकी सुरक्षा किसी तरह से खराब हो जाती है, उस वक्त ये चक्र पकड़ा जाता है। अब मैंने अभी तो कुछ दिन पहले बताया था कि स्त्री में विशेषकर सुरक्षा बड़ी जल्दी खत्म हो जाती है। जैसे कि एक स्त्री है, अच्छी है, सद्गुणी है, लेकिन उसके पुरुष ने, मनुष्य ने उसको सुरक्षा नहीं दी। समझ लीजिए एक औरत है, उसको अपने पति पर शक है, शक ही है समझ लीजिए कि वह अवारा किस्म का आदमी है, किसी और औरत के साथ। उसका ये चक्र पकड़ जाता है, इस वक्त आदमी को बजाए इसके कि उस पर नाराज़ हो उसका फिर से सुरक्षा चक्र ठीक करना चाहिए कि नहीं भई ऐसी बात नहीं, तुम्हारे सिवाय मेरे लिए कोई और चीज़ नहीं। उसके तरीके है। उसको सोचना चाहिए कि किस तरह औरत को सुरक्षा दे, बजाय इसके कि औरत से बिगड़े। वो तो खुलेआम औरत के सामने आकर "तुम कौन होती हो बोलने वाली ? तुम हमें टोकने वाली कौन होती हो ? तुम तो बड़ी ये हो, तुम तो बड़ी शक्की हो और जाओ तुम अपने बाप के घर।" सुरक्षा उसका खत्म। आदमी को हमारे हिन्दुस्तान में खासकर लगता है कि वो जो चाहे सोचे ठीक है। वो कभी पाप ही नहीं करता, सारा जो भी chastity है, वो औरतों का ठेका है आदमी को कोई जरूरत नहीं chastity की। ऐसा अपने यहाँ शायद लोगों का विचार है। उसका इलाज जो है कायदे से हो जाता है। जैसे England में आप जाइए तो सब आदमी हमाल हो गए हैं, बिल्कुल हमाल। सुबह से शाम बिल्कुल गधे जैसे काम करते हैं। और घर में आए तो बीबी ने अगर उनको divorce कर दिया किसी भी तरह से तो उनका घर बिक जाता है, आधी property बीवी की आधी आपकी। जिस आदमी ने दो–तीन बार ऐसे किया, उसके साथ हुआ वो तो बिल्कुल रास्ते पर पड़ गया। वो शराब पी पीकर मर

जाएगा और उसकी बीबी जो है उसके पास खूब पैसा हो जाएगा। उसने दो–तीन शादियाँ कर लीं, हो गए। फिर जब बाह्य से, तत्व से नहीं बाह्य से उसका इलाज जो होता है तो वहाँ के आदमी जो हैं आपको विश्वास नहीं होगा कि वहाँ के आदमी जो हैं बिचारे हर समय औरतों के पीछे दौड़ा करते हैं। और वो उनके ऊपर हुक्म जमाती हैं। बर्तन साफ नहीं किये आपने ? ऐसे बर्तन साफ किये जाते है ? "चलो झाड़ू लगाओ। और तुमको झाड़ू लगाना नहीं आता ? इस तरह से झाड़ू लगा रहे हो। कभी तुम्हारी माँ ने सिखाया नहीं झाड़ू लगाना ? और इस तरह से आदमी हर समय झाड़ू लगाता रहता है।" मैंने देखा अपनी आँख से – आश्चर्य होता है। और सारा बिस्तर उसको साफ करना पड़ता है और सारी सफाई उसे करनी पड़ती है। जरा भी गंदा हुआ, चार आदमी बैठे हैं – चलिये उठाइए, उठो सफ़ाई करने। और इसीलिए वहाँ पर आपने देखा होगा, परदेस में kitchen की जो व्यवस्था संस्था बहुत develop हो गई है क्योंकि आदमियों को करना पड़ता है। यहाँ अगर चक्की चूल्हे करने बैठे तो पता चले। अपने आदमी लोगों को कोई भी काम करना नहीं आता। कोई भी काम। आदमी यों ही गये — की क्या जरूरत है ? कोई भी घर का काम करना, कोई भी चीज़ ठीक से करना, इससे उनको कोई मतलब नहीं। जैसे कि हमने देखा है, जैसे वो विलायत जाते हैं तो उनके छक्के पंजे छूट जाते हैं, आदमियों के। खाना बनाना उनको आता नहीं। बर्तन धोना उनको आता नहीं, झाड़ू हाथ में लेना उनको आता नहीं, कोई काम करना ही नहीं आता। वहाँ तो नौकर कोई होते नहीं। Students खासकर के उनका हाल खराब हो जाता है। कहेंगे माँ की बड़ी याद आ रही है। क्यों ? क्योंकि अब यहाँ हमें खाने को अच्छा नहीं मिलता। मैंने कहा तुम क्यों नहीं बनाते ? बोला हमको तो कुछ आता ही नहीं। आदमी हो गए तो निठल्लू, फिर उनको कोई मतलब नहीं। मैं अभी एक – बड़े भारी Secretary साहब हैं education के Sec. हैं — उनसे बात करी। मुझे उनकी बातें सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ उन्होंने कहा कि दस साल के अंदर इस हिन्दुस्तान में सिर्फ औरतें नज़र आएंगी। आदमी सब झाड़ू लगाएंगे। मैंने कहा क्यों? कहने लगे इतने निठल्लू होते हैं आदमी कि students वहाँ हमने देखा कि लड़कों के जो Leaders होंगे वो दुनिया के गुण्डे जो कभी पास नहीं होते, दस–दस साल एक ही class में बैठे हैं, वो उनके Leaders हैं। मैंने कहा। तभी अपने देश का ये नज़ारा दिखाई दे रहा है। और लड़कियों में जो है, जो लड़की first आती है class में, जो brilliant है, उसका स्वभाव अच्छा है, जिसमें शाइस्तापन है, और जिसमें कुछ विवेक है, ऐसी लड़कियाँ उनकी Leaders हैं। आप लड़कियों को कोई बात समझाइये तो वो कायदे से समझ जाएंगी, समझ जाएंगी। और लड़कों को कहेंगे तो वो हर समय लट्ठ लेकर खड़े हैं। और वो Leaders ही ऐसे बुरे होते हैं, इतने शैतान होते है, कि आप उनसे बात नहीं कर सकते, लड़कों को तो ये है कि साहब लड़कियों को तो training ये दो सुबह से शाम ससुराल जाने की, तो उनको तो ससुराल जाना है। और लड़कों को training ये, कि ससुराल जाओ तो मोटर जरूर लेकर आना। तो इस तरह से जब हम किसी भी व्यवस्था के ऊपर उसके तत्व नहीं ढूँढते और उसके तत्व से उसका इलाज नहीं कर रहे हैं तब हमारे अंदर बड़े दोष आ जाते हैं। इसीलिए विवाह का तत्व समझ लेना चाहिए और वो तत्व है कि इसके अंदर हमारी जो पत्नी है, वो हमारी पत्नी है। अपने देश के लोगों से ये कह रहे

हैं, वहाँ ये उल्टा कहना पड़ता है, वहाँ आदमियों की सुरक्षा खराब है, उनकी हालत खराब हो जाती है। लेकिन यहाँ पर जिन औरतों का यह चक्र खराब हो गया है उनको Breast-cancer की बीमारी हो सकती है। तपेदिक की बीमारी हो सकती है। Breast- cancer की बीमारी ज्यादातर इसी से होती है। अब इसकी बीमारी को ठीक अगर करना है, तो उसके मर्द से कहें कि भई अपनी बीवी की सुरक्षा ठीक करो तो मेरी बात नहीं मानेंगे। वो कभी मानेंगे नहीं और Doctor तो उसको ठीक नहीं कर सकते बस वो कहेंगे कि operation कर डालो, काम खत्म। Cancer हुआ काट डालो। नाक काट डालो, कान काट डालो, यहाँ से इनके ये काट डालो। बस Cancer का आदमी चल रहा है, आधी चीज उसकी गायब है। और थोड़ी चीज़ें हैं, उसके सहारे चल रहा है।

"सहजयोग ऐसी चीज़ नहीं है। सहजयोग तत्व पर उतरता है, इसका कौन सा तत्व खराब है, उसे देखता है, उसे ठीक करता है।"

अभी नाभि चक्र के चारों तरफ जो महान तत्व हमारे अन्दर है, जिसे कि धर्म तत्व कहना चाहिए, उस धर्म तत्व को संभालने वाला जो तत्व है उसका जो आधार है उसका जो मार्गदर्शन करता है, तो 'गुरु–तत्व है। ये गुरु–तत्व अगर खराब हो जाए तो cancer की बीमारी बहुत आसानी से हो जाती है। सबसे आसान तरीका cancer को अगर खोजना है तो आप किसी गलत गुरु के पास चले जाइए। 5 साल में अगर आपके अन्दर कैंसर न आ जाए देखिये। और मैं दस साल पहले से बता रही हूँ इन गुरुओं के नाम, ये कैसे गुरु घंटाल हैं। इनके पास मत जाओ, ये तुमको नुकसान करेंगे, सब मैं समझा रही हूँ तो सब मुझे ही समझाते हैं कि माँ ऐसा मत कहो तुम को ये लोग बंदूक चला देंगे, ये लोग मार डालेंगे, फलाना ढिकाना। मैंने कहा कि अगर किसी की हिम्मत हो तो चलाए बंदूक। और नाम तक मैंने बताए सबकुछ बताया, और सब गए, मार खाया और मेरे पास आए। या तो Heart attack आ जाएगा। Heart attack नहीं दिया उन्होंनें, इतनी कृपा करके छोड़ दिया तो पागलपन दे देंगे या epilepsy दे देंगे। उस पर भी अगर उनको चैन नहीं आया, तो cancer दे देंगे। सीधे–सीधे ले लीजिये। क्योंकि आपने उनको रुपया चढ़ाया है तो कुछ तो आपको देना ही चाहिए। आखिर आपने इतनी सेवा करी गुरु की। उनकी इतनी जेब भरी है तो कुछ न कुछ आप को मिलना ही चाहिए। और गुरु तत्व जब हमारा खराब हो जाता है, तो इतने तरह के cancer इंसान को हो सकते हैं। मतलब ये पेशानी है, इसको किसी के सामने झुकाने की ज़रूरत नहीं है। हर जगह मत्था टिकाने की जरूरत नहीं है। हाँ ठीक है अपने माँ बाप हैं, ठीक है आप टिकाइये। लेकिन किसी को गुरु मानकर उसके आगे माथा टिकाने की ज़रूरत नहीं है।पहले आप को मालूम होना चाहिये, कि गुरु वही जो परमात्मा से आप को मिलाता। अब मेरा उल्टा है। मैं लोगों से कहती हूँ मेरे पैर मत छुओ। छ–छः हजार आदमी मेरे पैर पर सर मारते हैं, ऐसे पैर मेरे फुक जाते हैं। vibrations से मैं कहती हूँ मत छुओ तो नाराज हो जाते है माँ दर्शन नहीं देना चाहतीं। और ये बीमारी लोगों में है, कि किसी ने कहा 'ये आ रहे हैं श्री 108 420, चले सीधे 'साष्टांग' नमस्कार। उसके बाद चक्कर खा कर गिर गए। गुरु ने हमें आशीर्वाद दे दिया है और हम चक्कर खा कर गिर गये और देखा कि 5–6 साल में बराबर पागलखाने पहुँच गए। और दूसरे आदमी देखते भी नहीं कि इस आदमी की

कम से कम तन्दरुस्ती तो अच्छी रहती भाई जिसके गुरु हैं। कम से कम इसको ये तो आराम होता और हजारों की तदाद में, लाखों की तादाद में जा रहे हैं। "आपके गुरु क्या करते हैं कि सातवीं मंज़िल पर बैठे हैं ? वो बोलते नहीं। मौनी बाबा हैं। बोलते नहीं।" बोलेंगे क्या ? कुछ इस खोपड़ी में हो तो बोलें। वो बोलेंगे नहीं मौनी बाबा हैं। जाओगे तो चिमटा मार देंगे। चिमटा खाने के लिए लोग सौ–सौ रुपया देंगे। कि मौनी बाबा हैं, जितना वो तमाशा करेंगे उतना अच्छा है। नए–नए तमाशे निकालते हैं। नए–नए तमाशे। हरेक 'गुरु' कोई न कोई तमाशा निकालता है। जैसे एक गुरु ने कहा, एक नया तमाशा निकाला कि तुमको हवा में उड़ना सिखाता हूँ। बच्चों को बहुत समझ में आ रहा है लेकिन बड़ों की समझ में नहीं आता। तीन–तीन हज़ार पौंड लिए। 'तीन–तीन हज़ार' पाउण्ड। सोचिये। उड़ना सीख रहे हैं। मैंने कहा नसीब के मारो, तुम्हारे गुरुओं को ही क्यों नहीं उड़ा के दिखाने देते ? पहले उनको उड़वा लिया होता, फिर पैसे देते। उनको खाने को बेचारों को, पहले आलू उबाले। ये भी सीधे लोग हैं बिल्कुल गधे। उबाल करके उनको पानी दिया तीन दिन। कहने लगे पहले तुम्हारा वज़न हल्का करना चाहिए उड़ाने के लिए। वो तीन हज़ार पाउण्ड में। तीन हज़ार पाउण्ड माने पता है कितना होता है ? मेरे ख्याल से 60 हज़ार रुपए। एक–एक से 60–60 हज़ार रुपए, अच्छा उसके बाद में उनको 2 दिन वो लोगों में है, कि किसी ने कहा 'ये जो उसके जो छिलके होते हैं वो खाने को दिए–आलू के। सबको कहने लगे वज़न तुम्हारा बढ़ना नहीं चाहिए। फिर जो सड़े हुए आलू थे वो आखिरी दिन दे दिए। तो उनको फिर diarrhoea लग गया तो कहा ये बहुत ज़रूरी है। इसी से तुम्हारा वज़न घटेगा। फिर थोड़े दिन उनको उल्टा टांग दिया। टंगे रहिए ! उससे आपका वज़न घट रहा है। फिर उनको foam पर रखा कि इस पर कूदने की कोशिश करिये, जैसे घोड़े पर कूदते हैं उस पर कुदवाना शुरु कर दिया, उसके फोटो ले लिए। छपवा दिया कि हम हवा में चल रहे हैं। "बिल्कुल झूठ, महा झूठ, सफ़ेद झूठ, बिल्कुल झूठ।" और कहने लगे हम चल रहे हैं। बताइए आपकी क्या मोटरें हैं, गाड़ियाँ हैं उसमें चलिए। आप ऐसे ऐसे हवा में चलिएगा तो टक्कर खाइएगा। आप सोचिए कि क्या ज़रूरत है ? क्या अब आदमी को पक्षी होने की ज़रूरत है कि उसको कोई विशेष चीज़–वो 'परम्' होना चाहिए। परम् दया आनी चाहिए कि ये जब आप गुरु तत्व में अपनी अक्ल खो देते हैं और ऐसे बेवकूफों के पास जाते हैं तो आपका गुरु तत्व खराब हो जाता है, आप सोचते भी नहीं। एक महाशय मुझसे कहने लगे कि माँ मेरी कर्म–गति का क्या होगा ? तो मैंने कहा कि तुम्हारे गुरु क्या कहते हैं ? कहने लगे कि मेरे गुरु ने कहा है कि तुमने जो कर्म किए हैं, जितने पाप किए हैं, उनमें से 1/68 मैं खा सकता हूँ। अच्छा मैंने कहा कौन सा हिसाब लगाया है इन्होंने। और बाकी का कौन खाएगा ? इसका मतलब है कि और अढ़सठ गुरु तुमको ढूंढने पड़ेंगे भइया। तब जाकर तुम पार होगे, क्योंकि बाकी का कौन खाएगा ? उसकी दुकान कहाँ ? क्योंकि इन्होंने तो अपना 'माल' खा लिया। और किसी के पास recommend करने का तरीका – Doctor लोग होते हैं न। जैसे किसी के पास जाइएगा कि साहब मेरी आँख खराब है। तो कहेगा अच्छा, पहले दाँत examine करवा लाओ। फिर वहाँ सारे दाँत निकाल दिए आपके, फिर उन्होंने कहा पहले अपनी आँख examine करवाओ, आँख में फोड़ा है। सब कर लिया। बाद में पता

हुआ कि आपके कुछ हुआ नहीं। उसी तरह का इन लोगों का हाल है। ये सब आपस की साझेदारी है, इन्होंने कहा कि बस मैं इतना ही लेता हूँ बाकी नहीं लेता हूँ। बाकी उस गुरु के पास जाओ। अगर गुरु दूसरे घायल बैठे हैं उन्होंने बाकी का इनका जितना पैसा था निकाल लिया। पता हुआ रास्ते में खड़े हैं। घर बिक गया, बीवी बच्चे छूट गए। रास्ते में खड़े हुए हैं। बच्चे बेचारे भीख मांग रहे हैं।

जब हम अपनी अक्ल इस्तेमाल नहीं करते तब ऐसे गुरुओं के पास जाते हैं। और इस तरह से सोच लेना कि जो भी काम भगवान के नाम पर होता है, भगवान का काम है, बड़ी गलत बात है। जैसे आज ही हमें एक देवी जी वहाँ पर मिलीं। उन्होंने कहा कि हमारे गुरु पहुँचे हुए पुरुष थे। उसमें कोई शक नहीं। लेकिन यहाँ बैठकर वो घंटा बजा रही हैं कि हम तो गुरु के शरण में हैं। हम तो गुरु के शरण में हैं। तो मैंने कहा कि फिर ? तो कहने लगी अब तो मैं पार हो गई माँ। मैंने कहा अच्छा। अपना ही सर्टिफिकेट, अपना ही सबकुछ ? कैसे पार हो गए बेटा तुम ? मैं तो गुरु के शरण में चली गई, मैं तो पार हो गई। मैंने कहा कि ऐसा तो 'मेरी भी शरण' में आने से नहीं हो सकता। अब मैं तो ज़िन्दा बैठी हूँ। तुम्हारे तो गुरु मर गए लेकिन तुम कहो कि माँ हम तुम्हारे शरण में हैं, हमें पार कराओ। 'थोड़ी तुम्हारी भी पूंजी लगती है और कुण्डलिनी का जागरण लगता है पार होने का काम है जब तक आप पार नहीं हुए तब तक 'माँ तेरी शरण में हम आए' कुछ नहीं काम बनने वाला, बेटी । साफ–साफ बता दूँ बेटी, पार होना पड़ता है। जब तक आप पार नहीं हैं, तब तक सब बातें बकवास हैं, बेकार हैं कि मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ और ये है। अरे ये तो सब आपने अपनी तरफ से कह दिया कि मैं शरण में आया लेकिन मुझे शरण में आना पड़ेगा न। 'काम तो मुझको करने का है।' मेरे हाथ से काम होना चाहिए। जब तक मेरे हाथ से काम नहीं बनेगा तब तक तो बेकार ही चीज हो गई न और ये साफ–साफ मैं बता देती हूँ कि जो पार नहीं वो पार नहीं और जो पार हैं वो पार हैं। उसमें कोई झूठा certificate तो कोई दे नहीं सकता। चाहे आप मेरे से लड़ाई करो, झगड़ा करो, कुछ करो, मैं क्या करूँ ? नहीं वो तो नहीं हुए, हुए तो हुए। सीधा हिसाब इसका होता है कि मेहनत हम लोग कर सकते हैं लेकिन पार नहीं कर सकते "कोशिश हम कर सकते हैं। प्यार हम दे सकते हैं। सब कर सकते हैं, 'आपको' होना होगा।" जैसा कि हम खाना बना सकते हैं, बढ़िया खाना बना सकते हैं, लेकिन आपके अगर जीभ ही नहीं हो, तो हम खिलाएँगे क्या और आप समझिएगा क्या ? आपकी जीभ जो है जागृत होनी चाहिए जो समझे कि माँ ने बना के खिलाया है। खाना तो आपको है या मैं आपके लिए खाना भी खा लूँ।

ये समझ लेना चाहिए जो तत्व एक ही है कि जो आप को गुरु सिर्फ परमात्मा से ही मिलता है। जो परम् में उतारता है वो ही गुरु है और कोई भी गुरु नहीं है। सब अन्धे हैं और अन्धा अन्धे को कहाँ ले जा रहा है भगवान ही जानता है ! ऐसे शरण गति से कुछ नहीं। शरण गति तो सिर्फ पार होने के बाद ही शुरु होती है। उससे पहले की शरण गति कुछ नहीं। आपने देखा होगा कि पार किए बगैर मैं पैर पर किसी को लेना नहीं चाहती। क्योंकि क्या अर्थ है इसमें। आप जब पार ही नहीं हुए तो मैं क्या करूँ ? पार तो होना पहले ज़रूरी है। हाँ ये बात ज़रूर है कि कई लोग पैर पर आने से ही पार हो जाते हैं। तो ठीक है। लेकिन कोई

शरण गति की ज़रूरत नहीं है उस वक्त। शरणागत बाद में होना चाहिए। शरणागत जब आप होते हैं तब कम से कम शरण में आने के लिए वो 'आत्मा' को होना चाहिए, प्रकाश तो होना चाहिए। बगैर प्रकाश के आप मेरे भी पैर पर मत आइए। पता नहीं शायद मैं भी 420 108 हूँ। क्या पता ? अगर मैं हूँ तो आप कैसे जानिएगा कि हूँ या नहीं ? बेकार की बकवास भी कर रही हूँगी तो आप कैसे जानिएगा? कभी भी आप जब तक पार नहीं होते आप मेरे पैर पर मत आइए। और इसीलिए मना किया गया था कि किसी के सामने बंदगी नहीं करना चाहिए, बंदगी उसी के सामने करना चाहिए जो परमात्मा से आपको मिलाए। जब तक ये घटना आप में घटित नहीं होती तब तक आपको बिना तत्व के कोई भी चीज़ को मानना नहीं चाहिए। इसलिए जो हमारा सुरक्षा का तत्व है उसके बारे में मैंने आपको बताया। कल बाकी के तत्वों के बारे में बताउँगी। आज काफी लंबा चौड़ा विवरण दिया है। और मुझे एक बात की बहुत खुशी हुई क्योंकि सबने कल कहा था कि कल सिनेमा है तो कोई नहीं आएगा माँ Programme में और मेरे पति आज ही बेचारे London जा रहे थे लेकिन उनको ऐसे ही छोड़कर मैं चली आई, Airport भी नहीं गई। मैंने कहा नहीं, जाना चाहिए, हो सकता है कोई लोग तो आएंगे ही और इसलिए मैं आई और मुझे बड़ी खुशी हुई कि आप लोग अपना 'सिनेमा' छोड़ कर भी यहाँ आए, अपने तत्व को ज्यादा महत्व दिया और इसीलिए मैं बहुत आज खुश हूँ। परमात्मा की कृपा से आज आप पार हो जाइएगा तो कल बड़ा मज़ा रहेगा और कल सब को लेकर यहाँ आइएगा। आपको मैंने वहाँ हल्के फुल्के तरीके से समझाया, कोई चित्त पर seriousness नहीं आना चाहिए। लेकिन इसका मतलब नहीं कि बचकानापन आना चाहिए। इसकी गंभीरता तो है लेकिन 'लीला' है। ये सारी लीला है। इसलिए बिल्कुल शांतचित्त होकर के दोनों हाथ मेरी ओर करें। और चित्त को एकदम हल्का करें।

इसलिए तत्व की बात करते हुए मैंने उसको इतना सादगी से बताया और इतने हल्के–फुल्के तरीके से बताया कि वो बड़ी गहनता और गम्भीर बात है। जिससे आपके ऊपर उसकी गहनता न छा जाए। क्योंकि जो गहनता है वो पाने की चीज़ है। वो पाने की चीज़ है उससे दबता नहीं जाता आदमी। उसमें बहकता नहीं है। उससे दबता नहीं है ? उसमें पनपता है।.....

अधिकतर लोग पार हो गए हैं मेरे ख्याल से। पार होते वक्त आप देखिएगा आपके अन्दर ठंडी हवा सी आएगी। और निर्विचार हो जाएंगे। अपने को निर्विचार रखने का प्रयत्न करें। .... आँख बंद रखें–बिल्कुल–थोड़ी देर। मज़ा उठाएंगे अपना।..... सारे पार

विषय बहुत गहन था लेकिन तो भी आप लोग पार हो गए। मैंने आज तक बात नहीं की। आज पहली मर्तबा तत्व पर बात की। ..... बस अठखेलियाँ करते हुए तत्व को पा लेना चाहिए। .....

..... सूक्ष्म है, इसलिए सूक्ष्मता से देखें आपके हाथों में ठंडी हवा सी आने लगेगी। यही पाने का है। सब जीवन का उद्देश्य बस यही है। इस ब्रह्म तत्व को पाएं जो कि आत्मा का तत्व है। आत्मा का तत्व–ब्रह्म–तत्व, जो कि आपके हाथ से लहरों की तरह बह रहा है। .....

परमात्मा आपको धन्य करें
(निर्मल योग)

तत्व की बात–3

गांधी भवन, दिल्ली विश्वविद्यालय

१६ फरवरी१९८१

सहज–योग की तारीफ तो मैंने बहुत खोलकर कर दी। लेकिन असलियत यह है कि नहीं–यह तो जानने की बात है ! हमारे यहाँ भी अहंकार कुछ कम नहीं है विश्व में। लेकिन बेकार की चीज़ का हमें अहंकार हो जाता है और यह इस तरह कुछ बेकार की चीज़ें हैं कि उसके बारे में हम लोग जानते हुए भी कि महाबेवकूफी है, हम उसे करते रहते हैं। सहज–योग जो है आपको सत्य के दर्शन कराता है। सत्य जो है, था और रहेगा। उसके मामले में आप कोई (compromise) समझौता नहीं कर सकते कि आप कहें कि "चलिये, माँ ऐसा ही क्यों नहीं कह देते आप, जो काम बन जाए। इस तरह से बोल दीजिये तो अच्छा रहेगा। इस तरह से कह दीजिये तो अच्छा रहेगा।" ऐसी कोई बात सत्य नहीं है। जो है, सो है, वो उसी तरह से रहना है।

और अगर आप सत्य को नहीं मानना चाहोगे तो उसका आपको भोग उठाना पड़ेगा। माने ये नहीं कि सत्य आपको हानि देता है लेकिन सत्य को अगर आप छोड़ दें तो असत्य पर उतर आये। और जब असत्य पर उतर आये तो असत्य तो हानिकारक है ही, वो आपको तकलीफ देगा। ऐसा भी हुआ है कि बहुत से लोग सहज–योग में आये, बहुत कुछ ऊँचे उठ गए, बड़ा उन्हें लाभ हुआ; बहुत कुछ पा लिया, बहुतों को पार किया; उसके बाद उन्होंने सहज–योग छोड़ दिया। उसके बाद आप एक साल बाद आये, "कि मां मुझे तो बीमारी हो गई अब मैं क्या करूं ?" ऐसे भी बहुत से लोग होते हैं। तो कहने लगे कि "देखो सहज–योग ने हमें सज़ा दे दी।" ऐसे भी बहुत से लोग होते हैं। सहज–योग ने आपको सज़ा नहीं दी लेकिन अगर आप किसी की छत्र–छाया में बैठे हैं और उसे छोड़कर आप बाहर जायें और आप पर अगर बरसात आ जाए तो क्या आप कहिएगा कि इस छत्र–छाया ने ही आपको तकलीफ दे दी ? आपने ही अपनी छत्र–छाया मिटा दी और आप बाहर चले गये। पर सहज–योग में रहने से ये छत्र–छाया है, ये आपके ऊपर छाई हुई है, तो ये वास्तव में ये छत्र–छाया का आपके ऊपर उपकार है या आपका उस छत्र–छाया पर उपकार है ? यह तो छत्र–छाया का उपकार है, परम उपकार है। उसने आपको अपनाया और अपने अन्तरगत् रक्खा और आपकी छोटी–छोटी बातों का भी ख्याल रक्खा।

सहज–योग में जो बहुत सी बातें होती हैं, उनमें से जैसे कि मैंने आपसे बताया था कि लक्ष्मी जी का भी प्रसाद आपको मिलता है। और लक्ष्मी जी का प्रसाद क्या होता है, यह भी मैंने आपको बताया कि नाभि चक्र में श्री लक्ष्मीजी विराजती हैं, उनकी शक्ति विराजती है। और लक्ष्मीजी कैसी हैं ? इसका भी वर्णन मैंने आपको बताया था कि श्री लक्ष्मीजी जो हैं उनमें और पैसे वाले में महान अन्तर होता है। लक्ष्मीजी कमल पर खड़ी हैं उनके हाथ में कमल है और एक हाथ देने वाला और एक हाथ आश्रय में। कमल पर ये खड़ी हैं सो लक्ष्मीजी देखने में तो काफी भारी–भरकम दिखाई देती हैं। कभी आपने लक्ष्मीजी को एकदम ऐसा न देखा होगा जैसे कि आजकल की beauty queens होती है। लेकिन उनकी तन्दरुस्ती काफी अच्छी है क्योंकि उनके अपने अन्दर बहुत कुछ ज्यादा पानी का समावेश है। उनका जन्म ही पानी से हुआ है न। जिसका जन्म पानी से हो, उसके अन्दर तो पानी बहुत होना पड़ता है। उसकी भी वजह होती है। उसके अन्दर पानी न हो तो उनके अन्दर जो इतने चक्र चलाने पड़ते हैं उसके लिए buffer (बफर), उसके लिये रुकावट, उसके लिये एक बीच में

बचाव और कुछ नहीं रह जाता इसलिये पानी शरीर (body) में होना बहुत जरूरी होता है और इस वजह से भारी–भरकम होती हैं। तो भी वो कमल के ऊपर खड़ी हैं, माने उनकी तबियत से इस कदर, शब्द नहीं हैं हिन्दी में–पर जिसे कहना चाहिए कि इस कदर वो सधी हुई हैं कि तबियत से वो इस कदर सधी हुई हैं कि पूरा बैलेन्स (balance) करके और उनका कोई वज़न ही नहीं डालतीं वो, कमल पर कोई उनका वज़न नहीं डलता, कि अपना बोझा वो किसी पर नहीं डालतीं। आप देख लीजिये लोग कितना बोझा दूसरों पर डालते हैं। अब जैसे कोई मेहमान आ गये। आते ही साहब, हमारे खासकर सहजयोगी लोग भी कभी कभी ऐसा काम करते हैं, यह खासियत हिन्दुस्तानी सहजयोगियों की भी होती है।

जैसे कि आप कहीं से आये, अब देहली में आ गये कोई सहजयोगी। तो वो पहले कहेंगे कि साहब यहाँ कुछ आराम हमें नहीं मिल रहा और यहाँ पर हमें खाने को ठीक नहीं मिल रहा है। यहाँ यह इन्तज़ाम ठीक नहीं है, यहाँ कोई इन्तज़ाम ठीक नहीं है जैसे अपने घर में तो ये लोग बिल्कुल आलीशान बगीचों में ही रहते हैं। यहाँ आते ही अब सब उनको सब पता हो जाता है कि साहब यहाँ की यह चीज़ ठीक नहीं है, यहाँ फलानी चीज़ अच्छी नहीं है। कोई अगर बम्बई आये तो उनका भी यही हाल है। मतलब आप एक काँटा बनकर रहते हैं, हर जगह की तरह आप फूल जैसे नहीं रहते, आप काँटे की तरह हैं। हर आदमी को आप चुभते रहते हैं। हर आदमी को महसूस होना चाहिए कि आप आए हुए हैं, आप एक विशेष चीज़ हैं। आप कोई न कोई विशेष चीज़ हैं। इस तरह से हम लोग अपना जीवन जो है वो सोचते हैं कि हमने बहुत महत्वपूर्ण कर लिया और जिस आदमी पर जितना भी ज्यादा रुपया होगा वो उतना ही ज्यादा नखरे कर रहा है। जितना आदमी गरीब होगा, अपने देश में, उतने ही उसके कम नखरे होंगे। लेकिन जितना आदमी रईस हो जायेगा उतने ही उसके नखरे ज़्यादा हो गये और लक्ष्मीजी के कोई नखरे नहीं बेचारी के। वो तो कमल पर अब भी खड़ी हुई हैं और पूरे समय खड़ी ही रहती हैं कभी यह भी नहीं कि मैं थक गई हूँ, मैं थोड़ी देर को लेट ही जाऊँ। कोई भी समय वो इस कमल पर अपने शरीर को सम्भाले हुए, इतने बड़े शरीर को सम्भाले हुए खड़ी रहती हैं, बिल्कुल हल्की सी। किसी को महसूस ही नहीं होता है। यह असली लक्ष्मी तत्व की निशानी है। जिस आदमी में वास्तविक लक्ष्मी है, उसका कहीं भी बोझा नहीं लगता। ऐसा आदमी जहाँ भी रहता है उसकी सुगन्ध, उसका सौरभ सब तरफ फैलता है लेकिन उसकी कोई भी चीज़ महसूस नहीं होती। कहीं भी वो आपको नहीं जताता है कि आप पैसे वाले हैं या आप पैसे वाले नहीं हैं, या उसके पास ज़्यादा पैसा है या आपके पास इस चीज़ की कमी है। वे तो इस तरह से रहता है कि किसी को पता ही नहीं चलता कि कैसे आये और कैसे गये। वो इस तरह से जीवन बिताता है कि जैसे किसी का पता ही नहीं चलता। लेकिन अधिकतर पैसे वाले तो पहले बीन बजा कर घूमेंगे कि साहब मैं बड़ा पैसे वाला हूँ। कुछ नहीं तो अजीब तरह का horn लेकर रास्ते में बजाते चलेंगे जिससे कि लोग मुड़ मुड़ कर देखें कि कौन गधा चला जा रहा है। हर चीज़ का दिखावा (show) होना चाहिये। हर चीज़ की artificiality होनी चाहिये। एक एक तमाशा आदमी खड़ा कर देता है अपने नाम से क्योंकि वो पैसे वाला है। यह लक्ष्मीजी की बात नहीं, लक्ष्मी बहुत ज़्यादा एकदम ऐसे तरीके से रहती हैं, सम्भली हुई, सधी हुई कि किसी को पता

ही न चले। एक हाथ से उनके दान होना चाहिये, वह दान भी किसी को पता नहीं होना चाहिये कि दान हो रहा है। जैसे बह रहा है, जा रहा है, दे रहा है, लेने का सवाल नहीं और दूसरे हाथ से आश्रय होना चाहिये जो उनके आश्रित हैं वो सब आशीर्वादित होने चाहियें, बजाय इसके कि बहुत से मालिक अपने नौकरों को मारते हैं, पीटते हैं, यह करते हैं–नहीं, आश्रित माने उनको पूरी तरह से जो लक्ष्मी जी के आश्रित होते है उनको पूरी तरह से वरद हस्त होता है, पूरा वरदान होता है।

और उनके दोनों हाथ में कमल होते हैं। कमल गुलाबी रंग के होते हैं और गुलाबी रंग के कमल इस बात के द्योतक हैं कि वो प्रेम की निशानी हैं। गुलाबी रंग जो है वो उनके प्यार की निशानी, प्रेम की निशानी; वो बिल्कुल ही नाजुकतम पंखड़ियों में भंवरे जैसा काँटे वाला प्राणी होता है, उसे भी स्थान देती हैं; कहीं से भी चला आये उसे रहने का इन्तज़ाम है। हर समय उसके लिये इन्तज़ाम रहता है। ऐसा आज तक मैंने तो कोई पैसे वाला नही देखा कि उसके दरवाजे कोई चला आये और अच्छा भाई तुम्हें कोई जगह नहीं, आओ मेरे घर सो जाओ। वो तो चार चार दरबान लगा कर रखेगा कि कोई अच्छा भला भी आदमी हो तो उसको पीट के, मार के भगा दें।

इस प्रकार हमारे अन्दर जो लक्ष्मीजी का तत्व है वो हमारे नाभि चक्र में है। इसके बारे में मैंने आपसे बता दिया। जैसा वो है वैसा ही है। उस तत्व को हम बदल नहीं सकते। बाहर का आप सब कुछ बदल दीजिये लेकिन उसका तत्व जो है वही बना रहेगा। तत्व न बदल सकता है, न ही उसको आप बदल सकते हैं।

सुषुम्ना पथ पर अगर आप रहें तो आपको कोई बीमारी नहीं हो सकती – विशेषकर कैंसर नहीं हो सकता। अगर आप left को या right को किसी भी अतिशयता पर चले जायें तो आपको कैंसर (cancer) हो सकता है। इसलिये आपको बीचों बीच रहना है।

सहजयोग में आने के बाद हजारों लोगों ने, हजारों लोगों ने सिगरेट पीना एकदम छोड दिया। इसी तरह से जिनका गुरुतत्व ठीक हो गया उन्होंने शराब वगैरह एकदम छोड़ दिया।

अब जो विशुद्धि चक्र है उसकी विशेषता यह है कि विशुद्धि चक्र, जब हमने गर्दन उठाई और जब हम मनुष्य बन गये तभी विशुद्धि चक्र पूरी तरह से प्रादुर्भावित हुआ। इससे पहले इसका जो काम था वो पूरा नहीं हुआ था और अब जो है 16 इसकी कलाएं हैं। श्रीकृष्ण को 16 कला कहते हैं। और उसी तरह से 16 उसके subplexus हैं। जिसका विशुद्धि चक्र ठीक होगा उसका मुखड़ा सुन्दर होगा, तेजस्वी होगा। उसकी आँखें तेजस्वी होंगी, उसके नाक नक्श तेजस्वी होंगे और उसके अन्दर एक तरह का बहुत ही ज़्यादा detached सा भाव होगा जैसे कि ड्रामा जैसा। उस आदमी के मुख पर ऐसा लगेगा जैसे कि ड्रामा चल रहा है। एक पल में वो नाराज होगा और दूसरे ही पल में वो हंसता रहेगा। बस उसकी अठखेलियाँ चलती रहेंगी।

जिसका विशुद्धि चक्र खराब हो जाता है उसकी शक्ल खराब हो जाती है, पहली बात। अजीब सी विकृत सी शक्ल हो जाती है, अजीब सी भयानक सी उसकी शक्ल दिखाई देने लगती है, कभी डरावना सा कभी डरा हुआ सा। अब हम लोग इतने ड्रामे beauty–क्या क्या करते हैं न हम लोग, उसके लिए धन्धे कोई करने की ज़रूरत नहीं। आप अपना विशुद्धि चक्र ठीक कर लीजिये आपकी शक्ल दुरुस्त हो जायेगी–बहुत शक्ल दुरुस्त हो जायेगी और इसके अलावा, जिसको विशुद्धि

चक्र की पकड़ हो जाती है उस आदमी की आवाज बहुत कर्कश या बिल्कुल धीमी या वो मधुरता का खो बैठता है। और दूसरी चीज़ यह है कि हमारे अन्दर विशुद्धि–चक्र की जो left-side है, जिसे कि हम कह सकते हैं कि हमारे चक्र के left-side में विराजती है वो विष्णु–माया है, माने श्री कृष्ण की बहन जो विष्णु–माया थी। अब जब हमारे भाई–बहन के रिश्ते खराब हो जाते हैं किसी भी माने में, तो यह चक्र खराब हो जाता है। जब भाई बहनों की कद्र नहीं करता , अपनी बहनों को सताता है, तो भी चक्र खराब हो जाता है। लेकिन जब संसार में हम हर औरत की ओर गंदी नज़र से देखते हैं और हमारे अन्दर यह विचार नहीं रह जाता है कि यह हमारी बहन है तब यह चक्र बहुत ही बुरी तरह से खराब हो जाता है। और जब left विशुद्धि खराब हो जाती है तब आदमी को यह लगता है कि मैंने बड़ी गलती करी, अन्दर से यह लगता रहता है और वो एक तरह guilty आदमी हो जाता है। कभी–कभी यह guilt इतना बढ़ जाता है कि उसमें से अनेक पाप होने लग जाते हैं। complex उसके अन्दर आ जाता है। इसलिये सहज–योग में इसका मन्त्र है, अंग्रेजी में तो कहते हैं "I am not guilty" और हिन्दी में कहते हैं "कि माँ हमने कोई गलती नहीं करी जो तुम माफ नहीं करो।" right side की जो विशुद्धि है ये विट्ठल–रुकमणी वाले कृष्ण, जब कि कृष्ण राज्य कर रहे थे तब। जब हम अपने राज्य में विराजते हैं, माने हमारा राज्य परमात्मा का राज्य हुआ, और जब परमात्मा के राज्य में हम विराजे हुए हैं और तब भी हम भिखारी जैसे बक बक करते हैं, और लोगों से रुपया माँगते हैं, पैसे माँगते हैं और उनकी चापलूसी करते हैं और उनके सामने अपनी पेशानी झुकाते हैं तब right विशुद्धि पकड़ जाती है। जो आदमी अपनी पेशानी अपनी किसी गरज के लिये दूसरों के सामने झुकाता है या किसी भी नीच आदमी के सामने इसलिये झुकाता है कि उसे वो गुरु या और कुछ उसे मानता है तो उसकी right विशुद्धि पकड़ जाती है और right विशुद्धि पकड़ने के नाते बहुत तरह के complications होते हैं विशेषकर कि cancer की बीमारी इसमें हो सकती है। क्योंकि जो लोग चापलूसी में जाकर इसके पैर छू रहे हैं उसके पैर छू रहे हैं , उसके ये कर रहे हैं, करते हैं, जान लें कि आखिर आपको परमात्मा के सिवाय और किसी के सामने अपना सिर नहीं झुकाना है। और किसी के सामने सर झुकाने की जरूरत भी क्या है, वह दे भी क्या सकता है ? बहुत से लोग हमें कहते हैं कि वो सन्त–साधु थे हमने माथा उनके सामने झुकाया। अधिकतर तो ढोंगी और भोंदू लोग हैं, नहीं तो 420, या दानव और राक्षस ही हैं। अच्छा अगर यह नहीं हुए तो समझ लीजिए एक साधु–सन्त है, वो पार भी है, समझ लीजिए, तो भी इन्सान है, भगवान तो नहीं है। अवतार तो नहीं है। जब तक कोई अवतार नहीं हो तो अपना सर झुकाने की क्या ज़रूरत है। तुम भी कल हो सकते हो पार, और तुम भी कल सन्त हो सकते हो। लेकिन जो अवतार है उसके सामने सर झुकाना दूसरी बात है क्योंकि उसके सामने सारे चक्र खुलते हैं। सिर्फ अवतार के सामने ही सर झुकाना चाहिए। यह दूसरी बात है कि अपने माँ बाप हैं उनके सामने सर झुकाओ, वो तो एक रोजमर्रा का एक व्यवहार है उसकी बात दूसरी है। शादी में गये, माँ बाप के पैर छू लिए, बड़ों के पैर छू लिए, ये बात दूसरी है। एक बार वो कर लिया वो तो सम्मत है।

लेकिन हर बार जिसको देखिए वो चले आ रहे हैं महाशय जी उधर से, और कहा कि साहब

यह तो minister साहब के यहाँ बिल्कुल उनके चमचे हैं चले चार और चमचे उनके पीछे उनके पैर छूने के लिए। इस तरह की जिन लोगों की दशा होती है वो इस कदर दुख में पड़ जाते हैं और इतनी तकलीफें उठाते हैं कि मैं उन लोगों को ठीक करते करते तंग आ गई। क्योंकि मनुष्य को अपनी इज्जत और अपनी शान का पता नहीं। ये चक्र जो है इसने आपको शान दी जिसने आपके सर को ऊपर उठाया। यों नहीं दी कि इसको आप हर जगह झुकाते फिरें और अपने को नीचे गिराते फिरें। आप बहुत बड़ी चीज़ हैं। भगवान ने आपको एक अमीबा से इन्सान बनाया और जब आप इस हालत में आ गए तो आपको जरूरी है कि आप इसकी इज्ज़त करें, अपनी इज्ज़त करें और अपनी जो शान है उसको समझें। दूसरी बात यह है कि बहुत से लोगों का यह भी है कि दूसरों से डरते रहते हैं। यह भी चक्र है इससे left विशुद्धि पकड़ जाती है। जब आप किसी आदमी से डर जाएं; वास्तव में आप बेकार ही में डर रहे हैं तब आपकी left विशुद्धि पकड़ सकती है।

विशुद्धि चक्र बहुत महत्वपूर्ण है और विशुद्धि चक्र के पकड़ने से अनेक तरह की बीमारियाँ आती हैं। सबसे खराब बात यह है कि जब आप पार भी हो जाते हैं तो भी आपको vibrations नहीं आते। आपको महसूस नहीं हो पाता। आपकी जितनी nerves हैं हाथ की मर जाती हैं तो हाथ पर आपको महसूस नहीं होता। और लोग कहते हैं कि माँ हमको अन्दर तो महसूस हो रहा है पर हाथ पर महसूस नहीं होता और इसलिए उनको परेशानी हो भी जाती है। सबसे बड़ी खराबी विशुद्धि की यह है। अगर आपने गलत मन्त्र कहे हैं, आपने किसी ऐसे आदमी से मन्त्र लिया है जो अनाधिकार है, जिसने आपको झूठे मन्त्र दिये हैं, इस सबसे आपकी left विशुद्धि पकड़ती है और इस left विशुद्धि का इलाज यही है कि उस मन्त्र को जो है जागृत कराना। अगर कोई मन्त्र जागृत नहीं है तो उसे रटना ही नहीं है। और मन्त्र जागृत तभी होता है जब कोई realised soul आपको मन्त्र बताये और वो भी निदान कर बताये कि आपको कहाँ तकलीफ है, कौन सी तकलीफ है, किस जगह कौन सा मन्त्र कहना है। अगर वो बराबर आपको यह बता सके तो आप उस मन्त्र को कहें तो आपको मन्त्र सिद्धि हो सकती है। सहज–योग में आज ऐसे हज़ारों लोग हैं जिन्होंने मन्त्र को सिद्ध कर लिया है। इतने मन्त्र सिद्ध हैं उनके कि वो अगर अपनी जगह में भी बैठकर मन्त्र कह दें तो उससे जो काम करना है करा सकते हैं। मतलब है बुरा काम तो सहजयोग में कोई कर ही नहीं सकता लेकिन अच्छे कर सकते हैं। ऐसे ऐसे लोग पहुँच गये हैं सहजयोग में, दिल्ली में नहीं हैं इतने, दिल्ली में कोई लोग बहुत पहुँचे हैं, लेकिन इतने ज़्यादा लोग नहीं हैं। बाकी ऐसे बहुत से लोग जिन्होंने मन्त्रों को एकदम सिद्ध कर लिया है और सिद्धता के लिए मन्त्र पर मेहनत करनी पड़ती है। बैठ कर मेहनत करनी पड़ती है, उस पर बोलना पड़ता है, अपने चक्रों पर ध्यान करना पड़ता है और उसकी सिद्धता हासिल हो जाती है। अगर किसी ने गणेश का मन्त्र सिद्ध कर लिया है तो वो आदमी इतने कमाल कर सकता है कि कोई हद नहीं। लेकिन अभी तक सहजयोग में ऐसे बहुत थोड़े लोग हैं कि जो इस ओर ध्यान देते हैं। और जिन्होंने भी ध्यान दिया, ऐसे मैंने बहुत से लोग देखे हैं जिन्होंने मन्त्र को इतनी जल्दी सिद्ध कर लिया है कि मुझे आश्चर्य होता है। उनके एक ही मन्त्र से कितना बड़ा कार्य हो जाता है। इसलिए मैं आपसे कहती हूँ कि अपने विशुद्धि चक्र को आप स्वच्छ रखें। विशुद्धि चक्र जो है यह विराट है।

कृष्ण विराट–स्वरूप हैं। अन्त में कृष्ण विराट हो जाते हैं। सारा जो evolution (उत्क्रान्ति) है ये सिर्फ विष्णु शक्ति से होता है तो विष्णु बनते बनते आखिर विराट हो जाते है। विराट का स्थान ये है, ये विराट का स्थान है। इसी से विशुद्धि चक्र को ठीक करने के लिए ये पेशानी आप किसी के सामने मत झुकाइये। ये विराट के सामने ही झुकनी चाहिये क्योंकि आप विराट के अंग प्रत्यंग हो गये हैं। अब आप पार हो गये। अब खबरदार, अगर जो आपने अपनी पेशानी किसी के सामने झुकाई। अगर आपने किसी के सामने झुकाई है तो आप विराट को भूल गये। मोहम्मद साहब ने बहुत बड़ा मन्त्र विराट का कहा है "अल्लाह हो अकबर" और ये मन्त्र जो मोहम्मद साहब ने (वो साक्षात् दत्तात्रेय थे) और उन्होंने ये मन्त्र कहा है कि आप "अल्लाह हो अकबर" कहो। अकबर माने great, माने विराट। ये जो उंगली विशुद्धि की है, दोनों उंगली कान में डाल कर ऊपर पीछे की तरफ गरदन कर के " अल्लाह हो अकबर " कहें तो आपका विशुद्धि चक्र खुल जाता है। इसके अलावा और बहुत से आसन आदि हैं। इसके मामले मे मैं आपको बता नहीं सकती आज, लेकिन अनेक तरीके से यह ठीक हो सकता है और उसको ठीक रखना चाहिये। सबसे बड़ी बात है कि आपकी जबान से कोई सी भी कडवी बात किसी से कहनी नहीं चाहिये और किसी की भी चापलूसी करने की जरूरत नहीं है। और अगर कोई सहजयोग को नहीं मानता तो साफ कह देना चाहिये कि रहने दीजिये " यह आपके बस का नहीं, छोड़िये।" न ही किसी के सामने चापलूसी करने को जरूरत है, न ही किसी के सामने घिघियाने की जरूरत है और न ही किसी से कठिन बात करने की जरूरत है । मानते हैं तो ठीक है वरना छोड़ दीजिये बस काम खत्म। बीचों–बीच में रहना चाहिये।

विशुद्धि चक्र के अनेक दोष हैं। उसके अनेक तरीके हैं क्योंकि सोलह उसकी कुल कलाएं हैं और सोलह हजार इसकी शक्तियाँ हैं जो कृष्ण के साथ उनकी पत्नियाँ बनकर उनके समय में रही थी। यदि कोई कृष्ण के ऊपर कहे, वो इस तरह के आदमी थे तो बड़ा आश्चर्य होता है क्योंकि वो योगेश्वरों के योगेश्वर थे। उनको समझने के लिए आपको बहुत कुछ अधिक सीखना पड़ेगा। वो स्वयं साक्षात् योगेश्वर थे। ये उनकी 16000 शक्तियाँ थीं जिनको उन्होंने जन्म दिया था इस संसार में और फिर उनको ही उन्होंने कैद करवाया और फिर उनसे विवाह किया क्योंकि उनके पास सहजयोगी तो थे नहीं तो उन्होंने सोचा कि ठीक है मैं अपनी शक्तियों को ही साकार स्वरूप में संसार में भेजता हूँ और उन्होंने जो सबसे बड़ा कार्य किया है कि उन्होंने इसे पूरी तरह से बीज को फैलाया और ईसा मसीह ने बाद में आज्ञा चक्र में आकर कहा कि कुछ बीज इधर पड़ गये, कोई बीज उधर पड़ गये, कोई बीज इधर पड़ गया। जब ईसा मसीह अपने बाप की बात करते हैं तो वे दूसरा तीसरा कोई नहीं है, वो कृष्ण ही हैं। कृष्ण ही उनके पिता हैं। जब भी ईसा मसीह की उंगलिया देखिये तो ये दो उंगलियां हैं। यह उंगली विष्णु की है, यह उंगली कृष्ण की है। हमेशा उन्होंने अपने बाप की बात की इसके लिये आप अगर पढ़ते हों तो देवी–भागवत् पढ़ें। इसमें महा विष्णु का वर्णन है जो राधाजी का पुत्र बनाया हुआ था और बिल्कुल वही चीज़ ईसा मसीह हैं। उनके दो हिस्से थे। एक हिस्सा श्री गणेश और एक ईसा–मसीह, आगे चलकर के एका दश–रुद्र में यही जो बड़ी भारी शक्ति है वो उनकी शक्ति है इसीलिये वो मरे नहीं उनका resurrection (पुनरुत्थान) हो गया। वे साक्षात् प्रणव हैं जो कि

संसार में आया और इस संसार से उठकर चला गया। यह साक्षात् गणेश था जो इस संसार में आया और इसीलिए उसको कोई चीज़ मार नहीं सकी। यह एक ही अवतार ऐसा परमात्मा ने भेजा था जो साक्षात् 'प्रणव' मात्र था। इनका क्रास पर चढ़ाना, जो है वो इसलिये हुआ था कि आज्ञा चक्र को उनको खोलना था, आज्ञा चक्र को। जब मनुष्य ने अपनी बेवकूफी से उनको क्रास पर चढ़ा दिया तब मानो जैसे कि उन्होंने सबके लिये अपने को उस आज्ञा–चक्र से निकाल दिया और उनका जो सन्देश है वो क्रास नहीं है। उनका सन्देश जो है पुनरोत्थान है। उन्होंने उसमें से पुनरुत्थान करके दिखाया। उन्होंने मर करके जी कर दिखाया वही सहज–योग है कि जिसमें आपका भी जो conception है वो immaculate है यानि आप भी माँ के हृदय गर्भ में आप आते हैं और वहाँ से माँ आपको ब्रह्मरन्ध्र से पैदा करती है आप जो पहले है वो मर जाते हैं और एक नये हो जाते हैं। ईसा मसीह ने यह सबसे पहले, उन्होंने करके दिखाया था। वो सबसे बड़ा बेटा माँ का था और वो आपका सबसे बड़ा भाई है जिसने यह सबसे पहले इतना बड़ा काम करके दिखाया। और आज उसी बूते पर आप लोग पार हो रहे हैं। जो भी incarnations (अवतार) आते हैं वो अगवाई करते हैं। एक step forward जो होता है , वो अगवाई करते हैं और उन्होंने यह बड़ा भारी महान कार्य किया था। और आज्ञा चक्र पर जो आदमी पार हो गया है वो जानता है कि हमारा मन्त्र उस पर सहज–योग में Lord's prayer है। Lord's prayer से आज्ञा चक्र एकदम छूट जाता है। जोकि उसमें कहा है कि" जैसे कि हम अपने अपराधों को क्षमा करते हैं, अपराध जिन्होंने हमारे खिलाफ किये हैं उनको क्षमा करते है; उसी प्रकार हे प्रभु ! हमारे अपराधों को क्षमा करो।" यही मन्त्र आज्ञा चक्र का है, आपको आश्चर्य होगा। और बहुत बार मैं आपसे कहती हूँ कि " माफ कर दो, माफ कर दो, माफ कर दो" क्योंकि आपका आज्ञा चक्र पकड़ा है। अहंकार और प्रति–अहंकार दोनों के बीच इनका स्थान है जहाँ पर पिट्यूटरी (pituitary) और पीनीयल (pineal body) बाडी भी दोनों को सम्भालती है, इनके बीचों–बीच एक बहुत सूक्ष्म स्थान आज्ञा का है और यह दोनों इस पर काम करते हैं। शुरुआत तो दोनों की विशुद्धि चक्र से होती है पर इनका चलन–वलन और सम्भालना और (steering) स्टीयरिंग जो है वो आज्ञा चक्र से होता है जिस पर साक्षत् महागणेश और महाभैरव बैठे हुए हैं और जो सामने की तरफ यहाँ , ये जो आज्ञा चक्र के, ये जो है यहाँ पर ईसा–मसीह का स्थान है। ईसा–मसीह महा विष्णु हैं और उनके लिये कृष्ण ने कहा था कि मुझे जो–जो चीज़ संसार में अर्पण करेंगे उसमें से सोलहवां हिस्सा तुम्हारा रहेगा और तुम सारे संसार का आधार बन कर आओगे और मेरे से भी ऊपर तुम्हारा स्थान रहेगा। हालांकि श्री कृष्ण का स्थान यह है विराट का, लेकिन यहाँ पर बीच में आज्ञा चक्र में दोनों जगह विशुद्धि और विराट के बीचों–बीच में उन्होंने अपने बेटे को बैठाया है और राधाजी उनकी माँ थीं, वही मेरी थीं। राधाजी जो थीं वो ही संसार में मेरी (Mary) के रूप में आई थीं और वो ही इस बेटे को लाईं। यह सारा खेल और नाटक इसलिये किया गया कि मनुष्य अपनी मूर्खता को समझ ले कि अहंकार में अपने ego में उन्होंने ईसा–मसीह जैसे आदमी को, जोकि साक्षात् ब्रह्मस्वरूप थे, उनको तक पहचाना नहीं। लेकिन अब ऐसा नहीं हो सकता।

ईसा–मसीह ने कहा है " कि मेरे खिलाफ

चाहे आपने कुछ भी कहा हो उसकी मैं माफी करता हूँ और मेरे साथ आपने कोई भी ज्यादती की है उसके लिए मैं माफी देता हूँ लेकिन अगर Holy Ghost माने आदिशक्ति के खिलाफ अगर किसी ने जरा सा भी कदम उठाया तो उसको मै देख लूँगा।''साफ–साफ शब्दों में कहा है। उसका punishment जो है वो बहुत गहरा होगा। साफ–साफ उन्होंने इन शब्दों में कह दिया कि अगर आप बाइबल (Bible) पढ़ें तो आप देख लें। इसका मतलब उन्होंने कह दिया कि Holy Ghost (आदिशक्ति) संसार में आने वाले हैं और Holy Ghost से ठण्डी हवा आयेगी,Cool breeze आयेगी, यह भी बाइबल में लिखा है। इसलिये ईसाई लोग मुझे जरा (मतलब हिन्दुस्तान के नहीं लेकिन बाहर के) मुझे बहुत जल्दी मान जाते हैं क्योंकि यह पहचान है Holy Ghost की। यह आदि–शक्ति की पहचान है। और किसी से भी ऐसी ठंडी हवा नहीं आती है जैसी Holy Ghost से आती है, जैसे कि लिखा हुआ है।

पर सबसे तो आश्चर्य है वहाँ एक विलियम ब्लेक (William Blake) नाम का आदमी जोकि बहुत बड़ा कवि सौ साल पहले हो चुका है, उसने यहाँ तक लिख दिया है कि हमारा आश्रम कहाँ रहेगा। Lambethvale (लेम्बैथवेल) में आश्रम रहेगा जहाँ ruins (खंडहरों) में foundations (नींव) पड़ेंगे, जो सही बात है। और जब पहले पहल जब मैं London गई थी, तो तब जहाँ Surrey hills (सरे–हिल) में मैं रहती थी, वह भी लिखा है कि first residence in the little Surrey Hills, और यहाँ तक लिखा है कि उनके जो प्यार के Vibrations (वाईब्रेशन) हैं जो स्नायु हैं वो ईश्वर की तरह हर जगह, हर एक समय विद्यमान हैं। और इतनी बारीक चीज़ सहज–योग की लिखी है और सबसे बड़ी बात जो उन्होंने लिखी है वो यह कि सहज–योग में लोग prophets होएगे यानि प्रेषित यानि पार हो जायेंगे। ये भगवान के लोग है (Men of God) जो पार हो जायेंगे और एक विशेष बात होगी कि ये लोग जो पार होगें वो दूसरों को भी prophets बनाएगें। इसका सारा वर्णन उन्होंने दे दिया है। इसी तरह से Bible में भी John के Revelations में सहज–योग के बारे में सब कुछ लिखा हुआ है। जो समझने वाले हैं वो उसे पार होने के बाद समझ सकते हैं। इसी तरह की भविष्यवाणियाँ हर एक जगह हुई हैं। जो समझदार लोग हैं वो सब कुछ समझते हैं लेकिन जो समझदार नहीं हैं उनके लिए काला अक्षर भैंस के सामने क्या होता है वैसी ही बात है। इसी तरह की चीज़ है कि आदमी को समझाने के लिए ही पार कराना पड़ता है।

जब तक आपके अन्दर प्रकाश नहीं आएगा, आप भी इस बात को नहीं समझ सकते। इसलिए आप पहले पार हो जाइये। फिर आप समझेंगे और पूरी बात को आप जानेंगे। पार हुए बगैर कोई भी बात करना व्यर्थ जाएगा। अच्छा, अब बहुत समय (time) हो गया है, अब आप पार हो जाइये।

अनन्त आशीर्वाद
(निर्मल योग)

सहजयोग आज का महायोग